04 - अरबों खर्च मगर हाथी समस्या का समाधान नहीं

05 - इस टीम की सर्जरी जरूरी है

A Daily News Magazine

भोपाल

मंगलवार, 5 नवंबर, 2024

06 - पुराने जिला पंचायत के ऐतिहासिक भवन को तोड़ना हुआ शुरू, अब नए भवन...

07- कई सवालों से मुठभेड़ करता 'इमामदस्ता'

भोपाल एवं इंदौर से एक साथ प्रकाशित

वर्ष -22 अंक-66 नगर संस्करण, पृष्ठ -8, मूल्य रू.- 2 (डाक पंजीयन संख्याः म.प्र./भोपाल/4-391/2018-20)

सुबह सवेरे

subahsaverenews@gmail.com

facebook.com/subahsaverenews

www.subahsavere.news

twitter.com/subahsaverenews

प्रसंगवश

अमेरिका ने भारत की 19 कंपनियों पर क्यों लगाया प्रतिबंध?

अभिनव गोयल

अमेरिका ने 30 अक्टूबर को यूक्रेन में रूस के युद्ध प्रयासों में मदद करने के आरोप में 19 भारतीय कंपनियों और दो भारतीय नागरिकों सहित करीब 400 कंपनियों और व्यक्तियों पर प्रतिबंध लगाया है। यह कार्रवाई ऐसे समय पर हुई है जब अमेरिकी धरती पर सिख अलगाववादी नेता गुरपतवंत सिंह पन्नू की हत्या की साज़िश में एक भारतीय नागरिक की कथित भूमिका को लेकर दोनों देशों के बीच तनाव बढ़ा हुआ है।

24 अक्टूबर को अंग्रेज़ी अख़बार टाइम्स ऑफ इंडिया में एक इंटरव्यू छपा था। इस इंटरव्यू में भारत में अमेरिकी राजदूत एरिक गार्सेटी ने कहा था कि अमेरिका इस मामले में तभी संतुष्ट होगा जब पन्नू की हत्या की कोशिश को लेकर ज़िम्मेदारी तय की जाएगी। अमेरिका ने एक बयान जारी कर बताया है कि उसके विदेश विभाग, ट्रेजरी विभाग और वाणिज्य विभाग ने इन लोगों और कंपनियों पर प्रतिबंध लगाए हैं। इस लिस्ट में भारत के साथ-साथ चीन, मलेशिया, थाईलैंड, तुर्की और संयुक्त अरब अमीरात सहित अन्य देश शामिल हैं।

अमेरिका का आरोप है कि ये कंपनियां, रूस को वो सामान उपलब्ध करवा रही हैं, जिनका इस्तेमाल रूस, यूक्रेन युद्ध में कर रहा है।

इन वस्तुओं में माइक्रो इलेक्ट्रॉनिक्स और कंप्यूटर न्यूमेरिकल कंट्रोल आइटम शामिल हैं, जिन्हें कॉमन हाई प्रायोरिटी लिस्ट (सीएचपीए) में शामिल किया गया है। इन वस्तुओं की पहचान अमेरिकी वाणिज्य विभाग के उद्योग और सुरक्षा ब्यूरो के साथ-साथ यूके, जापान और यूरोपीय संघ ने की है। यह पहली बार नहीं है जब अमेरिका ने भारतीय कंपनियों को निशाना बनाया है। इससे पहले नवंबर, 2023 में भी एक भारतीय कंपनी पर रूसी सेना की मदद करने के आरोप में प्रतिबंध लगाया गया था। सवाल है कि वो कौन सी भारतीय कंपनियां और भारतीय नागरिक हैं जिन पर ये प्रतिबंध लगाए गए हैं और प्रतिबंध लगाने के पीछे अमेरिका ने क्या वजह बताई है?

अमेरिकी विदेश विभाग ने जिन 120 कंपनियों की सूची तैयार की है, उसमें शामिल भारत की चार कंपनियों के खिलाफ लगे आरोपों का विवरण भी दिया गया है। इन चार कंपनियों में एसेंड एविएशन इंडिया प्राइवेट लिमिटेड, मास्क ट्रांस, टीएसएमडी ग्लोबल प्राइवेट लिमिटेड और फुट्रेवो कंपनी शामिल है। आरोप है कि एसेंड एविएशन ने मार्च 2023 और मार्च 2024 के बीच रूस स्थित कंपनियों को 700 से ज़्यादा शिपमेंट भेजे हैं। इसमें क़रीब 1 करोड़ 70 लाख रुपये से ज़्यादा कीमत की सीएचपीए वस्तुएं शामिल थीं। वहीं विदेश विभाग का दावा है कि मास्क ट्रांस कंपनी ने जून 2023 से अप्रैल 2024 के बीच करीब 2.5 करोड़ रुपये की वो वस्तुएं भेजीं, जिनका इस्तेमाल रूस ने एविएशन से जुड़े कामों में किया।

इसके अलावा टीएसएमडी ग्लोबल प्राइवेट लिमिटेड कंपनी पर आरोप है कि उसने 3.6 करोड़ रुपये से अधिक का सामान रूसी कंपनियों को दिया, जिसमें इलेक्ट्रॉनिक इंटेग्रेटेड सर्किट, सेंट्रल प्रोसेसिंग यूनिट और दूसरे फिक्स कैपेसिटर शामिल थे। इस लिस्ट में शामिल फुट्रेवो कंपनी पर आरोप है कि उसने जनवरी 2023 से फरवरी 2024 के बीच करीब 12 करोड़ रुपये के इलेक्ट्रॉनिक सामान रूस को देने का काम किया। यह सामान एक ऐसी कंपनी को देने का आरोप है जो ड्रोन बनाने का काम भी करती है। इसके अलावा भारत की अबहार टेक्नोलॉजीज़ एंड सर्विसेज़ प्राइवेट लिमिटेड, डेनवास सर्विसेज़ प्राइवेट लिमिटेड, ईएमएसवाई टेक, गैलेक्सी बियरिंग्स लिमिटेड, इनोवियो वेंचर्स, केडीजी इंजीनियरिंग प्राइवेट लिमिटेड और खुशबू ऑनिंग प्राइवेट लिमिटेड शामिल है।

इस लिस्ट में लोकेश मशीन्स लिमिटेड, ऑर्बिट फिनट्रेड एलएलपी, पॉइंटर इलेक्ट्रॉनिक्स, आरआरजी इंजीनियरिंग टेक्नोलॉजीज़ प्राइवेट लिमिटेड, शार्पलाइन ऑटोमेशन प्राइवेट लिमिटेड, शौर्य एयरोनॉटिक्स प्राइवेट लिमिटेड, श्रीजी इम्पेक्स प्राइवेट लिमिटेड और श्रेया लाइफ साइंसेज़ प्राइवेट लिमिटेड का नाम भी है। तअमेरिका ने जिन दो भारतीय व्यक्तियों पर प्रतिबंध लगाया है, उनका नाम विवेक कुमार मिश्रा और सुधीर कुमार है। अमेरिकी विदेश विभाग के मुताबिक विवेक कुमार मिश्रा और सुधीर कुमार, एसेंड एविएशन के सह-निदेशक और आंशिक शेयरधारक हैं।

एसेंड एविएशन इंडिया प्राइवेट लिमिटेड की वेबसाइट के मुताबिक यह कंपनी दिल्ली स्थित है और अंतरराष्ट्रीय स्तर पर विमानन उद्योग के लिए स्पेयर पार्ट्स के साथ-साथ लुब्रिकेंट सप्लाई करने का काम करती है। यह कंपनी मार्च, 2017 में बनी थी।

फरवरी, 2022 में यूक्रेन पर हमले के बाद से अमेरिका, ब्रिटेन और यूरोपीय संघ के साथ-साथ ऑस्ट्रेलिया, कनाडा और जापान सहित कई देशों ने रूस पर 16,500 से ज़्यादा प्रतिबंध लगाए हैं। इन प्रतिबंधों के तहत रूस के विदेशी मुद्रा भंडार का करीब आधा हिस्सा फ्रीज कर दिया गया है, जो करीब 276 अरब डॉलर का है। इसके अलावा यूरोपीय संघ ने रूसी बैंकों की करीब 70 प्रतिशत परिसंपत्तियां फ्रीज कर दी हैं और उन्हें स्विफ्ट बैंकिंग प्रणाली से भी बाहर कर दिया है।

स्विफ्ट यानी 'सोसायटी फॉर वर्ल्डवाइड इंटरबैंक फाइनेंशियल टेलीकम्यूनिकेशन' एक सुरक्षित मैसेजिंग सिस्टम, जिसके ज़रिए सीमा के परे तेज़ी के साथ पेमेंट (भुगतान) संभव हो पाता है। अंतरराष्ट्रीय कारोबार में इससे काफी मदद मिलती है। विदेशी मामलों के जानकार और 'द इमेज इंडिया इंस्टीट्यूट' के अध्यक्ष रॉबिंद्र सचदेव कहते हैं, 'कंपनियों पर प्रतिबंध लगने के बाद उन्हें स्विफ्ट बैंकिंग सिस्टम में ब्लैकलिस्ट कर दिया जाता है। ऐसा होने पर ये कंपनियां उन देशों से लेन-देन नहीं कर पाती हैं, जो रूस-यूक्रेन युद्ध में रूस के खिलाफ हैं।' वे कहते हैं, 'जिन कंपनियों पर प्रतिबंध लगा है, उनकी संपत्तियां भी उन देशों में फ्रीज हो सकती हैं, जो इस बैन के पक्ष में हैं।'

सचदेव कहते हैं, 'अमेरिका ऐसा इसलिए कर रहा है, क्योंकि वह रूस की कमर तोड़ना चाहता है। वह चाहता है कि रूस की अर्थव्यवस्था कमज़ोर हो जाए और उसकी डिफेंस इंडस्ट्री को वो सामान ना मिल पाए, जिसकी मदद से वह यूक्रेन में युद्ध लड़ रहा है।' हालांकि वे कहते हैं कि इस तरह से कंपनियों पर प्रतिबंध लगने से भारत और अमेरिका के संबंधों पर खास असर नहीं पड़ेगा, क्योंकि दोनों देशों के बीच पहले से अच्छे संबंध हैं। हालांकि रूसी राष्ट्रपति व्लादिमीर पुतिन का दावा है कि यूरोपीय प्रतिबंधों से रूस को कोई खास नुकसान नहीं पहुंचा है।

अमेरिकी थिंक टैंक अटलांटिक काउंसिल के अनुसार रूस तेल निर्यात करने में कामयाब रहा है और उससे काफी पैसे उसे मिले हैं।

अंतरराष्ट्रीय ऊर्जा एजेंसी का कहना है कि रूस हर रोज़ 80 लाख बैरल तेल का निर्यात कर रहा है, जिसमें भारत और चीन बड़े खरीदार हैं।

वहीं लंदन स्थित किंग्स कॉलेज के शोधकर्ताओं का मानना है कि रूस, जॉर्जिया, बेलारूस और कजाकिस्तान जैसे देशों की मदद से कई प्रतिबंधित सामान आयात कर रहा है।

(बीबीसी हिन्दी में प्रकाशित लेख के संपादित अंश)

हाथियों की मौत के बाद मोहन सरकार ने उठाए बड़े कदम

● 25 लाख रुपए मिलेगा मुआवजा, स्पेशल टास्क फोर्स गठित ● दूसरे राज्यों में अध्ययन के लिए जाएंगे एमपी के अधिकारी

भोपाल (नप्र)। बांधवगढ़ टाइगर रिजर्व में 10 हाथियों की मौत के बाद सरकार सख्त है। मुख्यमंत्री मोहन यादव खुद ही इस मामले में पर नजर रख रहे हैं। अधिकारियों और एक्सपर्ट के साथ सीएम ने दो मीटिंग की है। इस मीटिंग में कई बड़े फैसले लिए गए हैं। अब हाथियों के हमले में ग्रामीणों की मौत पर 25 लाख रुपए का मुआवजा मिलेगा। साथ ही हाथी टास्क फोर्स का गठन किया गया है। इसके साथ ही सीएम ने एमपी में हाथी मित्र बनाने के निर्देश दिए हैं।

सोलर फेंसिंग होगी

सीएम मोहन यादव ने घटना के बाद हाथी टास्क फोर्स गठन के निर्देश दिए हैं। हाथी- मानव सह अस्तित्व सुनिश्चित करने के लिए हाथी मित्र बनाए जाएंगे। वहीं, जिन क्षेत्रों में हाथियों की आवाजाही अधिक है, वहां किसानों की फसलों को बचाने के लिए सोलर फेंसिंग की व्यवस्था होगी। सीएम मोहन यादव ने कहा कि मध्यप्रदेश में आने वाले समय में ऐसे वन क्षेत्र विकसित किए जाएंगे, जिसमें हाथियों की बसाहट के साथ सह अस्तित्व की भावना मजबूत हो सके।

अलर्ट पर रहें वन अधिकारी

सीएम यादव ने कहा है कि प्रदेश में उमरिया जिले के वन क्षेत्र में पिछले दिनों 10 हाथियों की अलग-अलग दिन हुई मृत्यु की घटना दुखद एवं दर्दनाक है। इसे सरकार ने गंभीरता से लिया है। वन राज्य मंत्री सहित वरिष्ठ अधिकारियों के दल ने क्षेत्र का भ्रमण किया है। प्रारंभिक रिपोर्ट में कोई कीटनाशक नहीं पाया गया है। पोस्टमार्ट्म की विस्तृत रिपोर्ट आना शेष है। हाथियों के बड़े दल के रूप में आने की घटना गत दो तीन वर्ष में एक नया अनुभव भी है। उमरिया और सीधी जिले में बड़ी संख्या में हाथियों की मौजूदगी दिख रही है। उन इलाके में वन अमला अलर्ट पर रहे।

दो अधिकारियों की छुट्टी- मुख्यमंत्री ने कहा कि हाथियों की मृत्यु की इतनी बड़ी घटना के समय फील्ड डायरेक्टर का छुट्टी वापस नहीं आना और पूर्व में हाथियों के दल आने के संदर्भ में जो आवश्यक चिंता की जाना चाहिए, वह नहीं की गई। इस लापरवाही के लिए फील्ड डायरेक्टर गौरव चौधरी को सस्पेंड किया गया है। साथ ही प्रभारी एसीएफ फतेहसिंह निनामा को भी निलंबित किया गया है।

कर्नाटक, केरल और असम जाएंगे अधिकारी- उन्होंने कहा कि बांधवगढ़ क्षेत्र और अन्य वन क्षेत्रों में हाथियों के रहने की अनुकूल और आकर्षक स्थिति है। वन क्षेत्रों का प्रबंधन उत्तम होने से हाथियों के दल जो छत्तीसगढ़ एवं अन्य राज्यों से आया करते थे और वापस चले जाते थे। वे अब वापस नहीं जा रहे हैं। यहां बड़े पैमाने पर हाथियों द्वारा डेरा डालने की स्थिति देखी जा रही है। यह मध्यप्रदेश की वन विभाग की गतिविधियों का हिस्सा बन गए हैं।

हाथियों को लेकर स्थायी प्रबंधन हो- मोहन यादव ने कहा कि ऐसे में हाथियों की आवाजाही को देखते हुए स्वाभाविक रूप से स्थाई प्रबंधन के लिए शासन के स्तर पर हाथी टास्क फोर्स बनाने का निर्णय लिया जा रहा है। हाथियों को अन्य वन्य प्राणियों के साथ किस तरह रहवास की सावधानियां रखना चाहिए, इसके लिए योजना बनाई जा रही है। इसमें कर्नाटक, केरल और असम जैसे राज्यों की बेस्ट प्रैक्टिसेस को शामिल किया जाएगा। इन राज्यों में बड़ी संख्या में हाथी रहते हैं । इन राज्यों में मध्यप्रदेश के अधिकारियों को भेजा जाएगा।

सुप्रभात

कहते हैं कि यकायक
दिमाग की बत्ती बुझना
इन दिनों एक महामारी है
दिमाग पर एक धुंध
पल भर को
एक कोहरे का छा जाना
अँधेरे का सहसा ग्रस लेना
अँधेरा जो बहुत भारी है
और जड़ हो जाना
सब कुछ का
यह एक दूसरे को काटती हुई तरंगों
के समकालीन दौर की
महामारी है
ऐसे में दीपज्योति पर निगाह टिकाये रखना
आरोग्यम् सर्वसम्पदाम्
की तैयारी है

- मनोज श्रीवास्तव

पीएम किसान समृद्धि केन्द्र वन स्टॉप सेंटर के रूप में कार्य करेंगे : मुख्यमंत्री डॉ. यादव

एक ही स्थान पर मिलेगी खाद, बीज, मिट्टी और कृषि उपकरणों की जानकारी

भोपाल (नप्र)। मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव ने कहा है कि पीएम किसान समृद्धि केन्द्र वन स्टॉप सेंटर के रूप में कार्य करेंगे। इनमें खाद, बीज, कृषि उपकरण और मिट्टी परीक्षण के अतिरिक्त खेती-किसानी से संबंधित अन्य जानकारियाँ भी उपलब्ध कराई जायेंगी। उल्लेखनीय है कि 3 सितम्बर को मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने सहकारिता विभाग और नर्मदा नियंत्रण मण्डल के कार्यों की समीक्षा बैठक में प्रत्येक ग्राम पंचायत में पीएम किसान समृद्धि केन्द्र स्थापित किये जाने के निर्देश दिये थे।

पीएम किसान समृद्धि केन्द्रों का उद्देश्य है कि एक ही स्थान पर किसानों को मिट्टी, बीज, उर्वरक इत्यादि की जानकारी उपलब्ध कराई जाये। इसके साथ ही इन केन्द्रों को कस्टम हॉयरिंग सेंटर्स से जोड़कर किसानों को कृषि संबंधी छोटे और बड़े उपकरण भी उपलब्ध कराये जायें। किसानों को कृषि की बेहतर पद्धतियों और विभिन्न शासकीय योजनाओं के बारे में जानकारियाँ प्रदान की जायें।

किसानों को मिलेंगे ये लाभ

ग्राम पंचायतों में पीएम किसान समृद्धि केन्द्र स्थापित हो जाने से किसानों को अन्य स्थानों पर नहीं जाना पड़ेगा। उन्हें केन्द्र में ही खेती-किसानी के लिये आवश्यक सभी संसाधन उपलब्ध होंगे। संसाधन उपलब्ध न होने पर किसान समृद्धि केन्द्र समन्वयक की भूमिका निभाकर उन्हें संसाधन उपलब्ध करायेगा। इससे किसानों का खाद, बीज, उर्वरक और कृषि उपकरणों की खरीदी के लिये आने-जाने का समय भी बचेगा और अन्य व्यय भी नहीं होंगे।

उत्तराखंड के अल्मोड़ा में भीषण बस हादसा

36 की मौत, 6 घायल

- कंडम बस में 42 लोग सवार थे, मोड़ पर अनियंत्रित होकर 150 फीट गहरी खाई में गिरी
- मृतकों के परिजनों को 4-4 लाख व घायलों को 1-1 लाख रुपए की सहायता राशि का ऐलान

पीएम मोदी ने गहरा दुख व्यक्त किया

अल्मोड़ा (एजेंसी)। उत्तराखंड के अल्मोड़ा में सोमवार सुबह 8 बजे एक यात्री बस 150 फीट गहरी खाई में गिर गई। हादसे में 36 लोगों की मौत हो गई, जबकि 6 घायल हैं।

हादसा अल्मोड़ा में कूपी के पास हुआ। बस में 42 यात्री सवार थे। पुलिस के मुताबिक मृतकों की संख्या और बढ़ सकती है। हादसे की वजह का पता नहीं चला है। बस मोड़ पर अनियंत्रित होकर गिर गई।

कुमाऊं मंडल के आयुक्त दीपक रावत ने बताया, बस नदी से करीब 10 फीट पहले पेड़ में फंसकर रुक गई। खाई में गिरने के दौरान झटके से कई यात्री खिड़कियों से बाहर जा गिरे। बस किनाथ से रामनगर जा रही थी।

बस में ज्यादातर स्थानीय लोग सवार थे- दिवाली की छुट्टी के बाद सोमवार को पहला वर्किंग डे था। इसलिए बस पूरी भरी हुई थी। ज्यादातर स्थानीय लोग सवार थे। पुलिस ने बताया कि बस गढ़वाल मोटर्स ओनर्स यूनियन लिमिटेड की थी।

जांच के आदेश, एआरटीओ सस्पेंड

सीएम पुष्कर सिंह धामी ने मृतकों के परिजनों को 4-4 लाख और घायलों को 1-1 लाख रुपए की सहायता राशि देने का ऐलान किया है। आयुक्त कुमाऊं मंडल को घटना की मजिस्ट्रेट जांच के निर्देश दिए। पौड़ी और अल्मोड़ा के एआरटीओ प्रवर्तन को सस्पेंड कर दिया गया है। घायलों को अभी रामनगर हॉस्पिटल में भर्ती कराया गया है।

छिंदवाड़ा में प्रतिमा खंडित होने के बाद बवाल

छिंदवाड़ा (नप्र)। छिंदवाड़ा के जुन्नारदेव मंदिर में भगवान की प्रतिमा खंडित करने वाले को पुलिस ने गिरफ्तार कर लिया है। वहीं, घटना के विरोध में हिंदू संगठनों ने बाजार बंद किया है। संगठनों के प्रदर्शन के दौरान पुलिस और प्रदर्शनकारियों के बीच धक्का-मुक्की हो गई। जिसके बाद फोर्स ने उन्हें खदेड़ दिया। प्रदर्शनकारी नारेबाजी करते हुए आरोपी के खिलाफ सख्त कार्रवाई की मांग कर रहे हैं। प्रदर्शन में पूर्व विधायक और बीजेपी नेता नत्थन शाह भी शामिल हैं। वहीं, प्रशासन उचित कार्रवाई का आश्वासन देकर प्रदर्शन बंद खत्म करने की समझाइश दे रहा है।

झारखंड विधानसभा चुनाव प्रचार में बोले पीएम मोदी

जेएमएम, राजद और कांग्रेस परिवारवादी है

गढ़वा/चाईबासा (एजेंसी)। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी सोमवार को झारखंड विधानसभा के पहले फेज में होने वाली 43 सीटों पर चुनाव के लिए गढ़वा और चाईबासा में दो रैलियां करने पहुंचे हैं। उन्होंने पहली रैली गढ़वा में की। जो आजादी के बाद गढ़वा में पहली बार किसी प्रधानमंत्री की चुनावी सभा थी। पीएम मोदी की दूसरी सभा चाईबासा के टाटा कॉलेज मैदान में हुई।

'कुछ लोग जो यहां बैठे हैं वो कहते थे हमारी छाती पर झारखंड बनेगा' - प्रधानमंत्री ने कहा- 'कुछ लोग जो यहां बैठे हैं वो कहते थे हमारी छाती पर झारखंड बनेगा।' उनकी छाती पर झारखंड बन गया, लेकिन झारखंड के कुछ नेता उनकी गोदी में जाकर बैठ गए। पीएम का इशारा लालू प्रसाद यादव और हेमंत सोरेन पर था।

हमारा संकल्प पत्र रोटी,बेटी, माटी के लिए है

मोदी बोले- झारखंड बीजेपी का संकल्प पत्र रोटी, बेटी और माटी के सम्मान और सुरक्षा और समृद्धि के लिए समर्पित है। माताओं, बहनों और बेटियों के कल्याण के लिए इसमें अनेक संकल्प लिए गए हैं। गोगो दीदी योजना- इसमें हर महीने माताओं बहनों को 2100 रुपए मिलेंगे। जब बेटियों के साथ छल कपट होने लगे तो पता चलता है कि पानी सिर से गुजर चुका है।

भोपाल का तापमान

अधिकतम 30 °c | न्यूनतम 20°c

सुबह सवेरे

भोपाल ■ मंगलवार, 5 नवंबर 2024

जो अग्नि हमें गर्मी देती है , हमें नष्ट भी कर सकती है ; यह अग्नि का दोष नहीं है।

चाणक्य नीति

संक्षिप्त समाचार

यूपी, पंजाब, केरल में उपचुनाव की तारीख बदली

- 14 सीटों पर अब 13 की जगह 20 नवंबर को वोटिंग, त्योहारों की वजह से शेड्यूल बदला

नई दिल्ली (एजेंसी)। उत्तर प्रदेश, पंजाब और केरल में होने वाले विधानसभा उपचुनाव की तारीख बदल गई है। चुनाव आयोग ने सोमवार को बताया कि तीनों राज्यों की 14 विधानसभा सीटों पर अब 13 नवंबर की जगह 20 नवंबर को वोटिंग होगी। रिजल्ट 23 नवंबर को ही आएंगे। चुनाव आयोग के मुताबिक उत्तर प्रदेश की 9, पंजाब की 4 और केरल की 1 विधानसभा सीटों पर अब 20 नवंबर को वोटिंग होगी। तारीखों में बदलाव भाजपा, कांग्रेस, आरएलडी और बसपा की मांग पर की गई है।

इन पार्टियों का कहना था कि 15 नवंबर को कार्तिक पूर्णिमा और गुरुनानक देवजी का प्रकाश पर्व है। वहीं, केरल में 13 से 15 नवंबर तक कलपाथि रास्थोलसेवम मनाया जाएगा। इससे वोटिंग पर असर पड़ता। 20 नवंबर को ही महाराष्ट्र विधानसभा की 288 और झारखंड की 38 सीटों पर चुनाव होंगे।

इसके अलावा महाराष्ट्र की नांदेड़ लोकसभा और उत्तराखंड की केदारनाथ विधानसभा सीट पर इसी दिन उपचुनाव है।

- कनाडा में हिंदू मंदिर पर खालिस्तानियों का हमला

लाठी-डंडों से श्रद्धालुओं को पीटा

ओटावा (एजेंसी)। कनाडा के ब्रैम्पटन में हिंदू सभा मंदिर में आए लोगों पर खालिस्तानी समर्थकों ने हमला कर दिया। हमलावरों के हाथों में खालिस्तानी झंडे थे। उन्होंने मंदिर में मौजूद लोगों पर लाठी-डंडे बरसाए। घटना का वीडियो

सोशल मीडिया पर वायरल है। इस घटना की कनाडाई प्रधानमंत्री जस्टिन ट्रूडो ने निंदा की है। उन्होंने सोशल मीडिया पर कहा-ब्रैम्पटन में हिंदू सभा मंदिर में आज हुई हिंसा को स्वीकार नहीं किया जा सकता। हर कनाडाई को अपने धर्म का स्वतंत्र और सुरक्षित तरीके से पालन करने का अधिकार है। वहीं हमले को लेकर भारत सरकार ने कनाडा सरकार को सख्त ऐक्शन लेने को कहा।

घटना के बाद से इलाके में तनाव है। भारी संख्या में पुलिस की तैनाती की गई है। कनाडा में हिंदू मंदिर में तोड़फोड़ और मारपीट की घटना पर भारत ने भी चिंता जताई है। ओटावा में भारतीय उच्चायोग ने इसे लेकर बयान भी जारी किया है। भारतीय उच्चायोग ने कहा कि टोरंटो के पास ब्रैम्पटन में हिंदू सभा मंदिर में भारत विरोधी तत्वों ने हिंसा की। हम भारतीय नागरिकों की सुरक्षा के लिए बेहद चिंतित हैं।

आज से 4 दिनी छठ पूजा शुरु

नईदिल्ली/लखनऊ/पटना (एजेंसी)। सनातन धर्म में छठ पूजा के पर्व को बहुत ही पवित्र त्योहार माना गया है। इस उत्सव को 4 दिनों तक मनाया जाता है। इस दौरान सूर्य देव और छठी मैया की पूजा-अर्चना करने का विधान है। मान्यता है कि सूर्य देव पूजा करने से जातक को कार्यों में सफलता प्राप्त होती है और सूर्य देव प्रसन्न होते हैं। पंचांग के अनुसार, छठ पूजा की शुरुआत कार्तिक माह के शुक्ल पक्ष की चतुर्थी यानी 5 नवंबर से हो रही है। वहीं, इसका समापन अष्टमी तिथि यानी 8 नवंबर को होगा। इस दौरान छठी मैया और सूर्य देव की विधिपूर्वक पूजा-अर्चना की जाएगी।

प्रियंका गांधी का आरोप-

वायनाड त्रासदी पर केंद्र ने राजनीति की, भाजपा की राजनीति विभाजनकारी

वायनाड (एजेंसी)। कांग्रेस महासचिव प्रियंका गांधी ने कहा, यहां तक कि लोगों को बहुत दर्द देने वाली आपदा का भी भाजपा ने राजनीतिकरण किया। हम ऐसे मोड़ पर खड़े हैं, जहां आपको अपने देश, अपनी जरूरतों और अपने देश में आप किस तरह की राजनीति चाहते हैं, इसके बारे में सोचना चाहिए।

कांग्रेस नेता और वायनाड लोकसभा उपचुनाव के लिए यूडीएफ उम्मीदवार प्रियंका गांधी वाड्रा ने भाजपा पर हमला बोला। वायनाड में चुनाव प्रचार के दौरान प्रियंका गांधी ने आरोप लगाया कि जुलाई में वायनाड में आई भूस्खलन आपदा का राजनीतिकरण किया जा रहा है। उन्होंने भाजपा के नेतृत्व वाली केंद्र सरकार पर भूस्खलन से प्रभावित परिवारों को आवश्यक धन वितरित करने में विफल रहने का भी आरोप लगाया। वायनाड त्रासदी में सैंकड़ों लोग मारे गए थे और कई लोगों को विस्थापित होना पड़ा था। प्रियंका गांधी ने अपने प्रचार के दूसरे दिन सुल्तान बाथरी विधानसभा क्षेत्र के केनिचिरा में एक नुक्कड़ सभा को संबोधित किया।

सिंध नदी में डुबकी लगाते ही बेहोशी जैसी हालत, 3000 स्ट्रेचर की थी व्यवस्था

जिन्हें सांप ने डसा, उनका मेला

दतिया (नप्र)। दतिया के रतनगढ़ माता मंदिर में हर साल की तरह इस बार भी भाई दूज के मौके पर लक्खी मेला लगा है। खास बात ये है कि मेले में वे लोग आते हैं जो सर्पदंश से पीड़ित हैं, यानी जिन्हें सांप ने साल भर में कभी न कभी डसा हो। ऐसी मान्यता है कि सांप के जहर से बचने के लिए लोग रतनगढ़ वाली माता का बंध (मन्नत) लगाते हैं और ठीक होने पर दरबार में हाजिरी देते हैं।

यहां दो दिन में 37 लाख श्रद्धालु पहुंचे। सर्पदंश पीड़ितों ने मान्यता के मुताबिक सिंध नदी में स्नान किया। स्नान करते ही वे बेहोश होने लगे। करीब 8 हजार लोगों को बेहोशी की हालत में मंदिर में स्ट्रेचर पर उठाकर ले गए। लोग बताते हैं कि परिसर में झाड़-फूंक के बाद वो ठीक हुए और माता के जयकारे लगाए।

बता दें, ये वहीं मंदिर है जिसे बागियों का मंदिर भी कहा जाता है। जानकार बताते हैं कि चंबल के बागी पुलिस को चुनौती देकर रतनगढ़ मंदिर में घंटा चढ़ाने आते थे। आखिर क्यों रतनगढ़ मंदिर में इतनी भीड़ जुटती है? क्या वजह है कि श्रद्धालु नदी में स्नान करते ही बेहोश हो जाते हैं।

सिंध नदी में नहाते ही बेहोश होने लगते हैं सर्पदंश पीड़ित- गोवर्धन पूजा के बाद से ही दतिया से 61 किमी दूर रतनगढ़ की पहाड़ी पर श्रद्धालुओं की भीड़ उमड़ने लगी है। यहां लक्खी मेला लगा है, जो तीन दिन का है। मेले में हर बार की तरह इस बार भी भारी भीड़ है। इतनी कि दो दिन में ही आंकड़ा 37 लाख के पार चला गया है। ये सिलसिला अभी थमा नहीं है।

आखिर ऐसा क्या है यहां कि इतने सारे लोग खींचे चले आते हैं? श्रद्धालुओं की मेले में हाजिरी की औपचारिक प्रक्रिया शुरू हो जाती है। सिंध नदी में श्रद्धालु वैसे ही नहा रहे हैं जैसे सामान्य तौर पर नदियों में स्नान करते हैं, लेकिन

एक बड़ा अंतर दिखा। कई श्रद्धालु नहाने के बाद ही बेहोश होने लगे। उनके परिजन उन्हें उठाकर कपड़े के स्ट्रेचर पर डालने लगे। फिर माता रतनगढ़वाली के दर्शन के लिए लेकर चल दिए।

उत्तर प्रदेश के गरौठा से आई बुजुर्ग महिला शीतला परिहार नदी से नहाकर निकलते ही बेहोशी की हालत में जाने लगीं। उनकी आंखों से आंसू निकल रहे थे। उनके पोते संदीप परिहार ने बताया कि नानी को 4 दिन पहले सांप ने डसा था। माता के नाम का बंध लगाने के बाद वो बिलकुल ठीक हो गई थीं। अभी यहां आने के बाद 8 किमी पैदल चल कर नदी आई थीं। इनको कोई दिक्कत नहीं थी। यहां डुबकी लगाते ही इनकी ये हालत हो गई है। अब इन्हें जल्दी से ऊपर ले जाना है, ताकि ये ठीक हो सकें।

माता और उनके भाई कुंवर महाराज की होती है पूजा- यहां आए लोगों से हमने आने का कारण पूछा तो लोगों ने बताया कि भीड़ के एक जगह जमा होने की वजह हैं- रतनगढ़ वाली माता और उनके भाई कुंवर महाराज। इस पहाड़ी पर इन दोनों को भाई-बहन के तौर पर पूजा जाता है। मान्यता है कि माता यहां आने वाले सभी भक्तों की हर तरह की मनोकामना को पूरा करती हैं।

बंगाल में नहीं थम रही दरिंदगी की घटनाएं, 48 घंटों में पांच लड़कियों से दुष्कर्म

कोलकाता (एजेंसी)। बंगाल के मोगरा इलाके में 16 साल की किशोरी से उसके पड़ोसी ने शनिवार रात कथित तौर पर दुष्कर्म किया। किशोरी उस वक्त घर में अकेली थी। इसे लेकर बीते 48 घंटों में राज्य में नाबालिग लड़कियों के साथ दुष्कर्म की यह पांचवीं घटना है। इससे पहले अलीपुरद्वार जिले में शुक्रवार को अलग-अलग स्थानों पर दो नाबालिग लड़कियों के साथ दुष्कर्म की घटना सामने आई थी। बंगाल में दुष्कर्म की घटनाएं थमने का नाम नहीं ले रही हैं। अलीपुरद्वार, मुर्शिदाबाद व उत्तर 24 परगना के बाद अब हुगली जिले में एक किशोरी के साथ उसके पड़ोसी द्वारा दुष्कर्म की घटना सामने आई है। पुलिस ने आरोपित को गिरफ्तार कर लिया है।

नाबालिग लड़कियों से दुष्कर्म की पांचवीं घटना

बताया जा रहा है कि मोगरा इलाके में 16 साल की किशोरी से उसके पड़ोसी ने शनिवार रात कथित तौर पर दुष्कर्म किया। किशोरी उस वक्त घर में अकेली थी। इसे लेकर बीते 48 घंटों में राज्य में नाबालिग लड़कियों के साथ दुष्कर्म की यह पांचवीं घटना है। पुलिस ने कहा कि मामले में भारतीय न्याय संहिता (बीएनएस) और यौन अपराधों से बच्चों का संरक्षण (पाक्सो) अधिनियम की संबंधित धाराओं के तहत मामला दर्ज करके आरोपित को गिरफ्तार कर लिया गया है।

कंपा देगी जुर्म की ये दास्तां

प्रेमिका के घर सोने से रोका तो कर दिए 6 कत्ल, गर्भवती भाभी को भी नहीं बख्शा...

नई दिल्ली (एजेंसी)। 24 जनवरी 2021 की वो भयानक रात, जब एक शख्स ने अपने ही परिवार के 6 लोगों का बेरहमी से कत्ल कर दिया। वो एक-एक कर कमरों के दरवाजे खोलता गया और जो सामने आया, उसे गोली मारता गया। पहले पिता, फिर मां, इसके बाद बहन और भाई। इतने से भी जब उसका मन नहीं भरा, तो उसने अपनी उस भाभी को भी गोली मार दी, जिसके गर्भ में एक नन्ही जान पल रही थी। अब इसी कातिल को 6 हत्याओं का दोषी माना गया है और उसे हर कत्ल के लिए 40 से 65 साल जेल की सजा हो सकती है। आखिर क्या था ये पूरा मामला? एक शख्स ने क्यों अपने ही परिवार को मिटा डाला? उस रात घर के भीतर ऐसा क्या हुआ था? आइए आपको जुर्म की ये पूरी कहानी बताते हैं। मामला इंडियाना के इंडियाना पोलिस शहर का है, जब 24 जनवरी को 17 साल का रेमंड रोनाल्ड ली चाइल्ड्स नाम का ये किशोर रात में देर से अपने घर लौटा। पिता ने उससे देरी से लौटने की वजह पूछी, तो उसने बताया कि वो अपनी गर्लफ्रेंड के पास था और वापस उसी के घर जा रहा है। उसने कहा कि रात में वो अपनी गर्लफ्रेंड के घर पर ही रुकेगा। इसपर पिता ने उसे रोका और गर्लफ्रेंड के घर जाने के लिए साफ-साफ मना कर दिया।

अजन्मे बच्चे की भी ले ली जान

इसके बाद रेमंड अपनी मां के कमरे में गया। उसके सिर पर जैसे खून सवार था और मां के ऊपर भी उसने गोली चला दी। इसके बाद वो कमरों के दरवाजे खोलता गया और कत्ल करता गया। बहन और भाई को मारने के बाद वो अपनी भाभी के कमरे में पहुंचा और उसके साथ-साथ गर्भ में पल रहे अजन्मे बच्चे की भी हत्या कर दी।

छोटे भाई ने पुलिस को बताई हकीकत

इतने में शोर सुनकर उसका छोटा भाई वहां पहुंचा। रेमंड ने उसे भी नहीं बख्शा और गोली चला दी। इसके बाद वो घर से निकला और भागकर अपने एक रिश्तेदार के यहां छिप गया। रेमंड को लगा था कि उसके परिवार में अब कोई नहीं बचा, लेकिन ऐसा नहीं था। उसके छोटे भाई को गोली लगी जरूर थी, लेकिन वो केवल घायल हुआ था। कुछ होश आते ही उसने तुरंत पुलिस को फोन किया और अपने घर में खेले गए खूनी खेल के बारे में बताया।

वायु प्रदूषण पर सुप्रीम कोर्ट सख्त

दिल्ली सरकार से पूछा-

पटाखों पर प्रतिबंध क्यों लागू नहीं किया

नई दिल्ली (एजेंसी)। दिल्ली में बढ़ रहे वायु प्रदूषण को लेकर सुप्रीम कोर्ट ने दिल्ली सरकार को फटकार लगाई है। सुप्रीम कोर्ट ने कहा कि अखबारों की खबरों को देखकर लगता है कि दिल्ली में पटाखों पर प्रतिबंध लागू नहीं किया गया। सुप्रीम कोर्ट ने इसे लेकर दिल्ली सरकार से जवाब मांगा है कि पटाखों को प्रतिबंधित क्यों नहीं किया गया? सुप्रीम कोर्ट ने दिल्ली सरकार और दिल्ली पुलिस आयुक्त को नोटिस जारी किया है। इसके अलावा पंजाब, हरियाणा में पराली जलने पर भी नाराजगी जाहिर की है। कोर्ट ने दोनों राज्य सरकारों से जवाब मांगा है।

योगी कैबिनेट ने 27 प्रस्तावों को दी मंजूरी

अब टीचर का ट्रांसफर 5 की बजाए 3 साल में होगा

लखनऊ (एजेंसी)। सीएम योगी आदित्यनाथ की अध्यक्षता में सोमवार को कैबिनेट बैठक हुई। इसमें 27 प्रस्तावों पर मुहर लगी। सहायता प्राप्त डिग्री कॉलेज के टीचर का ट्रांसफर अब 5 की बजाए 3 साल की न्यूनतम सेवा के बाद हो सकेगा। इसके अलावा, पशु चिकित्सा के क्षेत्र में डिप्लोमा व सर्टिफिकेट पाठ्यक्रमों के लिए भी नीति को मंजूरी मिल गई है। योगी सरकार ने नई शीरा नीति को भी मंजूरी दी है। इसमें कोई बदलाव नहीं किया गया।

राज्य के रिटायर्ड कर्मचारियों के लिए रिटायरमेंट बेनिफिट रूल्स-1961 में भी संशोधन को मंजूरी मिली है। इसमें कोई सरकारी कर्मचारी रिटायरमेंट के बाद यदि अपने किसी नॉमिनी, वारिस को नहीं छोड़ता है तो उसकी ग्रेच्युटी का पैसा सरकार के पास चला जाता था। लेकिन अब ऐसा नहीं होगा।

इन योजनाओं को मंजूरी

ललितपुर में भौरट बांध परियोजना के द्वितीय पुनरीक्षित प्रस्ताव को मंजूरी।

केन बेतवा लिंक परियोजना हेतु प्रस्ताव को स्वीकृति, बुंदेलखंड के सूखाग्रस्त क्षेत्र को लाभ प्राप्त होगा।

प्रदेश में पशु चिकित्सकों की कमी को पूरी करने के लिए पशुपालन पाठ्यक्रम हेतु डिप्लोमा, सर्टिफिकेट कोर्स हेतु नीति तैयार करने के प्रस्ताव को मंजूरी।

शीरा नीति- उत्तरप्रदेश शीरा नीति 2024-25 के प्रस्ताव को मंजूरी,1 नवम्बर 2024 से 31 अक्टूबर 2025 के शीरा वर्ष हेतु शीरा रिजर्वेशन को मंजूरी, 19 प्रतिशत शीरा रिजर्वेशन स्वीकृति।

आगरा में सेना का विमान क्रैश

पायलट समेत दो लोगों ने कूदकर बचाई जान, आसमान में लगी थी आग

आगरा (एजेंसी)। उत्तर प्रदेश के आगरा में बड़े विमान हादसे की सूचना है। भारतीय वायु सेना के विमान में आसमान में आग लग गई। एयरफोर्स का विमान क्रैश होने की सूचना के बाद हड़कंप मच गया। विमान में सवार पायलट समेत 2 लोगों ने कूदकर जान बचाई है। जमीन पर गिरते ही विमान में आग लग गई। कागारौल के गांव सोंगा गांव के पास खाली खेतों में विमान के गिरने की जानकारी सामने आई है।

दूसरी शादी करने पत्नी का गला दबाया, नदी में फेंका

थाने पहुंचकर बोला-बिना बताए कहीं चली गई; पिता के साथ मिलकर रची हत्या की साजिश

जबलपुर (नप्र)। जबलपुर में एक शख्स ने अपने पिता के साथ मिलकर पत्नी की हत्या कर दी। फिर लाश को नदी में फेंककर पुलिस थाने पहुंचा और गुमशुदगी की रिपोर्ट दर्ज कराई। मामले को गंभीरता से लेते हुए पुलिस महिला की तलाश में जुट गई। छठवें दिन महिला की लाश नदी में उतराते मिली। पोस्टमार्ट्म रिपोर्ट में खुलासा हुआ कि महिला की मौत गला दबाने से हुई है। पुलिस ने जांच की तो पता लगा कि हत्या पति ने ही की थी। सिर्फ इसलिए कि वह दूसरी शादी करना चाह रहा था और पत्नी मान नहीं रही थी। पुलिस ने केस दर्ज कर पिता-पुत्र को गिरफ्तार कर लिया है।

10 साल पहले हुआ था विवाह

मुन्ना सिंह, आरोपी रजनी सिंह, मृतक चैन सिंह, आरोपी

बेलखेड़ा थाना इलाके के पथरिया गांव में रहने वाले चैन सिंह (36) का रजनी से 10 साल पहले विवाह हुआ था। बच्चे नहीं हो पाने के कारण दंपती के बीच अक्सर झगड़े होते रहते थे। करीब एक साल पहले चैन सिंह ने दूसरी शादी करने का प्रस्ताव घर में रखा। पिता मुन्ना सिंह तैयार हो गए लेकिन रजनी ने साफ मना कर दिया। वह दूसरी शादी के खिलाफ थी। चैन सिंह ने कई बार रजनी को मनाया लेकिन वह नहीं मानी। इस पर चैन सिंह ने उसे रास्ते से हटाने का मन बना लिया। पिता मुन्ना सिंह के साथ मिलकर रजनी की हत्या का प्लान बना डाला।बेलखेड़ा थाना पुलिस आरोपी चैन सिंह को लेकर वहां पहुंची, जहां उसने रजनी का शव फेंका था।

पड़ोसियों ने टोका तो थाने में गुमशुदगी दर्ज कराई

26 अक्टूबर की रात जब रजनी सो रही थी, चैन सिंह ने गला दबाकर उसकी हत्या कर दी। रात में ही पिता के साथ बाइक से शव को लेकर हिरन नदी पहुंचा। लाश नदी में फेंककर दोनों घर लौट आए। अगले दिन आस-पड़ोस में पत्नी के गायब होने की खबर फैला दी। कई दिन तक रजनी नहीं लौटी तो पड़ोसियों ने चैन सिंह से पुलिस में रिपोर्ट करने को कहा। इस पर वह 1 नवंबर की सुबह बेलखेड़ा थाने पहुंचा। बताया कि पत्नी रजनी 27 अक्टूबर की सुबह घर में बिना कुछ बताए कहीं चली गई है।

मायके वाले बोले- 6 महीने से यहां नहीं आई बेटी- थाना प्रभारी सरोजिनी टोप्पो ने टीम के साथ गांव के आसपास महिला की तलाश की, लेकिन वह नहीं मिली। इसके बाद पुलिस महिला के मायके कटीला गांव भी गई। मायकेवालों ने बताया कि रजनी 6 महीने से यहां नहीं आई है। 1 नवंबर की शाम गांव से करीब 3 किलोमीटर दूर हिरन नदी में रजनी का शव मिला। पुलिस ने पोस्टमार्ट्म कराया तो मौत की वजह सामने आ गई।

बाप-बेटे पुलिस को करते रहे गुमराह, सख्ती पर टूटे

गला दबाने से मौत की वजह का पता लगते ही पुलिस ने एक बार फिर चैन सिंह और उसके पिता मुन्ना सिंह से पूछताछ की। वे गुमराह करते रहे। कभी बोलते कि रजनी बिना बताए चली गई थी, तो कभी कहते कि लड़ाई होने के बाद वह बोल रही थी कि घर छोड़कर चली जाऊंगी। पुलिस ने सख्ती की तो चैन सिंह ने सच उगल दिया। उसने बताया, शादी के 10 साल बाद भी बच्चे नहीं हो रहे थे। दूसरी शादी करने की सोची तो रजनी ने साफ मना कर दिया। यही वजह थी कि रजनी को मारना जरूरी हो गया था।

उज्जैन में 20051 रुपए क्विंटल बिका डॉलर चना

● मप्र की कृषि उपज मंडियों में मुहूर्त के सौदे ● इंदौर में 6171 रुपए क्विंटल बिका गेहूं, भोपाल में हुई आतिशबाजी

भोपाल/इंदौर/उज्जैन (नप्र)। राजधानी भोपाल, इंदौर और उज्जैन की मंड़ियों में सोमवार को मुहूर्त के सौदे हुए। भोपाल की करोंद अनाज मंडी, इंदौर की छावनी अनाज मंडी, लक्ष्मीबाई नगर अनाज मंडी और सियागंज, उज्जैन की कृषि उपज मंडी में व्यापारियों ने किसानों का अनाज ऊंची बोली लगाकर खरीदा। तौल कांटों की पूजा के बाद जमकर आतिशबाजी भी की गई।

उज्जैन में डॉलर चना 20 हजार रुपए क्विंटल पर खरीदा गया। वहीं इंदौर में डॉलर चना 14700 रुपए में बिका। सोयाबीन के मामले में भी इंदौर के किसान उज्जैन के किसानों से पिछड़ते नजर आए। इंदौर में जहां सोयाबीन 4550 रुपए प्रति क्विंटल के भाव से खरीदा गया, वहीं उज्जैन में सोयाबीन को 7411 रुपए प्रति क्विंटल के भाव मिले।

6001 रुपए क्विंटल पर किसान से खरीदा सोयाबीन- गेहूं 3071 रुपए प्रति क्विंटल के हिसाब से कान्हा सैया के किसान कमल सिंह से निहालचंद ट्रेडर्स ने खरीदा। वहीं, लवण ट्रेडर्स ने कल्याणपुर की रेखाबाई की सोयाबीन 6001 रुपए प्रति क्विंटल के हिसाब से खरीदा गया। सुबह 9 बजे से व्यापारियों ने पूजा शुरू कर दी, जो दोपहर 12 बजे तक चली। इसके बाद मुहूर्त के सौदे हुए। जिसमें किसानों के अनाज की बोली लगाकर ज्यादा भाव में खरीदा गया। भोपाल ग्रेन मर्चेंट एंड ऑयल सीड्स

एसोसिएशन के प्रवक्ता संजीव जैन ने बताया, धनतेरस (बुधवार) से मंडी में कारोबार बंद हो गया था। 3 नवंबर, रविवार तक मंडी बंद रही। वहीं, सोमवार सुबह 9 बजे से मुहूर्त के सौदे हुए। फिर दीवाली मिलन समारोह है। मंडी के सभी व्यापारियों ने अपने प्रतिष्ठानों पर जाकर पहले तौल कांटों की पूजा की, फिर आतिशबाजी।

उज्जैन में 20051 रुपए प्रति क्विंटल पर खरीदा गया चना- उज्जैन में आगर रोड कृषि उपज मंडी में ढोल-ढमाके के बीच मुहूर्त के सौदे हुए। इस दौरान जमकर आतिशबाजी भी की गई। व्यापारियों ने किसानों से डालर चना 20051 रुपए प्रति क्विंटल, ज्वार 10100 रुपए प्रति क्विंटल, सोयाबीन 7411 रुपए प्रति क्विंटल, मक्का 5353 रुपए प्रति क्विंटल और गेंहू 5151 रुपए प्रति क्विंटल के भाव से खरीदा। पिछले साल उज्जैन में मुहूर्त में सोयाबीन 8551 रुपए क्विंटल नीलम हुआ था।गेहूं 3651 रुपए, मक्का 5101, ज्वार 4551 और डॉलर चना 16,113 रुपए प्रति क्विंटल बिका था।

इंदौर में भी हुए मुहूर्त के सौदे- इंदौर की छावनी अनाज मंडी, लक्ष्मीबाई नगर अनाज मंडी, सियागंज आदि बाजारों में मुहूर्त के सौदे हुए। कृषि उपज संघ के अध्यक्ष मनोज काला ने बताया कि मुहूर्त के सौदों में-

गेहूं - 6171 रुपए प्रति क्विंटल, डॉलर चना - 14700 रुपए प्रति क्विंटल, काला चना - 7221 रुपए प्रति क्विंटल, सोयाबीन - 4550 रुपए प्रति क्विंटल, मक्का - 2950 रुपए प्रति क्विंटल, मूंग - 8084 रुपए प्रति क्विंटल के भाव में किसानों से फसलें खरीदी गईं। किसानों का सम्मान भी किया। मंडी में लोकसभा की पूर्व अध्यक्ष सुमित्रा महाजन, व्यापार संवर्धन बोर्ड के राष्ट्रीय चेयरमैन सुनील सिंघी, सांसद शंकर लालवानी, विधायक गोलू शुक्ला, महेंद्र हार्डिया, पूर्व विधायक अश्विन जोशी मौजूद रहे।

'भाजपा ने चुनी हुई सरकारें गिराकर कुर्सी की भूख मिटाई'

कमलनाथ ने लिखा-अदालतों की अल्प इच्छाशक्ति खरीद-फरोख्त को संजीवनी देती है

भोपाल (नप्र)। मध्यप्रदेश के पूर्व मुख्यमंत्री और कांग्रेस के सीनियर लीडर कमलनाथ ने एक बार फिर दलबदल, विधायकों की खरीद फरोख्त और सौदेबाजी को लेकर भाजपा पर निशाना साधा है। उन्होंने इसे लेकर न्याय व्यवस्था पर भी सवाल उठाए है।

कमलनाथ ने सोशल मीडिया एक्स लिखा है - बीजेपी में सौदेबाजी और बेमेल गठबंधन कर चुनी हुई सरकारों को गिराकर अपनी कुर्सी की भूख मिटाई है। खरीद फरोख्त रोकने के लिए कानून भी बने हैं, लेकिन जब केन्द्र सरकार ही अनैतिक समर्थन का मूल्य चुकाती है, तब कानून इसे रोकने में अक्षम नजर आता है, अदालतों की अल्प इच्छाशक्ति भी खरीद फरोख्त को संजीवनी देती है। बीजेपी ने पलटवार करते हुए कहा, न्याय व्यवस्था पर सवाल उठाना ठीक नहीं।

कमलनाथ बोले- लोकतंत्र में सौदेबाजी एक विकार- पूर्व सीएम कमलनाथ ने सोशल मीडिया पर लिखा- लोकतंत्र में सौदेबाजी एक विकार है, और जब केन्द्र में सत्तासीन दल ही राज्यों में खरीद फरोख्त और सौदेबाजी का मूक समर्थक बन जाए, तब इसे रोकना लगभग नामुमकिन सा हो जाता है।

हमने मध्यप्रदेश, कर्नाटक, उत्तराखंड, महाराष्ट्र जैसे कई राज्यों के उदाहरण देखें हैं, जब बीजेपी ने सत्ता हासिल करने के लिए बड़ी संख्या में सौदेबाजी और बेमेल गठबंधन कर जनता के द्वारा चुनी हुई सरकारों को गिराकर अपनी कुर्सी की भूख मिटाई है।

सौदेबाजी से केवल एक लोकतांत्रिक सरकार की ही हत्या नहीं होती, बल्कि जनता के परिवर्तन के मूल निर्णय की भी हत्या होती है। जब 'वोट' से चुनी हुई सरकार को 'नोट' से बिके हुए नेताओं के कारण अल्पायु में मिटना पड़ता है, तब जनता के वोट की ताकत शून्य हो जाती है।

कुर्सीखोर भस्मासुर बनकर जनता पर ही राज करते हैं- कमलनाथ ने लिखा- प्रजातंत्र में जनता को सर्वोपरी बनाया गया है। प्रजातंत्र का मतलब ही जनता का, जनता के द्वारा और जनता के लिए शासन होता है, लेकिन खरीद फरोख्त में जनता विलोपित कर दी जाती है, और कुर्सीखोर भस्मासुर बनकर जनता पर ही राज करने लगते हैं।

खरीद फरोख्त रोकने के लिए कानून भी बने हैं, लेकिन जब केन्द्र सरकार ही अनैतिक समर्थन का मूल्य चुकाती है, तब कानून इसे रोकने में अक्षम नजर आता है, अदालतों की अल्प इच्छाशक्ति भी खरीद फरोख्त को संजीवनी देती है।

अनैतिक सौदेबाजी अदालतों में संविधान सम्मत हो जाती है

कमलनाथ ने आगे लिखा- आप खुद सोचिए, जिस अनैतिक सौदेबाजी को पूरा देश समझ रहा होता है, वो सौदेबाजी अदालतों में जाकर नैतिक और संविधान सम्मत हो जाती है। जब सौदेबाजी से लोकतंत्र की हत्या का अभियान शुरू किया जाता है, तब चुनाव आयोग, विधानसभा अध्यक्ष, राज्यपाल, अदालत और सौदेबाजी को संरक्षण देती केन्द्र और राज्य सरकारों की भूमिका पर प्रश्न चिन्ह लगते ही हैं।

जबलपुर एसपी का आदेश-जुआरियों को भागने का मौका दें

नदी, तालाब देखकर करें रेड, विवाद के बाद आदेश वापस, बोले-ड्राफ्टिंग में गलती हुई

जबलपुर (नप्र)। 'दीपावली से लेकर ग्यारस तक जुआ खेलने की शिकायत पर रेड से पहले पता कर लिया जाए कि आसपास कोई तालाब, नदी, नहर या फिर कुआं तो नहीं है। जुआ खेल रहे लोगों को पुलिस की मौजूदगी का एहसास कराया जाए ताकि वे खुद भाग जाएं।'

जुआरियों को लेकर ये अजीब गाइड लाइन जबलपुर पुलिस की है। एसपी संपत उपाध्याय ने सभी थाना प्रभारियों को बकायदा निर्देश जारी किए।

आदेश में लिखा - पहली, दूसरी और तीसरी मंजिल पर यदि जुआ चल रहा है तो वहां भी कार्रवाई न की जाए, पुलिस की उपस्थिति का वहां भी एहसास करवाया जाए ताकि वे खुद भाग जाएं।

दरअसल, रेड की कार्रवाई के दौरान जुआरियों के भागने के बीच होने वाली घटनाओं को देखते हुए ये आदेश जारी किया गया था। 29 अक्टूबर को जारी आदेश पर विवाद बढ़ा हुआ तो ड्राफ्टिंग की गलती बताते हुए 30 अक्टूबर को आदेश वापस ले लिया।

एसपी का जवाब-कार्रवाई से ज्यादा लोगों की जान कीमती- कांग्रेस द्वारा सवाल खड़े करने के जवाब में एसपी उपाध्याय ने एक्स पर लिखा, पुलिस कार्रवाई के दौरान दुर्घटना रोकने के उद्देश्य से जारी आदेश की ड्राफ्टिंग त्रुटि सुधार करते हुए संशोधित आदेश जारी किए गए हैं। जबलपुर पुलिस अवैध गतिविधियों के विरुद्ध कड़ी वैधानिक कार्रवाई के लिए संकल्पित है और लगातार कार्रवाई कर रही है। एसपी ने कहा कि रेड के दौरान कई बार ऐसी घटनाएं सामने आई हैं, जिनमें लोगों की जान चली गई। कार्रवाई से ज्यादा लोगों की जान कीमती है, इसकी परवाह करते हुए यह आदेश जारी किया।

भाजपा विधायक बोले- कांग्रेस अपने गिरेबान में झांके- सिहोरा विधायक संतोष बरकड़े ने कहा- जब कभी पुलिस जुआ फड़ पर रेड मारती है तो जुआरी भागते हैं। इस दौरान दुर्घटनाएं भी होती हैं, उसी के मद्देनजर यह आदेश जारी किया गया होगा। जबलपुर पुलिस अपराध और अपराधियों पर लगाम लगा रही है। कांग्रेस इस तरह का आरोप लगाने से पहले यह जान ले कि जब उनकी सरकार थी, उस दौरान खुलेआम सड़कों पर जुआ चलता था। पुलिस जानकर भी कार्रवाई इसलिए नहीं करती थी कि सरकार का दबाव था। कांग्रेस नेताओं को अपने गिरेबान में झांकना चाहिए।

ग्वालियर-चंबल में सर्दी बढ़ी, पचमढ़ी सबसे ठंडा

एमपी में दो सिस्टम की एक्टिविटी; इस महीने बादल और बूंदाबांदी के आसार

भोपाल (नप्र)। मध्यप्रदेश के कई शहरों में रात के तापमान में गिरावट आ गई है। हिल स्टेशन पचमढ़ी सबसे ठंडा है। अक्टूबर के बाद नवंबर में भी यहां दिन-रात का टेम्प्रेचर सबसे कम है। शनिवार-रविवार की दरमियानी रात यहां का पारा 12.8 डिग्री सेल्सियस रहा था। इससे पहले टेम्प्रेचर 15 डिग्री से कम था। ग्वालियर-चंबल में भी रात में ठंड बढ़ गई है। नवंबर में मध्यप्रदेश में ठंड-गर्मी के साथ बारिश का ट्रेंड भी है, लेकिन इस बार इसकी संभावना कम है। मौसम विभाग के मुताबिक, नवंबर में सिस्टम की एक्टिविटी कम रहेगी। अरब सागर और बंगाल की खाड़ी से एक्टिव होने वाले साइक्लोनिक सर्कुलेशन और लो प्रेशर एरिया की वजह से कहीं-कहीं बादल या बूंदाबांदी जरूर हो सकती है। एमपी में नवंबर में औसत बारिश करीब आधा इंच ही है। महाकाल को भस्म आरती के दौरान गर्म जल से स्नान कराया जा रहा है। रूप चतुर्दशी से ठंड की शुरुआत मानी जाती है। महाशिवरात्रि तक बाबा को गर्म जल से स्नान कराया जाएगा।

मंडला-रीवा भी ठंडे

शनिवार-रविवार की दरमियानी रात मंडला में 15 डिग्री सेल्सियस, रीवा में 15.6 डिग्री, उमरिया में 15.8 डिग्री, राजगढ़ में 16.4 डिग्री, नौगांव में 16.6 डिग्री, जबलपुर में 16.8 डिग्री सेल्सियस तापमान दर्ज किया गया। सतना में 17.1 डिग्री, मलाजखंड-बैतूल में 17.2 डिग्री, टीकमगढ़ में 17.3 डिग्री, रायसेन में 17.4 डिग्री, भोपाल-ग्वालियर में 17.6 डिग्री, छिंदवाड़ा में 18 डिग्री, खरगोन में 18.2 डिग्री, उज्जैन में 18.4 डिग्री, इंदौर-गुना में 19.2 डिग्री, धार में 19.3 डिग्री, दमोह-खंडवा में 19.4 डिग्री, सिवनी-रतलाम में 19.6 डिग्री पारा रहा। ग्वालियर में 5 दिन में न्यूनतम पारा करीब 3 डिग्री लुढ़का है। 29 अक्टूबर की रात यह 20.6 डिग्री रहा, 2 नवंबर की रात 17.4 डिग्री दर्ज हुआ।

15 नवंबर से और बढ़ेगी सर्दी

मौसम विभाग के अनुसार, 15 नवंबर से ठंड का असर तेज होगा। पिछले 10 साल से यही ट्रेंड है। हालांकि, दिन में गर्मी का असर दूसरे सप्ताह तक बना रहेगा।

रिश्ते के नाना ने कटाई मानवता की नाक

4 साल की बच्ची से किया गलत काम, रोती बिलखती मिली मासूम, गिरफ्तार

मऊगंज (नप्र)। एमपी के मऊगंज जिले में रिश्तों को शर्मसार करने वाली घटना सामने आई है। यहां 62 वर्षीय रिश्ते के नाना ने 4 साल की मासूम बच्ची के साथ रेप जैसी शर्मनाक घटना को अंजाम दिया है। पूरी घटना मऊगंज थाना क्षेत्र से सामने आई है। जहां 62 वर्षीय पड़ोस में रहने वाले रिश्ते के नाना ने 4 साल की मासूम बच्ची को बहला फुसलाकर अपने कमरे में बुलाया। फिर बच्ची को कमरे में कैद कर उसके साथ गलत काम करने लगा। बच्ची के रोने की आवाज सुनकर परिजन घटनास्थल पर पहुंचे और दरवाजा खुलवाकर रोती बिलखती मासूम को बचाया।

राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ का प्रशिक्षण सत्र का समापन

आरएसएस प्रमुख भागवत चित्रकूट हुए रवाना

ग्वालियर (नप्र)। ग्वालियर के केदारपुर धाम में चल रहा राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के अनुशांगिक संगठनों के प्रचारक के अखिल भारतीय प्रशिक्षण प्रचारक वर्ग का सोमवार (4 नवंबर) दोपहर भोज के बाद समापन हो गया है। इस प्रशिक्षण वर्ग में प्रचारक ने संघ के विस्तार का पाठ पढ़ा है। साथ ही आने वाले समय मे राजनैतिक, सामाजिक क्षेत्र के अलावा मजदूर, किसानों, विद्यार्थियों, सामाजिक, आर्थिक एवं ग्रामीण, वनवासी क्षेत्र में संघ के कार्यों पर चर्चा की।

इतना ही नहीं 5 दिन तक 7 सत्र में चले इस विविध संगठन प्रचारक वर्ग में आए 31 संगठन के 554 प्रचारक ने आने वाले समय को चुनौती बताते हुए कई तरह की जिम्मेदारी सौंपी हैं। समापन से पहले आरएसएस प्रमुख सर संघचालक ने सभी प्रचारक को भविष्य की शुभकामनाएं देते हुए उनके साथ भोजन किया। शाम को

आरएसएस प्रमुख ट्रेन के माध्यम से रवाना हो जाएंगे। आरएसएस प्रमुख के रवाना होने से पहले केदारपुर धाम से स्टेशन तक पुलिस ने कारकेड निकालकर सुरक्षा व्यवस्था को चेक किया है। प्रचारक वर्ग के आखिरी दिन सभी प्रचारक ने पढ़ा संघ का विस्तार पाठ

ग्वालियर के शिवपुरी लिंक हाईवे पर स्थित केदारपुर धाम में 31 अक्टूबर दीपावली के दिन से देश के अलग-अलग नगर व प्रांत से आए प्रचारक का विविध संगठन प्रचारक वर्ग का शुभारंभ हुआ था। जिसका समापन सोमवार को दोपहर के भोजन के बाद हो गया है। इस प्रचारक वर्ग में देश के 31 संगठन के 554 प्रचारक शामिल हुए हैं। साथ ही राष्ट्रीय स्वयंसेव संघ के सर संघचालक डॉ. मोहन भागवत धन तेरस के दिन ही ग्वालियर आ गए थे। यहां उन्होंने दीपावली का त्योहार भी मनाया है। ग्वालियर में आगमन के साथ ही आरएसएस प्रमुख का पदाधिकारियों के साथ बैठकों का दौर प्रारंभ हो गया था। प्रचारक वर्ग में सभी विविध संगठन प्रमुख से चर्चा में कार्य के दौरान आने वाली कठिनाइयां भी जानी गई। इन कठिनाईयों को दूर करने के साथ ही नई ऊर्जा के साथ अपने कार्य को फिर से प्रारंभ करने का संकल्प लेकर सभी प्रचारक सोमवार को ग्वालियर से रवाना होना शुरू हो जाएंगे। सोमवार को प्रचारक वर्ग के समापन के बाद भोजन कार्यक्रम में नगर के 50 से अधिक गणमान्य नागरिकों को आमंत्रित किया गया था। इन लोगों ने संघ प्रमुख से मुलाकात भी की है।

संपादकीय

हाथियों की मौत- कौन जिम्मेदार

टाइगर स्टेट के रूप में मशहूर मप्र के बांधवगढ़ में दस हाथियों की मौत और इसके पीछे वन विभाग द्वारा गले न उतरने वाला कारण बताना पूरे मामले की गहराई से जांच की मांग करता है। क्योंकि दस हाथियों की मौत कोई साधारण मामला नहीं है। डॉ मोहन यादव सरकार ने इस प्रकरण में तुरंत एक्शन लेते हुए बांधवगढ़ अभयारण्य के वन संरक्षक व क्षेत्र संचालक गौरव चौधरी तथा सहायक वन संरक्षक फतेहसिंह निनामा को सस्पेंड कर दिया है। साथ ही राज्य में हाथी टास्क फोर्स बनाकर बाकी वन्य प्राणियों के साथ उनको कैसे रखना चाहिए, कैसी सावधानी रखना चाहिए इसलिए दीर्घकालिक योजना बनाने का निर्णय लिया है। हैरानी की बात यह है कि शुरू में जब आठ हाथियों की मौत की खबर आई थी, तब वन विभाग ने जंगल में कोदो की फसल खाने हाथियों की मौत का बचकाना कारण बताया था। मृत हाथियों की प्रारंभिक जांच रिपोर्ट में साफ हो गया कि वैसा कुछ भी नहीं था। हाथियों के संरक्षण के लिए जिम्मेदार वन अधिकारियों का आलम यह है कि वन संरक्षक ने छुट्टी की आड़ में अपना फोन तक बंद कर लिया था। यह तो अंसवेदनशीलता की पराकाष्ठा है। यदि वन्य प्राणियों की अप्राकृतिक मौत भी वन अधिकारियों को विचलित नहीं करती तो वे मोटी तनख्वाह और भत्ते किस काम के ले रहे हैं। गौरतलब है कि मप्र के जंगलों में हाथी बहुत कम हैं। पिछली बार के आंकड़ों के मुताबिक राज्य में कुल 70 हाथी हैं और इनमें से भी 10 की असमय मौत हिला देने वाली है। बांधवगढ़ अभयारण्य में पहले आठ हाथी तथा फिर दो की और मौत हो गई। दो की मौत तो दीपावली के दिन हुई। मृत हाथियों में 9 मादा हाथी हैं। पोस्टमार्टम रिपोर्ट में खुलासा हुआ है कि इन में दो गर्भवती थीं। हाथियों का मरना और भी दुखद इसलिए है, क्योंकि हाथी धन की देवी लक्ष्मी का वाहन हैं। राज्य के जंगलों में हाथियों की अचानक मौत क्यों हो रही है और इसके पीछे कौन से कारण हैं, इसे राज्य सरकार ने गंभीरता से लेते हुए घटना की जांच के आदेश दिए हैं, जिसकी रिपोर्ट अभी आनी है। पहली नजर में यह तो स्पष्ट है कि हाथियों की मौत के पीछे वन विभाग की लापरवाही है। इस घटना की गंभीरता को देखते हुए सीएम ने प्रदेश के वन राज्य मंत्री दिलीप अहिरवार, अपर मुख्य सचिव अशोक वर्णवाल और राज्य वन बल प्रमुख पीसीसीएफ असीम श्रीवास्तव को उमरिया जाकर जल्द से जल्द अपनी रिपोर्ट देने के लिए कहा है। इस अवधि में घटना से जुड़े सभी बिंदुओं की लगातार जांच की जा रही है। इसी संदर्भ में बांधवगढ़ टाइगर रिजर्व के डिप्टी डायरेक्टर प्रकाश वर्मा का कहना है कि पोस्टमार्टम के बाद प्रथम दृष्टया फंगस लगे कोदो खाने से मौत होने का अंदेशा है। वैसे वन अधिकारियों की कोदो थ्योरी के पीछे कारण यह बताया जाता है कि विगत 30 जुलाई को जिन 4 हाथियों का पोस्टमार्टम किया गया था, उनके सैंपल में विषाक्तता की पुष्टि जबलपुर के स्कूल ऑफ वाइल्ड लाइफ फॉरेसिंक एंड हेल्थ ने की है। देश में हाथी आम तौर पर छत्तीसगढ़, झारखंड, ओडिशा, पश्चिम बंगाल, असम, कर्नाटक तथा केरल आदि राज्यों में पाए जाते हैं। मप्र में हाथी मुख्यतः छत्तीसगढ़ से आते हैं और यहीं डेरा डाल देते हैं। ऐसे में राज्य सरकार हाथियों के लिए बफर जोन बनाने पर भी विचार कर रही है। इसी संदर्भ में मुख्यमंत्री डॉ यादव ने झुंड से अलग हाथियों की रेडियो टैगिंग करने का भी निर्देश दिया है ताकि ट्रेकिंग कर उन पर नजर रखी जा सके। लेकिन ये सब आगे की बाते हैं, फिलहाल 10 हाथियों की मौत मप्र की वन्य जीव संपदा का भारी नुकसान है।

नजरिया

प्रमोद भार्गव

लेखक वरिष्ठ पत्रकार हैं।

अरबों खर्च मगर हाथी समस्या का समाधान नहीं

मध्य-प्रदेश और छत्तीसगढ़ के राष्ट्रीय उद्यानों से हाथियों की असामयिक मौत की खबरें आना कोई नई बात नहीं है। नई बात इन हाथियों के मौत के कारण से जुड़ी है। इस बार एक सप्ताह के अंतराल में दस हाथियों की मौत हुई है और इस मौत का ठीकरा वनाधिकारियों ने संक्रमित कोदो-कुटकी की खेतों में खड़ी फसल को खाने पर फोड़ दिया। अक्सर देखने में आया है कि उमरिया जिले के इस उद्यान में जब भी हाथी या बाघों की मौत होती है तो हाथियों की मौत को जहर खिलाना और बाघों की मौत को आपसी संघर्श में मरना बताकर वन विभाग अपने कर्तव्य की इतिश्री कर लेता है। इन मौतों के बाद हाथियों का गुस्सा उद्यान से 10 किमी दूर देवरा गांव के ग्रामीणों पर टूटता दिखा। 13 हाथियों के इस झुंड से तीन हाथी अलग हो गए थे। इन हाथियों में से एक ने देवरा, ब्राहे और बांका ग्राम में पहुंचकर तीन लोगों पर हमला बोला। इनमें से दो की मौत हो गई और एक घायल है। इस मदांध हाथी को वनकर्मियों ने पकड़ लिया है। वनाधिकारी बता रहे है कि यह हाथी उन्माद (मुस्थ) की अवस्था में पकड़ है। इस अवस्था का मतलब होता है कि हाथी प्रजनन काल से गुजर रहा है। इस अवधी में इसके षरीर में टेस्टास्टेरान का स्तर बढ़ने लगता है और यह आक्रामक हो जाता है। मुख्यमंत्री मोहन यादव ने दस हाथियों के मामले को गंभीरता से लिया और निगरानी में लापरवाही के बरतने के चलते आध्यारण्य के निदेशक गौरव चौधरी और प्रभारी सहायक वन संरक्षक अधिकारी फतेह सिंह को निलंबित कर दिया।

14 सदस्यीय चिकित्सकों के एक दल ने हाथियों के शव-विच्छेदन में पाया कि हाथियों के पेट में संक्रमित कोदो-कुटकी पाया गया है। इसे हाथियों ने जंगल से सटे खेतों में खड़ी कोदो-कुटकी की फसल को खाया था। यह कोदो-कुटकी माइकोटाक्सिन (कवक विष) बन गया था। बारिश के बाद प्रतिकूल मौसम के चलते कोदो-कुटकी सहित कवक विष उत्पन्न हो जाता है। अतएव संक्रमित फसल के सेवन से पशुओं में संक्रमण हो जाता है। इस संक्रमण का समय रहते इलाज न हो पाए और यह बढ़ता जाए तो प्राणी की मौत हो जाती है। यह मनुष्यों के लिए भी हानिकारक है। अब वन-विभाग ने उद्यान की

घटना के पहले कोदो खाने से हाथियों की मौतें हुई हों, ऐसी खबर नहीं आई ? क्या हाथियों ने पहली बार यह फसल खाई थी? हालांकि संक्रमित भोजन के नमूने देश की अन्य प्रयोगशालाओं में भेलने के साथ सेंटर फोर सेलुलर एंड मालिक्यूलर बायोलॉजी, प्रयोगशाला हैदराबाद से भी परामर्श लिया जा रहा है। एसआईटी और एसटीएसएफ के दल भी सभी संभवित पहलुओं पर जांच करेंगे।

भारत सरकार ने हाथी को दुर्लभ प्राणी व राष्ट्रीय धरोहर मानते हुए इसे वन्य जीव सरंक्षण अधिनियम 1972 की अनुसूची-1 में सूचीबद्ध करके कानूनी सुरक्षा दी हुई है। इसलिए जंगलों में हाथियों की संख्या निरंतर बढ़ रही है। हालांकि हमारी सनातन संस्कृति में हाथी सह-जीवन का हिस्सा है। इसीलिए हाथी पाले और पूजे जाते हैं। असम के जंगलों में हाथी लकड़ी ढुलाई का काम करते हैं। सर्कस के खिलाड़ी और सड़कों पर तमाशा दिखाने वाले मदारी इन्हें पढ़ा व सिखाकर अजूबे दिखाने का काम भी करते रहे हैं। साधु-संत और सेनाओं ने भी हाथियों का खूब उपयोग किया है। कई उद्यानों में पर्यटकों को हाथी की पीठ पर बिठाकर बाघ के दर्शन कराए जाते हैं। वन संरक्षण अधिनियम लागू होने के बाद अब ये केवल प्राणी उद्यानों और चिड़ियाघरों में ही सिमट गए हैं। बावजूद इन उद्यानों में इसकी हड्डियों और दातों के लिए खूब शिकार हो रहा है। हाथी के शिकार पर प्रतिबंध है, लेकिन व्यवहार में हाथी का शिकार करने वालों से लेकर आम लोग भी इस तरह के कानूनों की परवाह नहीं करते ? कर्नाटक के जंगलों में कुख्यात तस्कर वीरप्पन ने इसके दांतों की तस्करी के लिए सैंकड़ों हाथियों को मारा था। चीन हाथी दांत का सबसे बड़ा खरीददार है। जिन जंगलों के बीच में रेल पटरियां बिछी हैं, वहां ये रेलों की चपेट में आकर भी बड़ी संख्या में प्राण गंवाते रहते हैं।

मनुष्य के जंगली व्यवहार के विपरीत हाथियों का भी मनुष्य के प्रति क्रूर आचरण देखने में आता है। जैसा कि 10 हाथियों की मौत के बाद इसी झुंड के एक हाथी ने तीन ग्रामीणों पर जानलेवा हमला बोला है। बिहार, छत्तीसगढ़, मध्य-प्रदेश और कर्नाटक के जंगली हाथी अक्सर जंगल से भटककर ग्रामीण इलाकों में उत्पात मचाते रहते हैं। कुछ साल पहले छत्तीसगढ़ में हाथियों ने इतना भयानक उत्पात मचाया था कि यहां 22 निर्दोष आदिवासियों की जान ले ली थी। कर्नाटक और बिहार में इन हाथियों द्वारा मारे गए लोगों की संख्या जोड़ लें तो ये हाथी दस-बारह साल के भीतर करीब सवा-सौ लोगों की जान ले चुके हैं। शहडोल, रायगढ़, सरगुजा जिलों के दूर-दराज के गांवों में रहने वाले आदिवासियों के घरों में उतारी जाने वाली शराब को पीने की तड़प में भी हाथी गंध के सहारे आदिवासियों की झोंपड़ियों को तोड़ते हुए घुसते चले जाते हैं और जो भी सामने आता है उसे सूंड से पकड़ कर पटका और पेट पर भारी-भरकम पैर रख उसकी जीवन लीला खत्म कर देते हैं। इस तरह से इन मदांध हाथियों द्वारा हत्या का सिलसिला हर साल अनेक गांवों में देखने में आता रहता है। पालतू हाथी भी कई बार गुस्से में आ जाते हैं। ये गुस्से में क्यों आते हैं, इसे समझने के लिए इनके आचार, व्यवहार और प्रजनन संबंधी क्रियाओं व भावनाओं को समझना जरूरी है। हाथी मद की अवस्था में आने के बाद ही मदांध होकर अपना आपा खोता है। हाथियों की इस मनस्थिति के सिलसिले में प्रसिद्ध वन्य प्राणी विशेषज्ञ रमेश बेदी ने लिखा है कि जब हाथी प्रजनन की अवस्था में आता है तो वह समागम के लिए मादा को ढूंढता है। ऐसी अवस्था में पालतू नर हाथियों को लोगों के बीच नहीं ले जाना चाहिए। मद में आने से पूर्व हाथी संकेत भी देते हैं। हाथियों की आंखों से तेल जैसे तरल पदार्थ का रिसाव होने लगता है और उनके पैर पेशाब से गीले रहने लगते हैं। ऐसी स्थिति में महावतों को चाहिए कि वे हाथियों को भीड़ वाले इलाके से दूर बंदी अवस्था में ही रखें, क्योंकि अन्य मादा प्राणियों की तरह रजस्वला स्त्रियों से एस्ट्रोजन हार्मोन्स की महक उठती है और हाथी ऐसे में बेकाबू होकर उन्मादित हो उठते हैं। त्रिचूर, मैसूर और वाराणसी में ऐसे हालातों के चलते अनेक घटनाएं, घट चुकी हैं। ये प्राणी मनोविज्ञान की ऐसी ही मनःस्थितियों से उपजी घटनाएं हैं। वैसे हाथियों के ऐसे व्यवहार को लेकर काफी नासमझी की स्थिति है, मगर समझदारी इसी में है कि धन के लालच में मद में आए हाथी को किसी उत्सव या समारोह में न ले जाया जाए। जिस हाथी ने तीन लोगों पर हमला बोला है, वह उन्माद की अवस्था में ही था। उत्पाती हाथियों को पकड़कर बीस साल पहले मध्य-प्रदेश में 'ऑपरेशन खेदा' चलाया गया था। हालांकि पूर्ण वयस्क हो चुके हाथियों को पालतू बनाना एक चुनौती व जोखिम भरा काम है। हाथियों को बाल्यावस्था में ही आसानी से पालतू बनाया जा सकता है। हाथी देखने में भले ही सीधा और भोला लगे पर आदमी की जान के लिए जो सबसे ज्यादा खतरनाक प्राणी हैं, उनमें एक हाथी है और दूसरा है भालू है। हाथी उत्तेजित हो जाए तो उसे संभालना मुश्किल होता है।

फिलहाल इस तरह हाथी को पालतू बनाए जाने के उपाय बंद हैं। आखिर, जिस वन अमले पर अरबों रुपए का बजट सालभर में खर्च होता है, उसके पास इस समस्या से निपटने के लिए कोई कारगर उपाय क्यों नहीं है? अतएव हाथियों की मौत हो या वे उत्पात मचाएं, मरना ग्रामीणों का ही होता है। इस मामले में भी सीधे-सीधे गरीब ग्रामीणों की फसलें उजाड़ दी गईं। जबकि सावधानी नहीं बरतने के लिए किसी पशु-चिकित्सक, वनाधिकारी या वन रक्षक को दोशी नहीं ठहराया गया ?

मुद्दा

ललित गर्ग

लेखक स्तंभकार हैं।

राष्ट्रीय सुरक्षा के लिए खतरा है पंजाब में नशे का जाल

पंजाब में आतंकवाद ही नहीं, तरह-तरह के नशे एवं ड्रग्स के धंधे ने व्यापक स्तर पर अपनी पहुंच बनाई है, जिसके दुष्परिणाम समूचे देश को भोगने को विवश होना पड़ रहा है। पंजाब नशे की अंधी गलियों में धंसता जा रहा है, सीमा पार से शुरू किए गए इस छद्म युद्ध की कीमत पंजाब चुका रहा है, जिसने लंबे समय से पंजाब को जकड़ रखा है। पिछले दस महीनों में पंजाब पुलिस ने 153 बड़े ऑपरेटरों सहित 10,524 तस्करों को गिरफ्तार किया है। पंजाब ने स्थानीय तस्करों के साथ-साथ बड़े ड्रग नेटवर्क को लक्षित करने में महत्वपूर्ण सफलता हासिल की। हाल ही में 790 किलोग्राम हेरोइन, 860 किलोग्राम अफीम और अन्य नशीले पदार्थों के साथ-साथ 13 करोड़ रुपये से अधिक ड्रग मनी जब्त की गई है। इन आपराधिक अभियानों की वित्तीय बुनियाद पर प्रहार करते हुए नशे के कारोबार से जुड़े लोगों की 208 करोड़ रुपये से अधिक की संपत्ति जब्त की गई। हालांकि, अभी पर्दे के पीछे से काम करने वाले प्रमुख तस्करों को बेनकाब करने और कानूनन दंडित करने की सख्त जरूरत है। ड्रग की तस्करी और व्यापक रूप से नशे की लत पंजाब की सबसे उल्लेखनीय घातक सामाजिक-राजनीतिक चुनौती बन चुकी है जो कई प्रकार से पूरे देश की राष्ट्रीय सुरक्षा के लिए खतरा बनती जा रही है।

पाकिस्तान पोषित इस नशीले कारोबार की भयावहता का अंदाजा इस बात से लगाया जा सकता है कि इस साल सीमा सुरक्षा बल ने पंजाब की पाकिस्तान से लगती सीमा से 183 ड्रोन जब्त किए। जो वर्ष 2023 में बरामद 107 ड्रोन से कहीं अधिक हैं। पाक प्रायोजित यह तस्करी परिष्कृत एवं सुनियोजित तरीके से की जा रही है, जिसके खिलाफ सख्त कार्रवाई जरूरी है। खासकर, ऐसे संवेदनशील सीमावर्ती राज्य में इस समस्या की भयावहता को देखते हुए यह आवश्यक हो जाता है कि इसके खिलाफ एक ऐसी संपूर्ण लड़ाई छेड़ी जाए जिसमें कामयाब होने में अगर कई वर्ष भी लग जाएं तो उसे जारी रखा जाए। नशे की समस्या पिछले कई वर्षों के दौरान और बद से बदतर होती गई है और पिछले पंजाब में हुए विधानसभा चुनावों में यह एक बड़ा मुद्दा था। क्योंकि शहरों एवं ग्रामीण क्षेत्रों से हर रोज युवाओं की मौत की खबरें हो या विधवाओं का क्रंदन समूचा देश हिला है। कितनी मांओं की गोद उजड़ गई और कितने वृद्ध पिताओं की सहारे की लाठी टूट गई। नशीले पदार्थों का धंधा सीमाओं से होते हुए देश की रग-रग में पसरता गया है।

पंजाब में बिछा ड्रग्स का जाल जनजीवन के लिये बड़ी चुनौती है। पंजाब पाकिस्तान, अफगानिस्तान एवं ईरान के तथाकथित गोल्डेन क्रेसेंट से तस्करी कर लाई गई नशीली दवाओं का एक पारगमन बिंदु (ट्रांजिट प्वाईंट) तथा बाजार दोनों ही है। जहां अफगानिस्तान में उत्पादित हेरोईन की भारत-पाकिस्तान की 553 किमी लंबी और अवैध घुसपैठ की संभावनाओं से युक्त सीमा से तस्करी की जाती है, अफीम, अफीम की भूसी, चरस एवं हशीश जैसी अन्य नशीली दवाएं आसपास के देशों से आती हैं। भारत एवं पाकिस्तान सीमा पर अच्छी सड़कों का अभाव भी सीमा पर लगी बाड़ के नीचे सुरंगों की खुदाई के जरिये भारी मात्रा में मादक दवाओं की खेप के हस्तांतरण के काम को आसान बना देती हैं। पंजाब पुलिस की नशे से जुड़े आतंकवदी तंत्र की जांच करने की सीमित क्षमता है, खासकर, इस समस्या का मुकाबला करने के लिए आधुनिक प्रौद्योगिकीय एवं वैज्ञानिक उपकरणों की उसके पास कमी है। पंजाब में राजनीति और ड्रग्स का चोली दामन का संबंध है, बड़ी राजनीतिज्ञ पार्टियों की नशा माफिया एवं नशीले पदार्थों के तस्करों के साथ काफी मिलीभगत है और यही वजह है कि पंजाब 'नशीले पदार्थों की राजनीति' के युग से गुजर रहा है। इसलिये भी यह समस्या उग्र से उग्रतर होती जा रही है।

पंजाब में नशे की समस्या पर सुप्रीम कोर्ट भी चिन्ता व्यक्त करता रहा है, अपनी नाराजगी व्यक्त करते हुए उसने पंजाब सरकार को फटकार भी समय-समय पर लगाई है। पूर्व में सुप्रीम कोर्ट ने कहा, 'पंजाब में नशे की समस्या बढ़ती जा रही है। नकली शराब और नशीले पदार्थों को रोका जाना चाहिए। ऐसे तो युवा खत्म हो जाएंगे। गरीब लोग मर रहे हैं। पंजाब में हर गली में एक भट्टी होती है। अगर कोई चाहे तो देश को खत्म कर देगा। अगर बॉर्डर क्षेत्र सुरक्षित नहीं है तो कैसे चलेगा? नशा माफिया के आगे बेबस क्यों पंजाब सरकार?' सुप्रीम कोर्ट की चिन्ता पंजाब में नशे की गंभीर चुनौती को देखते हुए वाजिब है। जिसके खिलाफ व्यापक पैमाने पर योजनाबद्ध अभियान वक्त की जरूरत है। सरकारें लंबे समय से इसके विरुद्ध कार्रवाई की बात तो करती रही हैं, लेकिन जमीनी हकीकत में कम ही बदलाव नजर आया है। फिलहाल पंजाब में नशीले पदार्थों के खिलाफ जारी कार्रवाई आप सरकार की नई प्रतिबद्धता को दर्शाती है और सतही तौर पर नशे की खिलाफ सफलता के आंकड़े एक सराहनीय कार्रवाई को दर्शाते हैं, लेकिन इसके बावजूद समस्या की विकटता को देखते हुए ये आंकड़े पर्याप्त नहीं हैं। वक्त की जरूरत है कि लगातार भयावह होती स्थिति में पुलिस को इस खेल की बड़ी मछलियों को बेनकाब करके नशे के प्रवाह पर रोक लगानी चाहिए। इसके बाद बड़े नशा तस्करों के खिलाफ व्यापक स्तर का अभियान चलाना चाहिए। जिससे समाज में यह संदेश जाए कि कोई कितना भी ताकतवर व्यक्ति क्यों न हो, कानून से ऊपर नहीं है। साथ ही यह भी कि समाज विरोधी कार्यों में लिप्त होने के गंभीर परिणाम हो सकते हैं। ऐसे तत्वों को राजनीतिक संरक्षण देने वाली ताकतों को भी बेनकाब करने की जरूरत है। पंजाब सरकार की सख्त कार्रवाई का यह संदेश नशा माफिया को जाना जरूरी है कि इस काले कारोबार से जुड़े लोगों की दंडमुक्ति संभव नहीं है। इसके अलावा सीमा पार से चलाए जा रहे नशे के कारोबार के लिये पडोसी देश को भी कड़ा संदेश जाना चाहिए। नशे की तस्करी में तमाम आधुनिक साधनों का उपयोग किया जा रहा है। हालांकि, बीएसएफ ने पहल करते हुए एंटी-ड्रोन सिस्टम लगाए हैं। जिसके सार्थक परिणाम भी मिल रहे हैं। पंजाब में नशे की गंभीर चुनौती को देखते हुए सीमा सुरक्षा को फुलप्रूफ करने की दिशा में कदम उठाए जाने चाहिये। जिसमें उच्च तकनीक व विभिन्न एजेंसियों में बेहतर तालमेल की जरूरत है।

प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने भी पूर्व में 'ड्रग्स-फ्री इंडिया' अभियान चलाने की बात कहकर इस राष्ट्र की सबसे घातक बुराई की ओर जागृति का शंखनाद किया है। उन्होंने चिन्ता व्यक्त करते हुए कहा कि हमारे देश के युवा गुटका, चरस, गांजा, अफीम, स्मैक, शराब और भांग आदि के नशे में पड़ कर बर्बाद हो रहे हैं। इस कारण से वे आर्थिक, सामाजिक, मानसिक और आध्यात्मिक रूप से विकलांगता की ओर अग्रसर हो रहे हैं। विशेषतः पंजाब के युवा नशे की अंधी गलियों में धंसते जा रहे हैं, वे अपनी अमूल्य देह में बीमार फेफड़े और जिगर सहित अनेक जानलेवा बीमारियां लिए एक जिन्दा लाश बने जी रहे हैं पौरुषहीन भीड़ का अंग बन कर। नशे के ग्लैमर की चकाचौंध ने चिन्ताजनक स्थितियां खड़ी कर दी है। पाकिस्तान नशे के आतंक से अपने मनसूंबों को पूरा कर रहा है। चिकित्सकीय आधार पर देखें तो अफीम, हेरोइन, चरस, कोकीन, तथा स्मैक जैसे मादक पदार्थों से व्यक्ति वास्तव में अपना मानसिक संतुलन खो बैठता है एवं पागल तथा सुप्तावस्था में हो जाता है। ये ऐसे उत्तेजना लाने वाले पदार्थ हैं, जिनकी लत के प्रभाव में व्यक्ति अपराध तक कर बैठता है। मामला सिर्फ स्वास्थ्य से नहीं अपितु अपराध से भी जुड़ा हुआ है। कहा भी गया है कि जीवन अनमोल है। नशे के सेवन से यह अनमोल जीवन समय से पहले ही मौत का शिकार हो जाता है या अपराध की अंधी गलियों में धंसता चला जाता है, पाकिस्तान युवाओं को निस्तेज करके एक नये तरीके के आतंकवाद को अंजाम दे रहा है।

कबिरा टिकट जुटाइए

कटाक्ष

सुरेश कांत

लेखक व्यंग्यकार हैं।

चुनाव में पार्टी का टिकट मिल जाने से नेता के निर्जीव शरीर में भी जान आ जाती है और न मिलने से रही-सही जान भी निकल भागती है।

नगर के अत्यंत पुराने, शरीर से लाचार, फिर भी टिकट के लिए लार टपकाते रहने वाले नेताजी को कहीं से पता चल गया कि इस चुनाव में उन्हें टिकट शायद ही मिले।

परिणाम यह हुआ कि उन्होंने खाट पकड़ ली और लगने लगा कि उन्होंने अब दम तोड़ा, तब तोड़ा।

यह देख उनके सब चेले-चपाटे उनके इर्द-गिर्द जमा हो गए और उनसे प्रार्थना करते हुए बोले-हे राजनीति के भीष्म पितामह! पिछले चालीस-पचास बरसों से आप राजनीति के कीचड़ में मेंढक-से फुदकते रहे हैं। टिकट न मिलने पर विकट शैया पर लेटे आप हमें उसी तरह राजनीति में सफलता के गुरुमंत्र देते जाइए, जिस तरह भीष्म पितामह ने कौरव-पांडवों को दिए थे।

उनकी प्रार्थना स्वीकार करते हुए नेताजी मृत्यु-शैया पर से कराहते हुए बोले-मेरे प्यारे चेले-चपाटो, मेरी बात ध्यान से सुनो। राजनीति में सफलता की पहली सीढ़ी है आश्वासन। एक से एक असंभव आश्वासन देने और उनके पूरे न होने का ठीकरा दूसरों पर फोड़ने की पहले से तैयारी रखने में जो नेता जितना माहिर होता है, वह उतने ही बड़े पद को प्राप्त करता है। जैसे सौ दिन में महंगाई दूर करने का आश्वासन पूरा न होने का ठीकरा पिछली सरकार के कुशासन पर फोड़ना।

सुनकर सभी चेलों ने करतल-ध्वनि की।

लेकिन एक चेला कन्विंस नहीं हो पाया। उसने कोशिश पूरी की कन्विंस होने की, पर कंबख्त मन ने बगावत कर दी। पूछ ही बैठा-लेकिन उसे तो जुमला कहकर भी पिंड छुड़ाया जा सकता है न गुरुदेव?

गुरुदेव मरण-शैया पर भी नाराज हुए बिना नहीं रहे, बोले-वह आखिरी उपाय है नालायक! जब ठीकरा पिछली सरकार पर ठीक से न फूट पाए, तब उसका सहारा लेना पड़ता है, लेकिन उससे पिंड छूटता नहीं है बल्कि भांडा फूट जाता है और खिसियानी बिल्ली के खंभा नोचने जैसी हालत हो जाती है!

नेताजी की नाराजगी दूर करने के लिए बाकी चेलों ने उस चेले की खूब लानत-मलामत की और उसे मारपीटकर चुप करा दिया!

संतुष्ट होकर नेताजी ने आगे कहा-राजनीति में सफलता का दूसरा मंत्र है नेता-अफसर-सेठ गठजोड़। यह गठजोड़ एक-दूसरे का पूरक और महाफलदायी है।

सबने प्रशंसापूर्वक कहा-बहुत खूब गुरुदेव!

नेताजी आगे बोले-सफल होने के लिए नेता को हर वक्त गुंडे-पंडे-डंडे से भली-भांति लैस रहना चाहिए और जहां जिसकी जरूरत हो, उससे काम लेकर अपने रास्ते की अड़चनें दूर करनी चाहिए।

सबके मुंह से निकला-वाह, आपका जवाब नहीं गुरुदेव!

नेताजी ने कष्टपूर्वक कहा-लेकिन सबसे महत्त्वपूर्ण है टिकट का जुगाड़! टिकट से ही नेता को शक्ति मिलती है, उसकी साख बनती है। बिना उसके वह मरियल चूहे से भी ज्यादा लुंज-पुंज हो जाता है...कबिरा टिकट जुटाइए, बिन टिकटहि सब सून!

मरणासन्न नेताजी के मुंह से रहीम के दोहे की कबीर के नाम से यह पैरोडी सुन सब चेले धन्य हो गए।

स्वामी, सुबह सवेरे मीडिया एल.एल.पी. के लिए प्रकाशक एवं मुद्रक उमेश त्रिवेदी द्वारा श्री सिद्धीविनायक प्रिंटर्स, प्लॉट नं. 26-बी, देशबंधु परिसर, प्रेस कॉम्पलेक्स, जोन-1, एम.पी.नगर, भोपाल, म.प्र. से मुद्रित एवं डी-100/46, शिवाजी नगर भोपाल से प्रकाशित।

संपादक - उमेश त्रिवेदी

(सभी विवादों का न्याय क्षेत्र भोपाल रहेगा)

RNI No. MPHIN/ 2003/ 10923,
Ph. No. 0755-2422692, 4059111
Email- subahsaverenews@gmail.com

'सुबह सवेरे' में प्रकाशित विचार लेखकों के निजी मत हैं। इनसे समाचार पत्र का सहमत होना आवश्यक नहीं है।

व्यंग्य

किसानों की आय दोगुनी होने की मृग मरीचिका

सुदर्शन कुमार सोनी

लेखक व्यंग्यकार हैं।

सरकार मुद्दत से किसानों की आय दोगुनी करने की बात करती आ रही है। वो गरीबी, बेरोजगारी, मंहगाई हटाने की बातें भी मुद्दत से करती आ रही है। हटीं क्या ? व्यवस्था को मालूम है कि बातें करते रहना कार्य करते रहने की बनिस्बत आसान होता है। जैसे कि बरसात में गड्ढा में सड़क के नामोनिशान मिटने की तर्ज पर ही बातों की बरसात के गड्ढों में कार्य रूपी सड़क का नामोनिशान मिट जाता हैं।

राजनीति को लाभ का धंधा बनाए हुये व्यक्ति के मुख से खेती को लाभ का धंधा बनाने की बात खोटी लगती है। इसलिए यह खोटा सिक्का वायदे पर खरा नही उतर पाता। राजनीति को यदि हानि का धंधा बनाए हुए व्यक्ति (टार्च लेकर ढूंढना पड़ेगा) खेती के लाभ की बात करेगा तो भी कुछ समझ में आएगा। यानि राजनैतिज्ञ यदि व्यवसायी न होकर समाजसेवी हो जो कि साठ सत्तर के दशक में हुआ करता था। वैसे एक मायने में खेती तो बड़े किसान के लिए लाभ का ही धंधा है। वह ज्यादा से ज्यादा अनुदान कबाड़ खेती दूसरों के जिम्मे सौंप शहर में अपनी कोठी में शान से रह अन्य मुनाफे के धंधे करता है। इसलिए यदि कोई राजनेता खेती को लाभ का धंधा बनाने की बात कर रहा है तो उसे ऐतिहासिक भूल सुधार कर यह बोलना चाहिए कि वह छोटे व सीमांत किसानों के लिए खेती को लाभ का धंधा बनाएगा। हमें पता ही है कि एक समय देश के अधिकांश सेलेब्रिटी किसान भी हुआ करते थे। वो तो आयकर विभाग की पूछताछ ने उनका यह चस्का छुटा दिया।

सरकार का आश्वासनों का धंधा देखिए कि वह पन्द्रह साल से अधिक समय से खेती को लाभ का धंधा बनाने, किसानों की आय दोगुना करने की बात करती चली आ रही हैं। पन्द्रह साल में तो वैसे भी मंहगाई दर के कारण हजार रूपैया की कीमत एक तिहाई के बराबर ही रह जाती है। यदि सरकार को किसानों की चिंता है तो उसे अब यह कहना चाहिए कि वह किसानों को सारे बैकलाग का लाभ देते हुए उसकी आय को पांच गुनी करेगी। जब आप सरकारी कर्मियों व मजदूरों को मंहगाई भत्ते व अंतरिम राहत का बैकलाग का भुगतान करते हो तो किसानों को भी करने में कैसा परहेज।

किसान छोटा यहां का ध्यान रखें बड़ा धीरज वाला है। बड़े वाले का नाक पर गुस्सा होता है। वह उपज के सही दाम न मिलने पर उसे सड़क पर फेंक कर विरोध प्रकट कर सकता है। उसके मन की नही हुई तो वह छोटों को भी अपने साथ बहला फुसलाकर आंदोलन खड़ा करवा सकता है। छोटा उपज को फेकेंगा तो आखिर खायेगा क्या ?

कहा जाता है कि हर आदमी को हर समय आप बेवकूफ नही बना सकते। पर यह छोटे किसानों पर लागू नही होती उन्हे तो व्यवस्था हर समय बेवकूफ बनाने मे सफल रही हैं। वे कब तक बेवकूफ बनते रहेंगे यह भविष्य ही बताएगा। इन्हे किसान के नाम पर घुस गए प्रोफेषनल आंदोलनकारी भी बेवकूफ बना सकते हैं।

आय दोगुनी तो तब होगी जब कृषि आदानों की कीमत घटे और उपज की कीमत बढ़े। पर उपज से दोगनी खाद बीज कीटनाशक की बढ़ जाती है तो फिर आय कंहा से दोगुनी होगी। जब गाहे बगाहे कभी आलू तो कभी प्याज तो कभी टमाटर तो कभी धनिया के दाम आसमान छूते हैं तो आम आदमी का सरकार के प्रति क्रोध आसमां छूने लगता है। अरे भाई कृषि उपज के दाम बढ़ने पर कुछ तो पैसा किसान की जेब में जाएगा। तो जाने दीजिए। मंहगाई का रोना सब्जी भाजी अनाज दूध के दाम बढ़ने पर ही क्यों करते हैं। कार के दाम बढ़ते हैं। मल्टी प्लेक्स का टिकट बढ़ता है। मोबाईल फ्रिज व अन्य इलेक्टाउनिक आयटमों का बढ़ता है तो आपको कंही से मंहगाई नजर नही आती। वहां मोलभाव भी नही चलता।

आय दोगुना होना तो एक जिगसा पजल बन गई है। क्या ये इतनी कठिन है। बिल्कुल भी नही है बस किसान को मुखर हो यह पूछना होगा कि जब पन्द्रह साल में सांसद विधायकों व अधिकारी कर्मचारियों के वेतन भत्ते चार गुने हो गए तो उसे क्यों केवल दोगुने वो भी न प्राप्त होने वाले झुनझुने को पकड़ा दिया जाता है। सरकार की नीयत का प्रथम लिटमस टेस्ट तो किसान सम्मान निधि को दोगुना करने से हो सकता है। किसान यह विननती करता है कि दोगुने का यह राग बंद कर पन्द्रह सालों मे मंहगाई जमा पर ब्याज की दर को जोड़कर जो हिसाब बने अब उसकी बात की जाए। न केवल बात की जाए बल्कि उसको समय सीमा में अमलीजामा पहनाया जाना भी सुनिश्चित किया जाए। पर आपकी प्राथमिकता तो बहना टाईप योजनाओं में सीधे नगद नारायण बांटने की है। लगता है कि किसानों की आय दोगुनी करने का लक्ष्य मृग मरीचिका ही बना रहेगा।

खेल

शशांक दुबे

लेखक खेल समीक्षक हैं।

इस टीम की सर्जरी जरूरी है

आसन्न संकट को देखते हुए भारतीय टीम की कुछ-कुछ बातों को दुरुस्त करना समय की मांग है। सबसे पहली बात तो यह कि क्रिकेट में 'राम से बड़ा राम का नाम' वाली कहावत से हमें पार पाना होगा। निश्चित ही आज रोहित और विराट भारतीय क्रिकेट के स्थापित नाम हैं, लेकिन पिछले कई मैचों से ये बल्लेबाजी में नाकाम होते जा रहे हैं। हालात यह हो चुके हैं कि इनके बल्लेबाजी के लिए मैदान में उतरते ही हर गेंद पर यूं लगता है कि ये 'अब गए, तब गए'। जिस टीम के ओपनर और नंबर चार पर उतरने वाले बल्लेबाजों की असफलता गारंटीड हो, उससे विशाल स्कोर की अपेक्षा कैसे की जा सकती है? फिलहाल तो इस समस्या का एकमात्र समाधान यही है कि जिस तरह ऑस्ट्रेलिया क्रिकेट कंट्रोल बोर्ड पहले खिलाड़ी चुनता है, फिर कप्तान तय करता है, उसी तरह पहले हम खिलाड़ी चुनें, फिर कप्तान। निश्चित ही ऐसे में इन दो खिलाड़ियों के लिए कोई गुंजाइश नहीं होगी।

क्रिकेट में हार-जीत तो लगी रहती है, लेकिन हाल ही में सम्पन्न भारत-न्यूजीलैंड टेस्ट शृंखला में हमारी हार ने सभी भारतीय क्रिकेट प्रेमियों को स्तब्ध कर दिया है। पिछले कई सालों से टेस्ट क्रिकेट में हमारी टीम के साथ प्रायः ऐसा होता रहा है कि शृंखला के पहले मैच की शुरुआती पारी में भारतीय पारी अचानक लड़खड़ा गई, बोर्ड पर सौ रन टँगने से पहले उसके चार-पाँच विकेट गिर गए, लेकिन हर बार निचले क्रम के दो तीन खिलाड़ियों ने दम लगाकर हमारी लाज बचा ली। ज्यादा पुरानी बात नहीं है। दो महीने पहले ही बांग्लादेश के साथ पहला टेस्ट खेलते हुए पहली पारी में भारत के 96 रन पर 4 विकेट गिर गए थे, लेकिन बाद में अश्विन-जडेजा की 199 रन की साझेदारी ने भारत की पारी को संभालते हुए 376 के स्कोर तक पहुंचा दिया था। टेस्ट क्रिकेट के पुराने मुरीदों को भारत-ऑस्ट्रेलिया शृंखला का 2001 का वह ऐतिहासिक कलकत्ता टेस्ट मैच तो याद ही होगा, जब पहली पारी में 274 रन से पिछड़कर फॉलो ऑन खेलते हुए वी वी एस लक्ष्मण और राहुल द्रविड़ की अद्भुत पारियों की बदौलत भारत ने 657/7 का पहाड़ जैसा स्कोर खड़ा कर ऑस्ट्रेलिया को हरा दिया था।

कहने का आशय यही है कि जब कभी भारतीय बल्लेबाजी लड़खड़ाई है अचानक एक-दो खिलाड़ियों ने आकर उसे सम्हाल लिया है। लेकिन अफसोस कि भारत-न्यूजीलैंड के बीच हालिया सम्पन्न हुई शृंखला में ऐसा चमत्कार नहीं हो सका। पहले टेस्ट की पहली पारी में 46 रन पर आउट होकर शर्मनाक तरीके से हारने का जो सिलसिला शुरू हुआ था, वह आखिरी टेस्ट मैच की आखिरी पारी में 121 रन पर आउट होने के साथ खत्म हुआ। जो लोग भारत को विश्व टेस्ट चॅम्पियनशिप के फाइनल में पहुंचाने के लिए न्यूजीलैंड जैसी 'कथित' कमजोर टीमों के साथ 3 के बजाए 5 टेस्ट मैच खेलने की वकालत कर भारत की एंट्री सुनिश्चित कर लेना चाहते थे, निश्चित ही उन दीवानों ने यही सोचकर राहत की सांस ली होगी कि कम से कम फिलहाल भारत अब न्यूजीलैंड से तो हारने नहीं जा रहा है। लेकिन इस हार से अब हम कब तक बचेंगे और कैसे बचेंगे? हफ्ते भर बाद ही हम ऑस्ट्रेलिया पहुँच रहे हैं और अपने घर में भारत से लगातार 2 टेस्ट शृंखलाएं हारे बैठी ऑस्ट्रेलियाई टीम यही सोच सोच का अपने हथियार माँझ रही होगी कि अबकी बार इन्हें 5-0 से निपटाना है। क्या टेस्ट क्रिकेट में अब भारत का पराभव शुरू हो चुका है? भारतीय टीम के मौजूदा फॉर्म को देखते हुए दबी जबान से यह प्रश्न अब कई कोनों से उठ रहा है।

आसन्न संकट को देखते हुए भारतीय टीम की कुछ कुछ बातों को दुरुस्त करना समय की मांग है। सबसे पहली बात तो यह कि क्रिकेट में 'राम से बड़ा राम का नाम' वाली कहावत से हमें पार पाना होगा। निश्चित ही आज रोहित और विराट भारतीय क्रिकेट के स्थापित नाम हैं, लेकिन पिछले कई मैचों से ये बल्लेबाजी में नाकाम होते जा रहे हैं। हालात यह हो चुके हैं कि इनके बल्लेबाजी के लिए मैदान में उतरते ही हर गेंद पर यूं लगता है कि ये 'अब गए, तब गए'। जिस टीम के ओपनर और नंबर चार पर उतरने वाले बल्लेबाजों की असफलता गारंटीड हो, उससे विशाल स्कोर की अपेक्षा कैसे की जा सकती है? फिलहाल तो इस समस्या का एकमात्र समाधान यही है कि जिस तरह ऑस्ट्रेलिया क्रिकेट कंट्रोल बोर्ड पहले खिलाड़ी चुनता है, फिर कप्तान तय करता है, उसी तरह पहले हम खिलाड़ी चुनें, फिर कप्तान। निश्चित ही ऐसे में इन दो खिलाड़ियों के लिए कोई गुंजाइश नहीं होगी। यूं भी कोहली और रोहित सीनियर खिलाड़ी हैं, इन्हें स्वयं आगे बढ़कर चयन समिति से उन्हें ड्रॉप करने का अनुरोध करना चाहिए और फिर मौजूदा रणजी ट्रॉफी मैचों में खेलते हुए फॉर्म हासिल करने का प्रयास करना चाहिए। यहाँ यह भी उल्लेखनीय है कि हमारे पिछले ऑस्ट्रेलिया दौरे पर सबसे सशक्त बल्लेबाजी करने वाले चेतेश्वर पुजारा फिलहाल टीम से बाहर हैं और रणजी ट्रॉफी में बढ़िया प्रदर्शन करते हुए अपना खोया फॉर्म हासिल कर चुके

हैं। उनके नाम पर विचार किया जाना चाहिए।

भारतीय टीम की एक और कमजोरी है कप्तान और मैनेजर द्वारा टेस्ट क्रिकेट में टी 20 शैली के ऊटपटाँग प्रयोग करना। भारत-न्यूजीलैंड शृंखला के तीसरे टेस्ट मैच में दोनों ओपनर आउट होने के बाद चौथे नंबर पर नियमित बल्लेबाज कोहली को भेजने की बजाए नाइट वॉचमैन के रूप में सिराज को भेजना एक मूर्खतापूर्ण फैसला था। नाइट वॉचमैन के रूप में ऐसे खिलाड़ी को भेजा जाता है, जो भले नियमित बल्लेबाज न हो, लेकिन वक्त आने पर कुछ देर बैटिंग कर सकता हो। अब जिस खिलाड़ी को बल्ला ही पकड़ना नहीं आता, भला वह विकेटों का पतन कैसे रोकेगा? सिराज तो शून्य पर आउट हुआ ही, लय बिगड़ जाने की वजह से कोहली भी रन आउट हो गया। इसी मैच में सरफराज को पंत और जडेजा के बाद भेजने के पीछे का तर्क भी समझ से परे था।

तीसरा महत्वपूर्ण पहलू है स्पिन का सामना करने में हमारे बल्लेबाजों की कमजोरी। किसी जमाने में भारतीय टीम को 'घर में शेर, बाहर ढेर' कहा जाता था, क्योंकि इसके बल्लेबाज घर पर अच्छी स्पिन खेलकर स्पिन फ्रैंडली पिच तैयार कर यहाँ जीत जाते थे। अब यहाँ स्पिन फ्रैंडली पिच तो तैयार हो जाती है, लेकिन इस पर खेलने वाले भारत में ही विशेषज्ञ बल्लेबाज नहीं के बराबर रह गए हैं। यदि यही खिलाड़ी रणजी ट्रॉफी में नियमित रूप से खेले होते तो न्यूजीलैंड के अपेक्षाकृत साधारण स्पिन आक्रमण के सामने घुटने न टेके होते। लेकिन स्पिन गेंदबाजों के सामने हमारे बल्लेबाजों की असफलता और हमारे रेकॉर्डधारी स्पिनरों के सामने न्यूजीलैंड के बल्लेबाजों की सफलता ने 'जिसका जूता उसी का सर' साबित कर दिया। उल्लेखनीय है कि स्पिन के सामने भारतीय खिलाड़ियों की कमजोरी के चलते अब क्रिकेट खेलने वाले सभी प्रमुख देश अपनी टीम में स्पिनरों को शामिल कर रहे हैं।

इन बातों को देखते हुए भारतीय टीम को अरजेंट बेसिस पर सर्जरी की आवश्यकता है। इस सर्जरी में तीन ऑपरेशन सबसे बड़े हैं। पहला रोहित और कोहली को टीम से बाहर कर रणजी ट्रॉफी में खेलने के लिए भेजना; दूसरा रणजी ट्रॉफी में अच्छा फॉर्म दिखा रहे पुजारा को टीम में शामिल करना; और तीसरा, वर्तमान में ऑस्ट्रेलिया में खेल रही इंडिया 'ए 'टीम में से फॉर्म में चल रहे बल्लेबाज साईं सुदर्शन और गेंदबाज मुकेश कुमार को टीम में शामिल करना। तभी भारतीय टीम ऑस्ट्रेलिया में पाँच-पाँच दिन तक प्रतिद्वंद्वी से प्रतिरोध कर पाएगी। वरना यही हाल रहा तो भारत वेस्ट इंडीज की तरह एक ऐसी टीम बन कर रह जाएगी, जो हर सीरीज के बाद अपने सुहाने अतीत को याद कर 'बात निकली तो हर एक बात पे रोना आया' गाती रहती है।

भारत रत्न भूपेन हजारिका-लाखों दिलों को छूने वाला कलाकार

पुण्यतिथि पर विशेष

यशवंत गोरे

लेखक स्तंभकार हैं।

आज उस विलक्षण और बहुमुखी प्रतिभा को स्मरण करने का दिन है जो स्वयं गीतकार , संगीतकार, अभिनेता और गायक भी था। जिसने हिन्दी, बांग्ला और असमिया भाषाओं के साथ कई भारतीय भाषाओं में गीत गाए।

भारत रत्न भूपेन हजारिका की आज पुण्यतिथि है (5 नवम्बर 2011) है। भूपेन हजारिका का जन्म 8 सितंबर, 1926 को असम के तिनसुकिया जिले के सदिया गांव में हुआ था। पिता नीलकांत और माता शांतिप्रिया की 10 संतानों में सबसे बड़े भूपेन हजारिका बहुमुखी प्रतिभा संपन्न कलाकार थे। उन्हें संगीत के प्रति लगाव उनकी माता के कारण हुआ, जिन्होंने उन्हें पारंपरिक असमिया संगीत की शिक्षा उन्हें जन्म घुट्टी के रूप में दी। उन्होंने मात्र 10 वर्ष की उम्र में ही पहला गीत लिखा और गाया भी। असमिया फिल्म 'इंद्रमालती' के लिए 1939 में बारह वर्ष की आयु में काम भी किया।

भूपेन हजारिका ने करीब 13 साल की आयु में तेजपुर से मैट्रिक की परीक्षा पास की। आगे की पढ़ाई के लिए वह गुवाहाटी गए। 1942 में गुवाहाटी के कॉटन कॉलेज से इंटरमीडिएट किया। 1946 में उन्होंने बनारस हिंदू विश्वविद्यालय से राजनीति विज्ञान में एमए किया। इसके बाद न्यूयॉर्क के कोलंबिया विश्वविद्यालय से पीएचडी की।

भूपेन हजारिका के गीतों ने लाखों दिलों को छूआ। 'दिल हूम् हूम् करे' और 'ओ गंगा तू बहती है क्यों' जैसे अनेक कर्णप्रिय गीत जिस संगीत प्रेमी ने सुने उनकी असरदार आवाज का जादू उनके दिलों पर नहीं चला हो वह इस बात से इंकार नहीं कर सकता। भूपेन गीत, संगीत और गायन के अलावा वह असमिया भाषा के कवि , फिल्म निर्माता, लेखक और असम की संस्कृति के संगीतकार थे। उन्हें दक्षिण एशिया के श्रेष्ठ जीवित सांस्कृतिक दूतों में से एक माना जाता है। उन्होंने फिल्म 'गांधी टू हिटलर' में महात्मा गांधी का पसंदीदा भजन 'वैष्णव जन तो ' गाया था।

भारत सरकार ने उन्हें देश के सबसे बड़े सम्मान ' भारत रत्न ' से उनकी प्रतिभा और सांस्कृतिक सेवा के लिए 2019 में सम्मानित किया। इसके आलावा भूपेन दा को 1975 में सर्वोत्कृष्ट क्षेत्रीय फिल्म के लिए राष्ट्रीय पुरस्कार, 1992 में सिनेमा जगत के सर्वोच्च पुरस्कार 'दादा साहब फाल्के' से भी सम्मानित किया गया। 2009 में 'असोम रत्न' और संगीत नाटक अकादमी सम्मान, 2011 में पद्म भूषण जैसे कई प्रतिष्ठित पुरस्कारों से सम्मानित किया गया। भूपेन दा अब भले वह हमारे बीच नहीं हैं, लेकिन संगीत प्रेमियों के दिलों में वह अपने गीतों के जरिये सदा जीवित रहेंगे।

सेलेब्रिटी बनने के शॉर्टकट्स

वक्रोक्ति

शांतिलाल जैन

लेखक व्यंग्यकार हैं।

अगर आप सेलेब्रिटी बनने के शॉर्टकट्स खोज रहे हैं तो यह पेशकश खास आपके लिए है. ग्यारंटीड सक्सेज सिरीज़ में आज हम लाए हैं कुछ जाने-परखे उपाय...

पहला शॉर्टकट चमकदार, चिकने, रंगीन पन्नों से होकर गुजरता है. मीडिया तक पहुँचते हुए आपको कुछ बकवास करनी है. किसी मशहूर हस्ती की शान में गुस्ताखी कर देना है. खजुराहो की प्रतिमाओं टाईप के कुछ पोज देने हैं. देह पर से कपड़ों का बोझ कम करना है और मन से नैतिकता का. पद्मिनी कोल्हापुरे ने जो नज़ीर कायम की है उसे निभाते रहिए. जब आप किसी प्रिंस चार्ल्स को जबरन चूम रही होंगी, सफलता आपके कदम चूम रही होगी. अगर आप मर्द हैं तो भी राह बहुत अलग नहीं है. नायक खजुराहो के प्रस्तर खण्डों में ही नहीं उतरते जॉन अब्राहम सी देहयष्टि में भी उभरते हैं. बस एक बार सिक्स पैक एब में ढ़ली देह 'जीक्यू इंडिया' के कवर पेज पर आ जाए कि आप हुए फुलटू सेलेब्रिटी.

कुकुर झौं झौं कुत्तों में ही नहीं होती, सेलेब्रिटीज में भी होती है. डॉग-डॉगिनी की नॅशनल फाईट का मुज़ाहिरा बिग बॉस के घर से निकलता है तो हमारे आपके घरों के ड्राईंग रूम में उतरता है. कुकुर झौं झौं सेलेब्रिटी स्टेटस में सीमेंट लगाती है. तो नियमित अंतराल पर पिछली से अधिक गिरी हुई कोई हरकत कीजिए और अपने लिए दीवानगी का बढ़ता आलम देखिए. है ना बेहद आसान और शॉर्टकट भी.

एक शॉर्टकट सरकारी बैंक की तिज़ोरी के रास्ते से हो कर भी गुजरता है. फैन्स आपसे क्या चाहते हैं ? क्रूज़ की डेक पर मौज उड़ाते बालाओं संग आपका एक रंगीन कैलेण्डर. इनफ़. लोन का माल खुसा हो अंटी में तो पार्टी समंदर के अन्दर भी की जा सकती है और आकाश के ऊपर भी. पूरे पेज थ्री पर बस आप ही आप. पक्षी तो आप किंगफिशर प्रजाति के हैं ही, खतरा भाँपकर उड़ जाईए सात समंदर पार. फिरंगियों के देश में लेंडिंग के बाद आर्यावर्त की दिशा में पैर करके सोईएगा भी नहीं. सेलेब्रिटी आप वहाँ भी बने रहेंगे.

सेलेब्रिटी बनने का एक और शॉर्टकट अपराधी बन जाना भी है या फिर आप बाबाजी बन जाएँ. एक ही बात है. सुर्ख़ियों में बाहर भी, सुर्ख़ियों में अन्दर भी. दोनों में इंसान को बैकुंठ के लिए रवाना करने की क्षमता होती है. दोनों अपना अपना नेटवर्क जेल के अन्दर रह कर ऑपरेट करते हैं. इस मेथड में आप को छुरा लेकर खुद नहीं निकलना पड़ता, रिमोट से मरवा सकते हैं. जेल पूरब के देश में, वध पश्चिम के देश में, और सुर्ख़ियाँ अंतर्राष्ट्रीय मीडिया में. या फिर परोल, फर्लो में कारा से मुक्ताकाश मंच तक कथा, दर्शन, आशीर्वाद और फिर कारा में लौट जाने का यात्रा करते रहिए. सुर्ख़ियों को आपका इंतज़ार रहता है.

शॉर्टकट एक और भी है मगर उसके लिए फादर का दी अमीरेस्ट होना जरूरी है. ब्याह में पप्पा के चार हज़ार करोड़ लगाकर मीडिया में महीनों दीवानगी पैदा की जा सकती है. शादी बेगानी अब्दुल्लाह बेशुमार. बहरहाल, आप हर दिन रंगीन तस्वीरों में पेज थ्री पर नमूदार हो सकते हैं. अखबार का हर पन्ना पेज थ्री. ये बात और है कि चलें तो बदन से चर्बी झरे और ज़ेब से मुद्राएँ. न काया संभाली जा रही हो न माया मगर इनायत कुबेर की हो तो सेलेब्रिटी बनते देर नहीं लगती. धन के देवता से बड़ी बड़ी सेलेब्रिटीज को अँगुलियों पर नचाने का वरदान पा जाते हैं आप. 'ये चमक, ये दमक, फूलवन मा महक सब कुछ, सरकार, तुम्हई से है' गाते-ठुमकते स्टार-स्टारनियाँ. ठुमकता तो ताकतवर निज़ाम भी है, उसके सामने आपको गुनगुनाते रहना है - 'मैं कहाँ जा कर सौदा बेचूँ? मेरा सब व्यापार तुम्हई से है.' इसके बाद सब कुछ आसान है.

चलिए सेलेब्रिटी तो बन लिए आप. एक सावधानी रखिएगा, आपको कब, कहाँ और क्या नहीं बोलना है. कभी निज़ाम की ज्यादतियों पर किसी नामचीन को कुछ कहते सुना है आपने? किसान आंदोलन हो, पहलवानों का प्रदर्शन हो, श्रमिकों की छटनीं हो, बुलडोज़र का कहर हो, मॉब लिंचिंग हो, मणिपुर हो, अंडमान हो, बेरोज़गारी हो, महंगाई की मार हो, मुँह पर लगी ज़िप खोलिएगा नहीं. निवेश आपने सेलेब्रिटी बनने के लिए किया है संवेदनशील मुद्दों पर मुँह खोलकर डुबाने के लिए नहीं.

पके धान के खेत का स्वाद और सौंदर्य

विचार

प्रमोद दीक्षित मलय

लेखक शैक्षिक संवाद मंच के संस्थापक तथा लोक दर्शन यात्रा के संयोजक हैं।

हविष्यान्न में परिगणित धान (चावल) देवताओं के भोग-प्रसाद का अनिवार्य घटक है तो यज्ञ अनुष्ठान के ऋत्विज और होता के आहार का हिस्सा भी। यज्ञवेदी में अग्निदेव को समर्पित हवन समिधा में अक्षत, तिल और जौ का सहभागी है तो अतिथि-अभ्यागत के स्वागत सत्कार में प्रयुक्त रोली, चंदन, हल्दी का अभिन्न मीत भी। आमजन की दैनंदिन क्षुधापूर्ति का सहज साधन है तो पशु-पखेरू का प्रिय भी। धान स्नेह, सम्मान एवं आदर का प्रतीक है और सात्विक प्रेम का प्रकटीकरण भी। तभी तो बालसखा द्वारकाधीश श्रीकृष्ण को सुदामा चावल भेंट करते हैं। यह चावल अर्थात् धान सामाजिक समरसता का द्योतक है और सद्भाव की निर्मल प्रेमधारा का प्रतिबिम्ब भी। नववधु की पाक-कला का परीक्षण 'खिचड़ी रांधने' से ही होता है और रोगी का पथ्य भी खिचड़ी ही है, जिसमें चावल की प्रतिष्ठा लोक प्रशंसित है। धान वैदिक साहित्य में यव (जौ) के साथ धान्य के रूप में महिमामंडित है। वास्तव में धान लोक की श्रम साधना की पराकाष्ठा है, कृषि कर्म का कंचन किरीट है। धान रोपती औरतें दरअसल वसुधा के आर्द्र हृदय पटल में जीवन का संगीत रोपती हैं, स्वप्नों का सुखद संसार रचती हैं। वे भूख से मुक्ति का छंद लिखती हैं और घर-खलिहान की समृद्धि की पगडंडी बुनती हैं। घुटनों तक कीचड़ में धंसी औरतें नीले वितान के नीचे धान के शिशु रोपती हैं, प्रौढ़ होते ही जिनके ललाट पर काल पुरुष स्वर्णिम आभामय दानों का तिलक कर देता है। लोक के लिए धान प्राण हैं, जीवन का आधार हैं तभी तो कवि केदारनाथ सिंह कहते हैं, धन उगेंगे कि प्रान उगेंगे/उगेंगे हमारे खेत में/ आना जी, बादल जरूर। धान परम पावन है, तभी तो विवाह मंडप में कन्या पक्ष द्वारा लावा (भुना धान) परसा जाता है और विदाई में कन्या सूप में रखे चावल अपने सिर से पीछे की ओर बिखेरती पितृ-सदन की सुख-समृद्धि की कामना करती है।

पके धान के खेतों का सौंदर्य लुभाता है, निकट बुलाता है। हरित-पीत तन पर सूर्य रश्मियां पड़ते ही मानो पूरे खेत पर आसमान से सुनहरी चादर उतर आती है। मीठे दूधियां दानों का स्वाद चखने गौरैया-तोते मंडराने लगते हैं। धान के फूलों और कच्ची हरी बालियों का रसपान करती मधुमक्खियां सुनहरी चादर पर गुंथी लाल-भूरी मणियां प्रतीत होती हैं और भौंरों की मधुर मृदुल गुनगुनाहट संगीत का स्वर साधते साधक का मनमोहक आलाप का आभास देती है। क्षितिज पर नीला अम्बर मानो पीत वसना वसुधंरा के कपोल पर अपने प्रेम का अंकन कर रहा है। दूर-दूर तक फैले कच्चे-पके हरे-पीले धान के खेत मन मोहते हैं, पथिकों का चित्त चुराते हैं। लगता है कि मानो कृषक के स्वागत में प्रकृति ने बहुरंगी कालीन बिछा दिया हो। मेड़ों पर उगी हरी अरहर, ज्वार-बाजरा के भुट्टे, मूंग-उरद की अंगुलियों सी लम्बी-पतली फलियां प्रकृति सुंदरी की पीली साड़ी के किनारी पर टंके बेल-बूटे ही प्रतीत होते हैं तो बीच खेत में खड़े आम-महुआ के वृक्ष और उनमें बसे पक्षी वृंद

साड़ी के मध्य में चित्र सा उभर आते हैं। यह लोक का अनिंद्य सौंदर्य है जिसे लख नयन तृप्त हो जाते हैं और अतृप्त भी। यह अतृप्ति नया रचने-गुनने की प्रेरणा है, स्वीकृति है।

वर्षों बाद दीपावली पर गांव जाना हुआ है। पिछले दो दिन से घर-परिवार और गांव वालों से गले मिले, सुख-दुख बांटे। अमावस की गहरी अंधेरी रात दीपों से जगमगा रही है, पटाखों की कर्कश ध्वनि से छह महीने का पालतू कुत्ता रह-रहकर मुन्नू भौंकने लगता है और एक पखवारा पहले जन्मी बछिया कान खड़े कर रंभाने लगती है। यह त्योहार का व्यवहार उनके लिए पहला अनुभव है। सियार-लोमड़ी की आवाजें आज कहीं खोई-सोई सी हैं। ऐसी उजालों भरी रात में मेरे मन में एक सन्नाटा पसरा है। एक खालीपन है। कोई सवाल अदहन सा खदबदा रहा है। लगता है कोई बुला रहा। कोई है जो मन की डोर को हौले-हौले अपनी ओर खींच रहा है। कौन है वह, और सहसा जैसे समाधान मिल गया। अरे! ये तो अपने पके धान के महमहाते खेत है जो मन के द्वार पर दस्तक दे रहे थे, मिलने को लालायित, आतुर और उत्सुक। मस्तिष्क में अब शांति है और भोर में ही खेतों की ओर जाने का स्वप्न उगने लगा है। अटारी के बाहर झांक कर देखता हूं, रात बूढ़ी हो गयी है, रात का कालापन सिलेटी होने लगा है। पूरब के नीलेपन में लालिमा पसरने लगी है और धीरे-धीरे धानी रंग फलक पर चढ़ने लगा है। बहुत दूर आकाश में एक केसरिया लाल गोला चेहरा नीले वस्त्रों के बीच उभरने लगा है। चिड़ियां घोंसले छोड़ खेतों की ओर उड़ चली हैं और मैं भी। मेरे हाथ में लाठी है और कदम खेतों की ओर बढ़े जा रहे हैं, 'मुन्नू' भी पीछे लग गया है। अरे, इतना जल्दी खेतों के मध्य आ खड़ा हुआ हूं, किंतु किंकर्तव्यविमूढ़ हूं। किधर जाऊं, किससे पहले मिलूं, धान के खेत मेरी बांह पकड़े अपनी ओर खींच रहे हैं। साथ चल रहे बटाईदार काका हाथ के इशारे से बता रहे हैं कि इस खेत में मुसकन है, इसमें सोनम, उसमें शरबती तो पीपल के नीचे वाले में डंकल की नयी किसिम। पर कहीं धान की महक नहीं है। यूरिया, डीएपी एवं जिंक उर्वरक धानों की सुगंध और स्वाद को लील गये हैं। खेतों से गुजर रहा हूं। हरी घास के कोमल कालीन पर टंके मोती चहलकदमी से टूट-बिखर रहे हैं। अरुण रश्मियां इन मोतियों के अंदर इंद्रधनुष रच रही है। मैं लपककर तर्जनी में ओस की एक बूंद उठा लेता हूं। इंद्रधन्वा मेरी अंगुली की पोर पर झिलमिलाने लगा है और स्मृतियों में मेरे सामने बचपन के सुगंध बिखेरते खेत लहलहाने लगे हैं। लगभग 35-40 वर्ष पहले धान की फसलों में विविधता थी। दुधराज, भैंसलोट, मुसकन, लोचई, काला सुदास, तुलसी भोग, काला नमक, विष्णु भोग, नागकेसर, गांजाकली, करगा, बांसमुखी, गल्हरी आदि धान मेंड़ से गुजरने पर केवल सुगंध से पहचान में आ जाते थे। पर अब ये लुप्तप्राय हैं। उर्वरक और कीटनाशकों का प्रयोग बिल्कुल नहीं था। गोबर की देशी खाद से खेत उपजाऊ और जल धारण में समर्थ थे। खेत में मकड़ी बहुत थीं और जाले भी, उन जालों में कीट फंसते तो मकड़ियों और चिड़ियों का आहार बनते। हर धान का अपना गुण-धर्म था और पकने का निश्चित समय भी। अगैती पकने वाली किस्में दीपावली तक पक जातीं और किसान सहेदा काटकर पछार लेता। पशुओं को हरा मुलायम चारा मिलता और घर-आंगन में धान सूखने को फैलने लगता। मिट्टी के कोनैता में सूखे धान दर कर बगरी बना महिलाएं आंगन के कोने में गड़ी कांड़ी में मूसल से बगरी कूट-फटक भूसी-कना निकाल मीठे भूरे मटमैले चावल की गुलाथी पकातीं।

दूध के साथ खाने में बहुत मीठा लगता। तब मेहमान केवल गुलाथी खाने के लिए चार-पांच दिन ठहरे रहते। दूध-गुलाथी खाये बिना वर्षों गुजर गये हैं किंतु स्वाद जिव्हा पर बसा हुआ है। अचानक मेरा स्वप्न टूटा, देखा कि धान के खेत से एक जंगली बिल्ली निकली और मेरे सामने से एक चूहा दबोच दूसरे खेत के धान बीच घुस गयी। तभी मुझे धान के बीजों को बचाने के लिए काम कर रहे पद्मश्री बाबूलाल दाहिया (सतना, म.प्र.) स्मरण आये, वे जानकारी देते हैं, आजादी से पहले धान की एक लाख दस हजार किस्में थीं, किंतु अब मुश्किल से आठ हजार ही बची हैं और उनमें भी हर वर्ष कुछ किस्में मर रही हैं।? मेरे पास दो सौ प्रकार के धान बीज उपलब्ध हैं।

मैं वर्तमान में सुगंध-स्वाद हीन धान के खेतों के बीच खड़ा सोच रहा हूं कि इस प्रगति के नाम पर क्या-क्या खो दिया है। दूर तक फैले एक ही किस्म के धान के खेत मुझे नीरस, स्पंदनहीन और अनाकर्षक दिख रहे थे। अब गांवों में कोनैता नहीं दिखते, शाम को बगरी कूटती औरतों के श्रमगीतों के स्वरों की श्वास थम गयी हैं। दूध-गुलाथी की थाली मुझसे दूर जाती दिख रही है पर मुंह में गुलाथी की मिठास घुलने लगी है।

पुराने जिला पंचायत के ऐतिहासिक भवन को तोड़ना हुआ शुरू, अब नए भवन से लोगों को मिलेगा रोजगार

4 करोड़ 15 हजार रुपए से बनेगा नया आजीविका प्लाजा

संजय द्विवेदी, बैतूल।
जिले के युवाओं को रोजगार से जोड़ने के लिए सितंबर 2024 में आजीविका प्लाजा का 4 करोड़ 15 हजार रुपए का भवन बनाने काम शुरू हुआ था, लेकिन इस जमीन पर 75 साल पुराने आजादी के समय के बने पुराने जिला पंचायत के ऐतिहासिक भवन का डिस्मेंटल करने का काम अनुमति नहीं मिलने से रुक गया था, लेकिन अब आरईएस ने इस भवन को तोडने की अनुमति ले ली है। अनुमति मिलने के बाद इस ऐतिहासिक भवन का डिस्मेंटल शुरू कर दिया गया है। इस भवन को तोडकर समतल किया जाएगा। यहां अगले साल सितंबर 2025 तक आजीविका प्लाजा का नया भवन बनाया जा सकेगा। गौरतलब रहे कि जिला पंचायत का जो पुराना भवन है, इसमें किसी समय महिला बाल विकास विभाग, बिजली कंपनी एई टाऊन और सामाजिक न्याय विभाग का कार्यालय लगता था। समय के साथ ये कार्यालय यहां लगने बंद हो गए, तभी से यह भवन खाली था। इस भवन के साथ ही बगल में जनपद पंचायत प्रेस का भवन था, इसे पहले ही डिस्मेंटल कर दिया गया है। इस तरह यह पूरी 37 हजार वर्गफीट जमीन अब खाली हो गयी है।

68 दुकानों वाला बनेगा आजीविका प्लाजा भवन: आजीविका प्लाजा बनाने 37 हजार वर्गफीट जमीन पर लेवलिंग और पुराने भवन के डिस्मेंटल का काम इस पुराने भवन के डिस्मेंटल नहीं होने के कारण रुका हुआ था। लेकिन अब इस भवन का डिस्मेंटल किया जा रहा है। इस तरह अब यह रुकावट दूर हो जाएगी। पूरी 37 हजार वर्गफीट जमीन खाली और समतल मिल जाएगी। इससे काम यहां पर आसानी से किया जा सकेगा। और पूरा आजीविका प्लाजा का भवन जल्द से जल्द बनाया जा सकेगा। लगभग 75 साल पुराना है डिस्मेंटल हो रहा भवन, इसके साथ के अन्य भवन पहले ही टूट चुके है।

दीदी मॉल और दीदी कैफे भी होंगे संचालित: आजीविका प्लाजा भवन में ग्रामीण महिलाओं के लिए दीदी मॉल और कैफे भी बनेगा बनाए जाने है। कॉम्प्लेक्स में दीदी मॉल और दीदी कैफे भी संचालित किया जाएगा। जिससे ग्रामीण महिलाएं अपनी आजीविका चला सकेंगी। भवन में ग्रामीण क्षेत्रों की महिलाओं, स्व सहायता समूहों और शिल्पकारों को आत्मनिर्भर बनाने के लिए दुकानें दी जाएंगी। 25 स्टॉल वाला चौपाटी जोन बनेगा। इसमें 25 दुकानें लगाने की व्यवस्था बनाई जाएगी। ओपन थिएटर में सांस्कृतिक कार्यक्रम और प्रदर्शनी भी लगाई जाएगी।

68 दुकानों वाली बनेगी दो मंजिला इमारत: बस स्टैंड के बगल में जिला पंचायत की 37 हजार 570 वर्गफीट जमीन को समतल करके आजीविका प्लाजा का भवन बनाया जाना है। यहां पर आजीविका प्लाजा का यू-आकार में 68 दुकानों वाली 2 मंजिला इमारत बनेगी 4 करोड़ 15 लाख से यह इमारत बनेगी। इसके बनने से बेरोजगारों को रोजगार से जोडा जा सकेगा। भवन में ओपन थिएटर बनेगा, जिसमें सांस्कृतिक कार्यक्रम हो सकेंगे। वहीं 25 स्टॉल वाली चौपाटी भी यहां पर बनाई जाएगी। इसके लिए आरईएस विभाग ने ठेका और वर्क ऑर्डर भी जारी कर दिया है। उम्मीद है कि एक साल के भीतर यानी सितंबर 2025 तक काम पूरा हो जायेगा।

इनका कहना है-

जिला पंचायत के पुराने भवन का डिस्मेंटल वर्क अनुमति मिलने के बाद शुरू कर दिया है। अब रुका हुआ काम दोबारा शुरू कर दिया गया है। उम्मीद है कि सितंबर 2025 तक नया आजीविका प्लाजा भवन बनकर तैयार हो पायेगा।

- एस. एस. मरकाम, ई.ई., आरईएस विभाग बैतूल

किराना एवं जनरल व्यापारी संघ ने मनाया दीपावली मिलन समारोह

- केंद्रीय मंत्री डीडी उइके और राज्य मंत्री दर्जा प्राप्त मोहन नागर का किया सम्मान

बैतूल। व्यापारी संगठन किराना एवं जनरल व्यापारी संघ ने दीपावली मिलन एवं सम्मान समारोह का आयोजन किया। गंज स्थित एक होटल में आयोजित इस कार्यक्रम में केंद्रीय मंत्री दुर्गादास उइके और जन अभियान परिषद के उपाध्यक्ष एवं राज्य मंत्री दर्जा प्राप्त मोहन नागर का सम्मान किया गया। इस आयोजन में बैतूल विधायक हेमंत खंडेलवाल और आमला विधायक डॉ. योगेश पंडाग्रे भी विशिष्ट अतिथि के रूप में शामिल हुए। कार्यक्रम के दौरान चारों प्रमुख अतिथियों ने संबोधन देते हुए जिले और नगर के विकास के विभिन्न पहलुओं पर विचार व्यक्त किए। इस अवसर पर व्यापारियों और जनप्रतिनिधियों के बीच नगर की तरक्की से जुड़े विषयों पर अनौपचारिक चर्चा भी हुई, जिसमें शहर के भविष्य को संवारने और व्यापारिक समुदाय की भूमिका को लेकर गंभीर संवाद किया गया। दीपावली मिलन और रात्रिभोज के इस खास आयोजन में व्यापारी समुदाय के प्रमुख सदस्य चंदूमल थारवानी, बाबू गुप्ता, नरेंद्र हिरानी, प्रवीण भाई दोषी, युसूफ भाई पटेल, अरुण गोठी, नवीन तातेड़, मनोज भार्गव, राजेश आहूजा और दीपू सलूजा सहित कई अन्य गणमान्य व्यक्ति उपस्थित रहे। कार्यक्रम का संचालन संघ के सचिव प्रवीण गुगनानी ने कुशलतापूर्वक किया, जबकि संघ के अध्यक्ष गजानंद मोटवानी ने सभी आगंतुकों का आभार व्यक्त किया।

13 साल से फरार वारंटी धराया, एक अन्य भी गिरफ्तार

बैतूल। मारपीट के मामले में पिछले 13 साल से फरार वारंटी को बोरदेही पुलिस ने गिरफ्तार कर लिया। जबकि, एक अन्य आरोपी को भी पकड़ा है। दोनों को गिरफ्तार कर जेल भेज दिया गया। आरोपियों के खिलाफ कोर्ट ने स्थायी वारंट जारी किए थे। थाना प्रभारी राजकुमार मीना ने बताया कि मालेगांव में रहने वाला 30 वर्षीय मंकुलाल पिछले 2011 से फरार था। उसके खिलाफ मारपीट, जान से मारने की धमकी देने का प्रकरण कोर्ट में विचाराधीन है। आरोपी 13 साल से अपनी पहचान छिपाकर रह रहा था। उसे मालेगांव से गिरफ्तार किया गया। वहीं बडगांव निवासी भगवान दास चिल्हटे को भी गिरफ्तार किया गया है। इस पर भी मारपीट का सात साल पुराना प्रकरण चल रहा है। दोनों को गिरफ्तार कर कोर्ट के सामने पेश किया गया। जहां से उन्हें जेल भेज दिया गया है।

ट्रैक्टर की टक्कर से बाइक सवार की मौत

बैतूल। मुलताई थाना क्षेत्र के ग्राम दुनावा में एक बाइक सवार युवक को अज्ञात ट्रैक्टर ने टक्कर मार दी। जिससे युवक गंभीर रूप से घायल हो गया। परिजन घायल को मुलताई के सरकारी अस्पताल लेकर आए, जहां उपचार के दौरान युवक की मौत हो गई। पुलिस सूत्रों से मिली जानकारी के अनुसार दुनावा निवासी 32 वर्षीय मुकेश परिहार रविवार शाम 7 बजे घर का सामान लेने के लिए बाइक से निकला था। दुनावा के पेट्रोल पंप के सामने एक तेज रफ्तार से आ रहे ट्रैक्टर में उसे टक्कर मार दी। जिससे मुकेश बुरी तरह से घायल हो गया। मुकेश को संजीवनी 108 से सरकारी अस्पताल में भर्ती कराया गया, जहां उसका उपचार किया जा रहा था, उपचार के दौरान रविवार रात मुकेश की मौत हो गई। सोमवार को उसके शव का पोस्टमॉर्टम कर शव परिजनों को सौंप दिया। पुलिस इस हादसे की जांच कर रही है।

प्रोग्रेसिव पेंशनर्स एसोसिएशन बैतूल की मासिक बैठक आज

- पेंशनर्स का होगा सम्मान

बैतूल। प्रोग्रेसिव पेंशनर्स एसोसिएशन बैतूल की नियमित मासिक बैठक आज 5 नवंबर 2024 को भाग्य विधाता भवन, प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्वविद्यालय, बैतूल बाजार रोड स्थित बटामा ग्राम पंचायत क्षेत्र बडोरा में आयोजित की जाएगी। बैठक का समय सुबह 11.30 बजे निर्धारित है, जिसमें सभी पेंशनर्स का स्वागत और सम्मान किया जाएगा। बैठक में प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्वविद्यालय द्वारा दीपावली स्नेह सम्मेलन का आयोजन किया गया है, जिसमें माह अक्टूबर में सेवानिवृत्त हुए पेंशनर्स का सम्मान किया जाएगा। इस कार्यक्रम में विश्वविद्यालय की संचालिका मंजू दीदी ध्यान साधना और आध्यात्मिक उत्कर्ष पर व्याख्यान देंगी, जिससे सभी उपस्थित पेंशनर्स को मानसिक शांति और प्रेरणा प्राप्त होगी। इस आयोजन के पश्चात बैठक की सामान्य कार्यवाही जारी रहेगी। बैठक में शिक्षा विभाग द्वारा 30 जून को सेवानिवृत्त हुए पेंशनर्स के स्वीकृति प्रस्ताव पर चर्चा की जाएगी। साथ ही, प्राप्त कोर्ट आदेशों को संबंधित पेंशनर्स को वितरित किया जाएगा। इसके अलावा अन्य समसामयिक और तात्कालिक मुद्दों पर भी विचार-विमर्श किया जाएगा। सभी पेंशनर्स से आग्रह किया गया है कि वे इस महत्वपूर्ण बैठक में अवश्य पधारें और कार्यक्रम का लाभ उठाएं।

तीन दिन बाद भी शव की शिनाख्त नहीं, मालगाड़ी के सामने कूदकर की थी आत्महत्या

बैतूल। मालगाड़ी के सामने कूदकर आत्महत्या करने वाले एक व्यक्ति की तीन दिन बाद भी शिनाख्त नहीं हो सकी है। मृतक का शव जिला अस्पताल में रखवाया गया है। जिसका सोमवार को पीएम करवाया गया। सोनाघाटी पुलिस चौकी प्रभारी वहीद खान के मुताबिक रेलवे प्रबंधन से जानकारी मिली थी कि एक व्यक्ति ट्रैक से गुजरने वाली मालगाड़ी के सामने कूद गया था। मालगाड़ी के पायलट ने इसकी सूचना रेलवे कंट्रोल को दी थी। जिसके बाद कोतवाली पुलिस को मिली जानकारी पर रेलवे ट्रैक से शव बरामद किया गया था। मृतक का शव मालगाड़ी से करने की वजह से दो भागो में बंट गया है।

कलेक्टर बोले: 7 दिन में टीएल निराकरण नहीं करने पर संबंधित अधिकारी पर लगेगी 500 रुपए की पेनाल्टी

सभी एसडीएम अपने क्षेत्र में सभी महत्वपूर्ण विभागों की नियमित समीक्षा बैठकें करेंगे

बैतूल। 7 दिन में टीएल प्रकरणों का निराकरण नहीं किए जाने पर संबंधित विभाग के अधिकारी पर प्रति प्रकरण 500 रुपए की शास्ति अधिरोपित की जाएगी। सभी विभागों के अधिकारी पूरी गंभीरता से टीएल प्रकरणों का निराकरण सुनिश्चित कराएं। यह निर्देश सोमवार को कलेक्ट्रेट सभाकक्ष में आयोजित समयसीमा की बैठक में बैतूल कलेक्टर नरेन्द्र कुमार सूर्यवंशी ने अधिकारियों को दिए। कलेक्टर श्री सूर्यवंशी ने बैठक में समयावधि प्रकरणों की विभागवार विस्तार से समीक्षा कर लंबित प्रकरणों का शीघ्र निराकरण करने के निर्देश दिए। कलेक्टर श्री सूर्यवंशी ने निर्देश दिए कि सभी एसडीएम अपने क्षेत्र में सभी महत्वपूर्ण विभागों की नियमित विकासखंड स्तरीय समीक्षा बैठक आयोजित करें। बैठकों में विभिन्न योजनाओं में लक्ष्य की पूर्ति, जनशिकायतों का निराकरण एवं विभिन्न विभागीय मुद्दों पर समीक्षा कर प्रगति लाई जाए। सभी अनुविभागों के लिए बैठकों का रोस्टर जिला स्तर से जारी किया जाएगा। कलेक्टर श्री सूर्यवंशी ने निर्देशित किया कि वर्तमान में राजस्व वसूली की प्रगति संतोषजनक नहीं हैं। सभी राजस्व अधिकारी राजस्व वसूली में प्रगति लाए। उन्होंने यूथ सर्वेयर को सक्रिय कर फार्मर रजिस्ट्री में भी गति लाने के निर्देश दिए। उन्होंने कहा कि प्रति यूथ सर्वेयर प्रतिदिन 10-10 फार्मर रजिस्ट्री किया जाना सुनिश्चित कराएं। जिसके लिए सर्वेयर को निर्धारित भुगतान भी किया जाएगा।

प्रधानमंत्री जीवन ज्योति बीमा योजना, प्रधानमंत्री सुरक्षा बीमा योजना से पात्रों को लाभान्वित करने के लिए ग्रामीण क्षेत्रों में कैंप भी आयोजित किए जाएं। कलेक्टर श्री सूर्यवंशी ने मुख्य चिकित्सा एवं स्वास्थ्य अधिकारी तथा सभी ब्लॉक मेडिकल ऑफिसर को निर्देश दिए की जिला चिकित्सालय सहित सभी मैदानी स्वास्थ्य केंद्रों पर स्वास्थ्य सुविधाएं चाक चौबंद रहें। मरीजों एवं उनके परिजनों को स्वास्थ्य सुविधा के लिए अनावश्यक परेशान ना होना पड़े। चिकित्सा एवं अन्य स्वास्थ्य संबंधी स्टाफ निर्धारित शिफ्ट अनुसार समय पर पहुंचे। सभी कम्युनिटी हेल्थ ऑफीसर अपने मुख्यालय पर ही निवास करें,यह सुनिश्चित किया जाए। इसी प्रकार सभी शासकीय कार्यालय में अधिकारी कर्मचारी निर्धारित समय प्रातः 10 बजे उपस्थित होना सुनिश्चित करें। निरीक्षण के दौरान कर्मचारी निर्धारित समय पर उपस्थित नहीं पाए जाने पर संबंधित विभाग के जिला अधिकारी की जिम्मेदारी तय करते हुए कार्रवाई की जाएगी। इसके लिए सभी एसडीएम अपने क्षेत्र के शासकीय कार्यालयों का समय-समय पर निरीक्षण भी करें। बैठक में कलेक्टर श्री सूर्यवंशी ने विभागवार सीएम हेल्पलाइन और जनसुनवाई के प्रकरणों की भी समीक्षा की। उन्होंने सख्त निर्देश दिए की जनशिकायतों के निराकरण में कोताही बर्दाश्त नहीं की जाएगी। लंबित शिकायतों का सर्वोच्च प्राथमिकता से निराकरण सुनिश्चित कराएं। उन्होंने सभी विभागीय अधिकारियों को पांच नवंबर तक 80 प्रतिशत शिकायतों के निराकरण का लक्ष्य हासिल करने के निर्देश दिए। बैठक में कलेक्टर श्री सूर्यवंशी ने सोयाबीन उपार्जन एवं जिले में खाद,बीज की उपलब्धता एवं वितरण की भी समीक्षा कर उपार्जन संबंधी अधिकारियों को आवश्यक दिशा निर्देश दिए। बैठक में अपर कलेक्टर राजीव नंदन श्रीवास्तव, संयुक्त कलेक्टर मकसूद अहमद सहित सभी विभागों के जिला अधिकारी उपस्थित रहें।

सक्रिय सदस्य ही बनेंगे संगठन में पदाधिकारी : सुदर्शन गुप्ता

संगठन पर्व को लेकर जिला कार्यशाला संपन्न

बैतूल। प्राथमिक सदस्यता अभियान के साथ शुरू हुए भाजपा के संगठन पर्व में अब सक्रिय सदस्यता भी शुरू हो चुकी है। संगठन पर्व के अंतर्गत सोमवार को जिला भाजपा कार्यालय विजय भवन में जिला कार्यशाला का आयोजन किया गया। कार्यशाला को संबोधित करते हुए संगठन जिला निर्वाचन अधिकारी पूर्व विधायक सूदर्शन गुप्ता ने कहा कि हमारी संस्कृति को मजबूत करने के लिए संगठन को सशक्त करने की जरूरत हर समय रहती है। देश भर में सदस्यता के मामले में मध्यप्रदेश नंबर वन है हमें अब सक्रिय सदस्यता के लिए जिम्मेदारी उठाने की जरूरत है हर बूथ पर हमारे सक्रिय सदस्य हो इसकी चिंता सबको करनी है। संगठन के विस्तार में मंडल स्तर से लेकर राष्ट्रीय स्तर तक के पदाधिकारी सक्रिय सदस्य ही बनेगें। जिसके लिए 50 प्राथमिक सदस्य व 100 रुपये की ऑनलाइन फीस चुकानी होगी। इस कार्यशाला के बाद 7,8 व 9 नवंबर को मंडल कार्यशालाएं फिर शक्ति केन्द्र पर कार्यशालाएं होगी। हम सबको मिलकर बूथ समिति के लिए सशक्त प्रयास करते हुए मजबूत बूथ समिति बनानी है। भाजपा का मंत्र रहा हैं बूथ जीता चुनाव जीता इसी मूल मंत्र को लेकर मजबूत बूथ समिति का गठन कर हमें 2029 की सफलता के लिए जुट जाना है।

कार्यशाला को संबोधित करते हुए केन्द्रीय राज्य मंत्री दुर्गादास उइके ने कहा कि हमारे शास्त्रों में स्पष्ट है, संघ शक्ति कलयुगें, जहां संगठन होता है, वहां तरक्की होती है। हमारे दो लक्ष्य है विकसित भारत और सुरक्षित, भारत हमारे अंग्रेजों की परिकल्पना को साकार करना हमारी जिम्मेदारी है। प्रकाश की प्राण प्रतिष्ठा हो संगठन हर सफलता हासिल करें यही मनोकामना है। विधायक हेमंत खंडेलवाल ने कहा कि यहा उपस्थित कार्यकर्ताओं और पदाधिकारियों की मेहनत के चलते हम आज दिल्ली से लेकर जनता के दिलो तक जगह बनाने में कामयाब हुए है। बूथ समिति की मजबूती से पूरा संगठन मजबूत होगा हम संगठन बनाए कि हमसे बेहतर कोई और नजर नही आए। आमला विधायक डा.योगेश पंडाग्रे ने कहा कि कार्यकर्ताओं का परिश्रम, जिलाध्यक्ष का नेतृत्व और आपकी आवाज ने हमें पहली बार केन्द्रीय नेतृत्व में जगह दी। डीडी उइके मंत्री बने, मोहन नागर राज्यमंत्री बने, हेमंत भैया बडी-बडी जिम्मेदारी निभा रहे है। यह सब कार्यकर्ता व पदाधिकारियों के परिश्रम से ही संभव हुआ है। कार्यशाला के दौरान जिला महामंत्री सुधाकर पंवार ने मंडल प्रभारी व सहयोगियों की घोषणा की। कार्यशाला का संचालन जिला सहनिर्वाचन अधिकारी कमलेश सिंह ने एवं अंत में आभार जिला सह निर्वाचन अधिकारी वसंत बाबा माकोडे ने व्यक्त किया।

प्रारूप मतदाता सूची पर दावे-आपत्तियां 29 अक्टूबर से 28 नवम्बर 2024 तक प्राप्त की जायेंगी

बैतूल। कलेक्टर बैतूल नरेंद्र सूर्यवंशी ने बताया कि भारत निर्वाचन आयोग द्वारा मतदाता सूची के विशेष संक्षिप्त पुनरीक्षण के लिये विस्तृत कार्यक्रम जारी किया गया है। मतदाता सूची के पुनरीक्षण से जुड़ी गतिविधियों के तय कार्यक्रम के अनुसार एग्जाई प्रारूप में मतदाता सूची का प्रारूप प्रकाशन 29 अक्टूबर 2024 को किया जा चुका है। कलेक्टर श्री सूर्यवंशी ने बताया कि प्रारूप मतदाता सूची पर दावे-आपत्तियां 29 अक्टूबर से 28 नवम्बर 2024 तक प्राप्त की जायेंगी। पुनरीक्षण के संबंध में 9 एवं 10 नवम्बर तथा 16 एवं 17 नवम्बर को विशेष कैम्प आयोजित किये जायेंगे।

कृषि उपज मंडी प्रबंधन की लापरवाही आई सामने, उपज डालने परेशान होते रहे किसान

6 दिन बंद रही मंडी, फिर भी शेड से नहीं हटवाये व्यापारियों के बोरे

बैतूल। कृषि उपज मंडी परिसर के शेड में अभी भी व्यापारियों के बोरे रखे हुए है। 6 दिन मंडी बंद रहने के बाद भी व्यापारियों ने इन बोरों को नहीं हटाया। मंडी प्रबंधन ने छुट्टियों के दौरान शेडों को खाली कराने कोई पहल नहीं की। जबकि सोमवार को मंडी में खरीदी शुरू होने पर किसानों को उपज डालने के लिए परेशान होना पड़ा। दरअसल 28 अक्टूबर को मंडी में नीलामी हुई थी। उसके बाद 29 अक्टूबर से 3 नवम्बर तक 6 दिन का दीपावली अवकाश था। नियमानुसार उसे 29 अक्टूबर को ही मंडी शेड में रखे अपने बोरे उठवा लेने थे, लेकिन 6 दिन के अवकाश के बावजूद भी मंडी शेड में व्यापारियों के बोरे रखे हुए है। यहां यह स्थिति पहली मर्तबा नहीं, बल्कि व्यापारियों के अक्सर मंडी शेड में उपज खरीदी के बाद बोरे रखे रहते है। जिससे किसानों को उपज डालने के लिए जगह नहीं मिलती है। हालांकि जिला कलेक्टर ने मंडी में अव्यवस्थाओं को लेकर नाराजगी भी जाहिर की और औचक निरीक्षण कर व्यवस्थाएं दुरूस्त रखने के निर्देश भी दिये थे। पिछले दिनों कलेक्टर नरेंद्र सूर्यवंशी 12 बजे रात में कृषि उपज मंडी पहुंचे थे। उन्होंने मंडी बैतूल एसडीएम को मंडी में किसानों को पूर्ण सुविधाएं दिलवाने के निर्देश दिए थे। लेकिन इसके बाद भी मंडी की व्यवस्था में कोई सुधार नहीं देखा जा रहा है।

24 घंटे के भीतर खाली होना चाहिए शेड : किसानों की उपज रखने के लिए कृषि उपज मंडी में बनाए गए शेड से व्यापारियों का कब्जा हटने का नाम ही नहीं ले रहा है। हालात यह है कि व्यापारियों के बोरे मंडी के शेड में कई दिनों तक रखे रहते है, जबकि मंडी नियमों के तहत व्यापारी तौल करवाने के बाद कुछ समय के लिए शेड में अपने बोरे रख सकता है, लेकिन अगले दिन मंडी शुरू होने के पूर्व या उसे 24 घंटे तक शेड खाली करना चाहिए, लेकिन यहां हमेशा ही व्यापारियों के बोरे रखे रहते है। जिसकी वजह से किसानों को खुले आसमान के नीचे अपनी उपज के ढेर लगाने पड़ते है। ऐसे में यदि बारिश होती है तो किसानों का अनाज गीला होगा। बारिश नहीं भी हुई तो किसानों को अपने अनाज की देखरेख करने परेशान होना पड़ेगा।

मंडी प्रबंधन नहीं देता ध्यान, किसान परेशान : मंडी प्रबंधन व्यापारियों के बोरे शेडो से हटाने के लिए खास दिलचस्पी नहीं दिखाता है। जिसका खामियाजा किसानों को परेशान होकर चुकाना पड़ता है। यदि मंडी प्रबंधन कलेक्टर निर्देशों का पालन कर मंडी के शेड से व्यापारियों के बोरे उठवा लेता तो शायद यह नौबत नहीं आती थी। अभी मंडी प्रबंधन और व्यापारियों के पास शेड खाली करने के लिए 6 दिनों का समय भी था, किन्तु इस ओर न मंडी प्रबंधन ने विशेष ध्यान दिया और न ही व्यापारियों से शेड खाली करवाये गये। जिसकी वजह से सोमवार को नीलामी के दौरान किसानों को उपज डालने के लिए यहां-वहां परेशान होना पड़ा। इससे किसानों में मंडी की व्यवस्थाओं को लेकर नाराजगी भी देखी गई।

सोमवार मंडी में 25398 बोरों की रही आवक : सोमवार को कृषि उपज मंडी बडोरा में लगभग 25398 बोरों की आवक रही। जिसमें सोयाबीन 3125 बोरे, चना 18 बोरे, मक्का 19008 बोरे, गेहूं 3246 बोरे और मूंग 1 बोरा खरीदा गया। गौरतलब रहे कि 6 दिनों की छुट्टी के बाद सोमवार को मंडी में उपज की खरीदी हुई। जिसमें सबसे ज्यादा मक्का की आवक रही। किसानों ने मक्के के अलावा सोयाबीन भी बेची। मंडी में मक्का की अधिक आवक आने से व्यवस्थाएं चरमरा गई। मंडी में पहले से ही शेडो में व्यापारियों के बोरे रखे हुए है। वहीं मक्का की अधिक आवक आने से व्यवस्थाएं प्रभावित हुई।

फिल्म

रमेश कुमार 'रिपु'

समीक्षक

कई सवालों से मुठभेड़ करता 'इमामदस्ता'

इन दिनों फिल्मों का पैटर्न बदल गया है। कुछ सालों से कुछ नयी विचारधारा की फिल्में बनने लगी हैं। गोलमाल और जाने भी दो यार जैसी फिल्में आई तो दूसरी ओर स्त्री जैसी फिल्में भी। बॉलीवुड की फिल्मों की अपनी शैली है और विषय है। कम बजट की फिल्मों का भी अपना मिजाज है। संदेश है। आकर्षण है। लाफटर है। और समाज की बुरी सोच पर चोट करने का अपना तरीका है। 'इमामदस्ता' समाज की कई अनकही बातें है,उसे कह दिया है।

पहली बार इनके निर्देशन में बनी फीचर फिल्म 'इमामदस्ता' में दर्शकों को कई सुखद आश्चर्य होगा। इसलिए कि अभी तक दर्शक बॉलीवुड की फिल्में देखते आए हैं। वो इस फिल्म में भी वही सब देखना चाहेंगे। रिजवान ने निराश नहीं किया। निर्देशन टाइट है। फिल्म की कहानी में ठहराव नहीं है। नदी सा प्रवाह है। क्यों कि रिजवान ने समाज की मूल समस्या में वयस्क सोच की कल्पना को पर्दे पर उतरा है , लाफटर और संवाद में अवधी-हिन्दी को मिक्स कर यू.पी टोन का तड़का भी शामिल किये हैं। जो मन को हँसाने के साथ गुदगुदाता भी है। रिजवान को न जानने वाले अनजान दर्शक के मन में फिल्म देखने से पहले जो सवाल उठेंगे, वो धीरे- धीरे फिल्म का अंत होने तक खत्म हो जाएगा। फिल्म में दो लड़कों की कहानी है। जो पूरी शिद्दत के साथ अपने पात्र को जीते हैं। फिल्म का नाम 'इमामदस्ता' है,लेकिन इमामदस्ता है क्या, अंत में पता चलता है।

लेखक -निर्देशक रिजवान सिद्दीकी ने सच्ची घटना से प्रेरित होकर छोटे बजट की फ़िल्म बनाई है.यह फिल्म अपने कंटेंट के दम पे बॉलीवुड की बड़ी-बड़ी फिल्मों को पीछे छोड़ दिया है। सच्चाई यही है कि कहानी कहने के लिए शहर का छोटा-बड़ा होना मायने नहीं रखता। लखनऊ में अपनी छोटी सी प्रोडक्शन टीम के साथ मिलकर इस फिल्म को बनाया,इसमें ज्यादातर कलाकार स्थानीय हैं। कहानी दो बेरोजगार नव युवक मनोज और फिरोज के इर्द गिर्द घूमती है। मनोज बी.ए.पास चलता पुर्जा टाइप का नौजवान है, जो छोटी-मोटी नौकरी कर के अपना गुजर बसर कर रहा है। जबकि फिरोज एक आदर्शवादी पत्रकार है। अपने उसूलों के चलते बेरोजगार है। लेकिन उसकी कलम तेजाब उगलती है। धर्म के बाबाओं के खिलाफ, समाज के

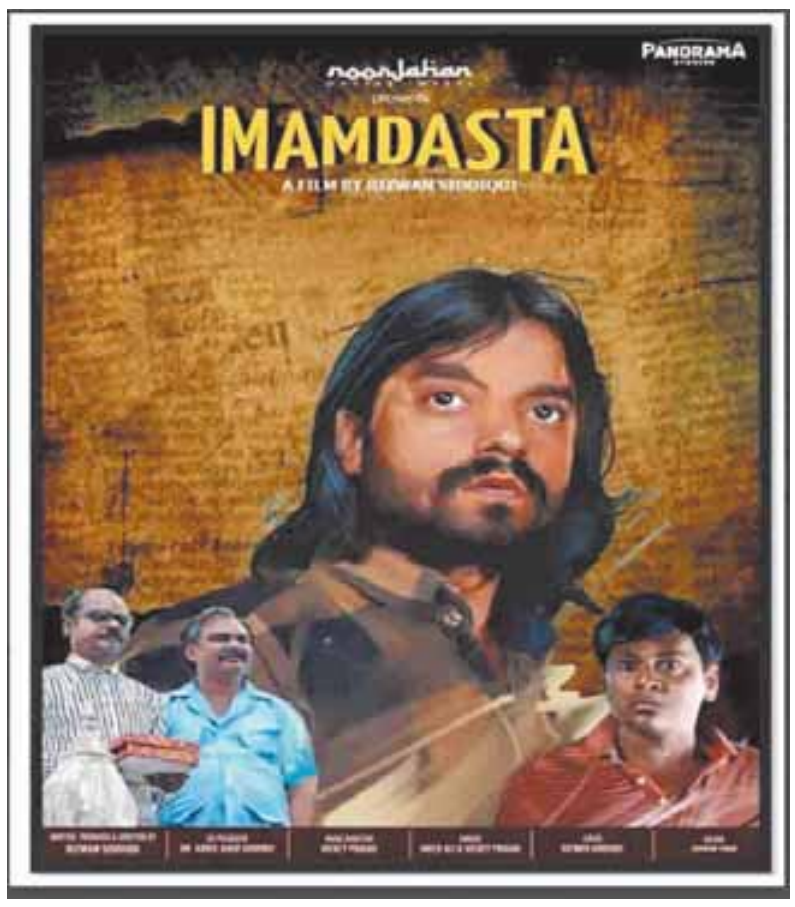

ठेकेदारों के खिलाफ। वो परेशान रहता है कि आखिर सब कुछ है तो फिर समाज इतनी प्रगति क्यों नहीं करता। लोग बेरोजगार क्यों है? समाज के सीने पर दौड़ते सवालों को वो पकड़ता है और लिखता है।

कहानी में हालत तब बदल जाते हैं जब मनोज और फिरोज दोनों बेरोजगारी के दौर से जूझ रहे होते हैं। और ऐसे में उनके घर शादी का प्रपोजल ले कर दो अजनबी महमूद आलम और जॉ निसार आ जाते हैं। गुरबत में अपनी जिंदगी को झेलते इन दोनों लड़कों पे जैसे कयामत टूट पड़ती है। दो वक्त के खाने के लिए संघर्ष करते मनोज-फिरोज पर मेहमानों की खातिरदारी का बोझ उन्हें तोड़ देता है। तंगहाली में भी जिन्दगी कैसे खूबसूरत होती है वह काबिले तारीफ है। इन सबके बावजूद मेहमान घर से जाने का नाम नहीं लेते। बिन बुलाये मेहमानों से मनोज और फिरोज एक नयाब तरीका ढूंढ निकालते है। उनका यह तरीका हंसी के फव्वारे से भरा हुआ है।

जिन्दगी की दुश्वारियों को अनूठे हास्य व्यंग्य से हैंडल किया गया है। धार्मिक अंध विश्वास राजनीति और पत्रकारिता के गिरते स्तर को भी ये फिल्म कमाल तरीके से छूती है। फिल्म की कहानी गीत स्क्रीनप्ले और संवाद रिजवान सिद्दीकी ने लिखे हैं। एक जगह संवाद है,जरा सी नील है क्या? नील से कपड़े खिल खिला उठते हैं। अजी जनाब वक्त लगता है,रिश्तों को खुलने और खिलने में।

रिजवान की इस फिल्म की खासियत यह है कि ज्यादातर पात्र हिन्दू हैं,लेकिन उन्होंने मुस्लिम किरदार को बाखूबी निभाया है। सहर्ष शुक्ला, राकेश शर्मा, जय शंकर पांडे, राजू पांडे, जगतपति पांडे, संदीप यादव और अभिजीत सरकार ने इस फिल्म में मुख्य भूमिकाएं निभाई हैं। जय शंकर पांडे, राकेश शर्मा और सहर्ष शुक्ला ने बेहतरीन अभिनय से अपने किरदारों को जीवंत कर दिया है। फिल्म के गांव को संगीतबद्ध किया है विक्की प्रसाद ने और टाइटल सांग गाया है, जावेद अली ने इमामदस्ता अमेजन प्राइम, एप्पल टीवी, गूगल प्ले ,ओटी और बुक माय शो के स्ट्रीमिंग प्लेटफार्म पर देखा जा सकता है। जाने भी दो यारों की तर्ज पर बनी ये छोटी बजट की फिल्म आपको निराश नहीं करेगी।

तंत्र-मंत्र साधना का चंडी मैला

दूज पर पलकमती के रामलीला मैदान पर ढालों का उत्कृष्ट प्रदर्शन, पड़ियार झूमते रहे माता के गीतों पर

हीरालाल गोलानी
सोहागपुर

आज के वैज्ञानिक युग में भी वर्तमान में सोहागपुर ही नहीं आस-पास के क्षेत्रों में पड़ियार की 21वीं सदी में भी संख्या में कमी नहीं आई। उल्लेखनीय है कि क्षेत्र के पड़ियार अपने अपने

चबूतरे पर दीन दुखियों के कष्ट निवारण चाहे बुखार से पीड़ित रोगी हो,या अन्य असाध्य रोग का निवारण करते हैं। दीपावली के दूसरे दिन,दूज पर पलकमती नदी के रामलीला मैदान पर विशाल चंडी मैले का आयोजन सैकड़ों सालों से होता हुआ आया है।कल रात भी पलकमती नदी के रामलीला मैदान में चंडी मैला संम्पन्न हुआ। इस अवसर पर गांगो जादूगरनी की प्रतिमा बनाई गई थी। इस संबंध में रामगंज निवासी अनूप कोरी ने इस प्रतिनिधि को बताया कि गांगो जादूगरनी के एक हाथ में दीपक, दूसरे हाथ अंडा रखा जाता है। सामने भभूत रखी रहती है। इस प्रक्रिया में च्चगजा च्च ग्राम रेंगा खेड़ा से आता है। इस गजा के इर्द-गिर्द पड़ियार ढाल के साथ उलटा चक्कर लगाकर आगामी साल तक तंत्र-मंत्र का अनुबंध करते है। ढाल ले जाने के पूर्व पड़ियार पान का बीड़ा लेते हैं। इस कार्य में पूर्व प्रदेश भाजपा प्रवक्ता राजो मालवीय एवं उनके भाई यह व्यवस्था करते हैं। इसके पूर्व उनके अग्रज भी उक्त रस्मों का निर्वहन करते थे। श्री कोरी ने आगे बताया कि मैला संम्पन्न होने के उपरांत गांगो जादूगरनी का नदी में प्रवाहित किया जाता है। लेकिन पीछे मुड़कर नहीं देखा जाता। इस साल करीबन 29 ढालों को लेकर पड़ियार चंडी मैले में आए थे।इन पड़ियारो के अलावा उनके साथ महिलाओं एवं पुरुषों का झुंड भी था।जो झूम झूमकर माता रानी के गीतों पर नृत्य भी करते थे। ज्ञातव्य है कि गजा के साथ ढाल की परिक्रमा के बाद पड़ियार अपने अपने चूबतरो पर दीन दुखियों का निःशुल्क परेशानियों, बीमारियों का इलाज करते हैं। बताया जाता है कि मन्नत पूरी होने के बाद व्यक्ति नारियल, प्रसाद अगरबत्ती आदि की भेंट चढ़ाते हैं। उक्त प्रक्रिया लगभग-लगभग चार पांच सौ से अधिक सालों से निरंतर चलती आ रही है।इस प्रक्रिया में जहां आदिवासी समुदाय शामिल होता है। वहीं अन्य समाजों के पड़ियार भी इस प्रक्रिया में अग्रणी भूमिका निभाते हैं।इस साल रामलीला मैदान के अलावा पलकमती नदी पुल एवं मुख्य बाजार में भी खासी भीड़ भाड़ रही। वहीं मैले में खेल खिलौने आदि की दुकानें भी लगी थी। नागरिकों महिलाओं ने काफी खरीद फरोख्त की। इधर पुलिस ने भी माकूल व्यवस्था की थी।

भोपाल की 243 लोकेशन में बढ़ेंगे प्रॉपर्टी के रेट

गाइडलाइन 5 से 200 प्रतिशत तक बढ़ाने का प्रस्ताव; 2 दिन दावे-आपत्ति, फिर मीटिंग

भोपाल (नप्र)। भोपाल की 243 लोकेशन में प्रॉपर्टी के रेट बढ़ेंगे। सोमवार को हुई मीटिंग में इन लोकेशन में 5 से 200 प्रतिशत तक रेट बढ़ाने का प्रस्ताव पंजीयन विभाग ने रखा है। इसमें कुछ संशोधन हो सकते हैं। मंजूरी के बाद अगले साल से नई गाइडलाइन के हिसाब से ही जमीन की रजिस्ट्री होगी। रेसिडेंशियल, कमर्शियल और एग्रीकल्चर में एवरेज 8.55 प्रतिशत तक गाइडलाइन बढ़ सकती है। अगले 2 दिन दावे-आपत्ति लिए जाएंगे। 6 नवंबर को गाइड लाइन को हरी झंडी मिल जाएगी।

कलेक्टर कौशलेंद्र विक्रम सिंह, विधायक भगवानदास सबनानी की मौजूदगी में पंजीयन विभाग ने गाइडलाइन बढ़ाने का प्रस्ताव रखा। इससे पहले, विभाग ने शहर की 1100 लोकेशन की सूची जिला प्रशासन को सौंपी, जहां 1 अप्रैल से अब तक रजिस्ट्रियां ज्यादा रेट पर हुई हैं। कलेक्टर कौशलेंद्र विक्रम सिंह, विधायक भगवानदास सबनानी, जिपं सीईओ ऋतुराज सिंह की मौजूदगी में सोमवार को बैठक हुई।

100 इलाकों में 20 प्रतिशत तक रेट बढ़ेंगे

भोपाल में कुल 3883 लोकेशन है। इनमें शहर में 3091 और ग्रामीण में 792 लोकेशन शामिल हैं। 3641 लोकेशन में रेट नहीं बढ़ाए जाएंगे, जबकि बाकी लोकेशन पर वृद्धि की जाएगी। इस बार 9 नई लोकेशन भी जोड़ी गई है। बता दें कि 100 से अधिक लोकेशन ऐसी हैं, जहां अधिक रजिस्ट्रियां हुई हैं। इसलिए इनमें वृद्धि करने का टारगेट रखा गया है।

प्रस्ताव में इन इलाकों में रेट बढ़ाने पर चर्चा

100 लोकेशन ऐसी जहां ज्यादा रजिस्ट्री हुई हैं, वहां भी रेट बढ़ेंगे।

कोलार में गोल गांव पर सिक्सलेन के कारण प्रॉपर्टी की कीमतें बढ़ी हैं। गोलजोड़ से थुआंखेड़ा और कजलीखेड़ा तक कलेक्टर गाइडलाइन में वृद्धि होगी।

भानपुर कचरा खंती हटने के बाद अब अयोध्या बायपास इलाके में भी रजिस्ट्रियों की संख्या में इजाफा हुआ है।

सलैया क्षेत्र में तेजी से डेवलपमेंट हो रहा है, इसलिए यहां भी रेट बढ़ाने का प्रस्ताव है।

कोकता बायपास-बगरोदा व्यावसायिक क्षेत्र है। यहां भी दाम तेजी से बढ़ रहे हैं।

बैरागढ़ स्टेशन के पास, मिनाल, वैशाली नगर बड़वई सड़क से हटकर, बरखेड़ी कलां, चौपड़ाकलां, कटारा हिल्स, रातीबड़, बिशनखेड़ी, दामखेड़ा व मेंडोरी में भी रेट बढ़ाने का प्रस्ताव है।

नर्मदापुरा रोड, मिसरोद, गुलमोहर, आकृति ईको सिटी, विद्यानगर, कान्हाकुंज, पुलिस हाउसिंग सोसायटी, वंदना नगर समेत कई इलाकों में भी रेट बढ़ाने का प्रस्ताव है।

इस साल 1 हजार 443 लोकेशन पर बढ़े थे दाम

इस साल 1 अप्रैल से भोपाल जिले की 3900 लोकेशन में से 1443 लोकेशन पर दाम बढ़ाए गए थे। कुल 7.19 प्रतिशत की औसत बढ़ोतरी बताई गई थी। शहर की 1228 लोकेशन पर औसत 8.9 प्रतिशत और ग्रामीण की 215 लोकेशन पर 5.48 प्रतिशत बढ़ाए जाने का प्रस्ताव फाइनल हुआ था। अब दोबारा से रजिस्ट्री के दाम बढ़ाए जाने की तैयारी है। हालांकि, यह नए साल में ही बढ़ेगी।

भोपाल पुलिस कमिश्नर की फेक आईडी क्रिएट से सस्ता सामान बेचने का झांसा देकर जालसाज कर रहे ठगी की कोशिश

भोपाल (नप्र)। भोपाल पुलिस कमिश्नर हरीनारायणचारी मिश्रा के नाम से फर्जी फेसबुक अकाउंट क्रिएट किया गया है। जालसाज उनके परिचितों को मैसेज कर ठगी की कोशिश कर रहे हैं। इस अकाउंट से सैकड़ों लोगों को रिक्वेस्ट भेजी गई। रिक्वेस्ट एक्सेपट करते ही लोगों को हाय का मैसेज भेजा जाता है।जवाब मिलते ही मोबाइल नंबर मांगा जाता है। बताया जाता है कि मैने अपने परिचित को आपका नंबर दिया है। वह आपको कॉल करेगा। मोबाइल नंबर लेते ही जालसाज वॉट्सऐप पर मैसेज कर स्वयं का परिचय अमित कुमार नाम से देते हैं। ठग अपने आप को एक सीआईएसएफ का अधिकारी बताते हैं। आगे लिखा जाता है उक्त सीआईएसएफ अधिकारी का ट्रांसफर दूसरे राज्य में हो गया है। वह अपने घर का फर्नीचर और इलेक्ट्रॉनिक्स का आइटम कम दामों में बेचना चाहते हैं। झांसे में आने वालों को ऑनलाइन रकम ट्रांसफर करने की बात कही जाती है।

हरीनारायणचारी मिश्रा बोले- सख्त कार्रवाई होगी- मेरे संज्ञान में मामला आया है। आईपी एड्रेस के आधार पर आरोपियों तक पहुंचने का प्रयास किया जा रहा है। क्राइम ब्रांच मामले की जांच कर रही है। आरोपियों की पहचान कर सख्त कार्रवाई करेंगे।

प्रधानमंत्री स्वनिधि योजना में प्रदेश का श्रेष्ठ प्रदर्शन

पिछले तीन वर्षों से मध्यप्रदेश लगातार प्रथम स्थान पर

मुख्यमंत्री ने नगरीय निकायों में रेहडी पटरी वालों को और मदद देने के दिए निर्देश

भोपाल (नप्र)। मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव ने विभागीय अधिकारियों को निर्देश दिये है कि नगरीय क्षेत्र में जरूरतमंद पथ-विक्रताओं को उनकी जरूरत के मुताबिक ऋण प्रदान करते हुए कार्यशील पूंजी उपलब्ध कराई जाये। प्रदेश में प्रधानमंत्री स्वनिधि योजना में पिछले तीन वर्षों से श्रेष्ठ प्रदर्शन करते हुए मध्यप्रदेश लगातार पहले स्थान पर है। इस योजना में प्रदेश के नगरीय क्षेत्रों में हाथठेला चालकों, रेहड़ी पटरी वालों को 10, 20 और 50 हजार रूपये तक का ऋण प्रदान कर उन्हें आर्थिक रूप से सशक्त किया जा रहा है। प्रदेश में प्रधानमंत्री स्वनिधि योजना का क्रियान्वयन नगरीय विकास एवं आवास विभाग द्वारा किया जा रहा है।

तीन वर्षों में श्रेष्ठ प्रदर्शन-मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने बताया है कि प्रदेश में प्रधानमंत्री स्वनिधि योजना में पिछले तीन वर्षों में श्रेष्ठ प्रदर्शन करते हुए देशभर में पहले स्थान पर अपनी उपस्थिति दर्ज करता आया है। पीएम स्वनिधि योजना में अब तक 12 लाख 30 हजार हितग्राहियों को करीब 1769.16 करोड़ रूपये का ऋण उपलब्ध कराया गया है।

वर्तमान में मध्यप्रदेश के 4 लाख 89 हजार पथ विक्रेता सफलतापूर्वक डिजिटल लेन-देन कर रहे है। जिसमें उन्हें 21 करोड़ रूपये का कैशबेक भी प्राप्त हुआ है। प्रधानमंत्री स्वनिधि योजना में डिजिटल लेन-देन को बढ़ावा देने के लिये चयनित क्षेत्रों में हितग्राहियों को प्रशिक्षण भी दिलाया जा रहा है।

भोपाल में जुआ की फड़ पर पुलिस की रेड,जंगल में बैटरी से लाइट जलाकर खेल रहे थे जुआ, 2.25 लाख रुपए जब्त

भोपाल (नप्र)। भोपाल के गांधी नगर थाना इलाके में स्थित बिशनखेड़ी जंगल में जुआ खेलते हुए पुलिस ने 24 लोगों को गिरफ्तार किया है। आरोपियों के कब्जे से एक बैटरी, एक लाइट और दो दरियों सहित दांव पर लगे 2.25 लाख रुपए जब्त किए गए हैं। पूरी कार्रवाई का वीडियो भी सामने आया है। सभी आरोपियों के खिलाफ पुलिस ने जुआ एक्ट के तहत कार्रवाई की है। आरोपियों में अधिकांश लोग बैरागढ़ के कारोबारी हैं।

एसआई अयाज चांदा ने बताया कि सोमवार तड़के चार बजे मुखबिर से सूचना मिली कि बिशनखेड़ी में कुछ लोग जुआ खेल रहे हैं। सूचना के बाद साथी स्टाफ के साथ मौके पर पहुंचकर दबिश दी गई। कुछ जुआरियों ने भागने का प्रयास किया, जिन्हें घेराबंदी कर गिरफ्तार किया गया।

दबिश के दौरान मौके पर पाया गया कि दो दरियों पर बैठे 24 जुआरी ताश के पत्तों पर हार-जीत पर दांव लगा रहे थे। इसकी वीडियोग्राफी कराई गई और आरोपियों को हिरासत में लेकर थाने लाया गया, जहां सभी के खिलाफ जुआ एक्ट के तहत कार्रवाई की गई हैं।

ताश के पत्ते और केश जब्त

पुलिस ने मौके से 8 गड्डी ताश के पत्ते, दो दरियां, एक बैटरी और एक लाइट को जब्त किया है। पूछताछ में आरोपियों ने बताया कि वे जंगल में अलग-अलग वाहनों से जुआ खेलने आए थे। जुए से पहले वहां नॉनवेज पार्टी भी की गई थी।

गिरफ्तार आरोपी

हितेश चंदानी पुत्र शिवन लाल चंदानी उम्र 28 वर्ष निवासी 2017 ओल्ड स्टेशन रोड़ थाना बैरागढ़

जयेश रामानी पुत्र तेजुमन रामानी उम्र 27 वर्ष निवासी बी न्यू 58, 2222 आरा मशीन रोड़ थाना बैरागढ़

विजय राजपूत पुत्र करन राजपूत उम्र 25 वर्ष निवासी घनश्याम किराना के पास, टेकरी थाना बैरागढ़

अजय खरे पुत्र प्रभु दयाल खरे उम्र 32 वर्ष निवासी एच-3, जेपी अस्पताल केम्पस तुलसी नगर थाना हबीबगंज

राकेश राजगुरु पुत्र रामचन्द राजगुरु उम्र 43 वर्ष निवासी ओल्ड बी, 14 थाना बैरागढ़

विनोद चेनानी पुत्र अशोक कुमार चेनानी उम्र 34 वर्ष निवासी 29, अर्जुन वार्ड थाना गाँधी नगर

हर्ष भागचंदानी पुत्र प्रकाश भागचंदानी उम्र 26 वर्ष निवासी जे-4, गोकुलधाम, जेल रोड़ थाना गाँधी नगर भोपाल

अमित वर्मा पुत्र प्रकाश वर्मा उम्र 30 वर्ष निवासी 01, कृष्णा कुंज, मुर्गी बाजार थाना शाहजहाँनाबाद

आकाश वरदेल पुत्र वरादानी वरदेल उम्र 29 वर्ष निवासी 80, बैरागढ़ ए केबिन के पास, सीआरपी फाटक रोड़ बैरागढ़

हर्षदीप पारोचे पुत्र राकेश पारोचे उम्र 30 वर्ष निवासी 70, केम्प नंबर 12, वाल्मिकी मंदिर के पास बैरागढ़

दिनेश तेजवानी पुत्र श्री हीरालाल तेजवानी उम्र 31 वर्ष निवासी 1901, अर्जुन वार्ड थाना गाँधी नगर भोपाल

राहुल सिंह पुत्र अवध नारायण उम्र 28 वर्ष निवासी म.न.24, गोंदरमऊ अब्बास नगर गाँधी नगर

सतीश कुमार करोसिया पुत्र रामसुख करोसिया उम्र 38 वर्ष निवासी 266, केम्प नंबर

वाल्मिकी मंदिर के पास, थाना बैरागढ़ 14., मनोज कुमार पुत्र जमना प्रसाद अहिरवार उम्र 40 वर्ष निवासी ग्राम वैरागढ़ कलां, माता मंदिर के पास बैरागढ़

हनी खुशलानी पुत्र सुरेश कुमार खुशलानी उम्र 29 वर्ष निवासी जी-9, म.न.07 बैंक आफ बड़ौदा के पास थाना बैरागढ़ भोपाल

अजीत ढलानी पुत्र महेश कुमार ढलानी उम्र 39 वर्ष निवासी जी-9, ओल्ड नवयुवक परिषद के पीछे थाना बैरागढ़

असलम पुत्र अजीज खान उम्र 32 वर्ष निवासी हाईस्कूल के पास थाना गाँधी नगर भोपाल

अजीत जानी पुत्र गोपाल चन्द जानी उम्र 40 वर्ष निवासी 45, एफ-वार्ड हरचूराम मंदिर की गली थाना बैरागढ़

गोविंद भागवानी पुत्र विशन दास भागवानी उम्र 30 वर्ष निवासी सीएमएस स्कूल के पास, म.न.-05. बैरागढ़

मुकेश सिंह पुत्र उमाशंकर सिंह उम्र 37 वर्ष निवासी 52, नंदा नगर, कैलाश नगर के पास सीटीओ वैरागढ़ भोपाल

अनूप छापरवाल पुत्र राजू छापरवाल उम्र 28 वर्ष निवासी 1050, शिवाजी वार्ड थाना गाँधी नगर भोपाल

शिवम सोनी पुत्र दिनेश कुमार सोनी उम्र 29 वर्ष निवासी महाकाल कालोनी बैरागढ़ कलां, बैरागढ़

राकेश खुशालानी पुत्र धर्मदास बुशालानी उम्र 33 वर्ष निवासी ए न्यू, 17, झूलेलाल मंदिर के पास थाना बैरागढ़

विकास कसौले पुत्र धूराम कसौले उम्र 29 वर्ष निवासी सीआरपी फाटक रोड़, झुग्गी थाना बैरागढ़ भोपाल बताये।

बाइक फिसलने से 4 माह की मासूम की मौत,मां-पिता हुए घायल, मेला देखने जाते वक्त नजीराबाद में हुआ हादसा

भोपाल। नजीराबाद इलाके में राजगढ़ से मेला घूमने आ रहे दंपती की बाइक स्लिप हो गई। हादसे में चार माह की मासूम की मौत हो गई, जबकि उसके मां-पिता जख्मी हुए हैं। पुलिस ने मर्ग कायम कर जांच शुरू कर दी है। यह घटना रविवार की शाम की है। सोमवार को पोस्टमॉर्ट्म के बाद पुलिस ने मासूम का शव परिजनों को सौंप दिया है। पुलिस हादसे की जांच कर रही है। पुलिस ने बताया कि राजगढ़ निवासी भगवान सिंह रविवार की शाम को अपनी पत्नी और चार माह की बेटी अनन्या के साथ बाइक पर सवार होकर ग्राम देव बरखेड़ी में आयोजित मेले में घूमने के लिए जा रहे थे। रास्ते में बाइक फिसल गई और तीनों जमीन पर गिर गए। हादसे की खबर लगते ही मौके पर पहुंची पुलिस ने घायलों को इलाज के लिए अस्पताल में भर्ती कराया, जहां रात के समय बच्ची की इलाज के दौरान मौत हो गई।

झारखंड चुनावी प्रचार में बोले सीएम यादव

- सोरेन बेईमानी का नमूना,वे सजा काटकर आए
- ये सोचता हूं तो डर जाता हूं, मैं भी सरकार का मुखिया हूं

भोपाल (नप्र)। मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव सोमवार को झारखंड में चुनाव प्रचार करने पहुंचे। उन्होंने कांके विधानसभा क्षेत्र के बीजेपी प्रत्याशी डॉ. जीतू चरण राम के समर्थन में जनसभा की।

सीएम ने हेमंत सोरेन सरकार पर हमला बोलते हुए कहा- इस बेईमानों की सरकार में पीए के पास 40 करोड़ मिल रहे हैं। 100-100 के नोटों की रेल भर दो तो पूरी रेल कम पड़ जाए। मेहनत करने वाले लोग अपने खून को पसीना कर रहे हैं और ये हमारे बाल बच्चों का पेट काटकर ये बेईमान लूटकर ले जा रहे हैं।

ये चुनाव हेमंत सोरेन और बीजेपी का नहीं, बेईमानी और ईमानदारी का है। बेइमानी का नमूना सबको मालूम है जो जेल की सजा काटकर आ रहे हैं। लेकिन, हिम्मत देखो... मैं तो इस बात को कभी सोचता हूं तो डर जाता हूं। मैं भी सरकार का मुखिया हूं लेकिन सरकार का मुखिया अगर ये करने लगेगा तो डूब मरना पड़ेगा। हम भगवान राम के देश में रहते हैं।

कांग्रेस-जेएमएम के पीछे कोई और- सीएम डॉ. मोहन यादव ने कहा- दिल से बात ऐसी निकल रही है कि तलवार से विदेश वालों की खटाखट हो रही है। कांग्रेस-जेएमएम के लोग दिखने हैं, इनके पीछे असली में कोई और हैं। इनकी सरकार-सत्ता केवल झूठ बोलने के लिए है। झारखंड की कांके विधानसभा की चुनावी जनसभा के दौरान सीएम डॉ. मोहन यादव का स्वागत करते भाजपा कार्यकर्ता।

जनसभा में रक्षा राज्यमंत्री संजय सेठ भी थे।

सीएम बोले- आगे होली-दिवाली मनानी है या नहीं

सीएम ने कहा- मैं आपको डरा नहीं रहा हूं लेकिन ये चुनाव इस बात का है कि हम अपने देवी-देवताओं की पूजा, और होली दीवाली आगे मनाना है कि नहीं?

ये घुसपैठिए आएंगे तो जो हाल वहां होने वाले हैं, ये दुर्भाग्यशाली रूप से यहां कराने वाले हैं। कांग्रेस और उनके चट्टे-बट्टे एक के भी मुंह से नहीं निकला कि वहां अपने हिन्दुओं का नरसंहार हो रहा है। इनको हिन्दुओं को बचाना चाहिए, क्योंकि वोट के भूखे हैं।ये एकमात्र बात जानते हैं कि ऐन-केन प्रकारेण केवल सत्ता और कुर्सी पकड़ो। इसलिए वो सारे षड्यंत्र कर रहे हैं।

हिंदू और आदिवासी आबादी घटी, बांग्लादेशी हक मार रहे

सीएम डॉ. मोहन यादव ने कहा- मैं यहां आते वक्त हेलिकॉप्टर में आबादी का रिकॉर्ड देखते हुए आ रहा था। इस राज्य में 7 प्रतिशत हिन्दू कम हुए हैं। आदिवासी भाई बहन 40-41 प्रतिशत थे वो 28 प्रतिशत रह गए। आबादी बढ़ रही है तो ये बढ़ना चाहिए। ये लोग कहां गए? ये बाहर वालों को घुसेड़ते जा रहे हैं।

लगातार बांग्लादेशी घुसपैठियों को लाकर न केवल आपके रोजगार पर कब्जा कर रहे हैं। बल्कि आपकी दुकान, मकान पर कब्जा कर रहे हैं और आपके हक को मार रहे हैं। आपके बच्चों के लिए संकट खड़ा कर रहे हैं। मैं जिम्मेदारी से कहना चाहूंगा कि आप इस प्रदेश में चुनाव लड़ना चाहते हो कांग्रेस के लोग दिल्ली में लड़ना चाहते थे। लेकिन, इनके कर्मों के कारण जनता ने इनको धता बताया है।

कश्मीर जैसे हाल झारखंड में होंगे

सीएम ने कहा- अकेले जम्मू-कश्मीर में 40 हजार हत्याओं का पाप कांग्रेस के माथे है। बाबा अमरनाथ, शंकराचार्य की गुफा, कश्मीर श्रृंगऋषि की पवित्र भूमि थी। लेकिन, कांग्रेस के कुकर्मों के कारण जो कश्मीर में हालत हुई वो कल झारखंड में होगी।

झारखंड के लिए हमारी पार्टी ने ये तय कि ये अलग राज्य बनना चाहिए। बिहार के साथ जुड़कर इस राज्य के लोगों की उन्नति नहीं हो रही। इस राज्य में क्या नहीं है? अटल जी ने जब राज्य बनाने की घोषणा की थी कि ये राज्य सबसे नंबर वन का राज्य होगा। अटल जी को मालूम नहीं था कि ये बेईमानों की सरकार आएगी।

15 साल की लड़की ने दी थी जान

घटना से तीन दिन पहले हुआ था रेप, फॉरेंसिक रिपोर्ट में खुलासा

ग्वालियर (नप्र)। चार महीने पहले 8वीं मंजिल से गिरकर 15 साल की छात्रा की मौत हो गई थी। अब इस मामले में खुलासा हुआ है कि छात्रा की मौत गिरकर नहीं हुई थी। उसने खुदकुशी की थी। साथ ही उसके साथ रेप भी हुआ था। इसकी पुष्टि फोरेंसिक रिपोर्ट में हुई है। रिपोर्ट के अनुसार सुसाइड से दो-तीन दिन पहले लड़की के साथ रेप हुआ था। पुलिस ने अज्ञात आरोपी के खिलाफ मामला दर्ज कर तलाश शुरू कर दी है।

22 जून को हुई थी मौत

दरअसल, घटना 22 जून 2024 गोला का मंदिर इलाके की है। जब भिंड रोड पर स्थित गैलेक्सी अपार्टमेंट से छात्रा की आठवीं मंजिल से गिरकर मौत हुई थी। छात्रा की मौत के बाद कई तरह के सवाल उठे थे। पुलिस ने पोस्टमॉर्टम के अलावा फोरेंसिक जांच भी कराई। अब चार महीने बाद फोरेंसिक रिपोर्ट पुलिस के पास पहुंची है। रिपोर्ट में डेड स्पर्म मिले हैं।

सुसाइड से पहले रेप

वहीं, इससे साफ है कि मौत से तत्काल पहले उसके साथ कुछ नहीं हुआ था, बल्कि दो-तीन दिन पहले उसके साथ किसी ने गलत किया था। छात्रा 9वीं क्लास में पढ़ती थी। 22 जून की शाम 6.50 बजे वह घर से निकली। मां से कहा कि सहेली से मिलने जा रही है, लेकिन वह एक बिल्डिंग में पहुंच गई। यहां डांस क्लास की उसकी सहेली थी।

सहेली ने पिता को फोन कर दी थी जानकारी: सहेली ने उसके पिता को कॉल कर कहा कि आपकी बेटी रो रही है। आप आ जाओ, कुछ गलत कदम भी उठा सकती है। पिता ने बेटी को कॉल किया तो मोबाइल स्विच ऑफ आया। परिजन बिल्डिंग में पहुंचे तो छात्रा नीचे पड़ी मिली। उसे बिड़ला अस्पताल ले गए, डॉक्टरों ने मृत घोषित कर दिया। परिजन ने तब कहा था कि बच्ची ऊपर से गिरी है, लेकिन उसके सिर में कहीं चोट नहीं है। मोबाइल भी नहीं टूटा है। वो उसके हाथ में ही मिला है। सहेली थी।

अज्ञात आरोपी के खिलाफ मामला दर्ज: वहीं, ग्वालियर एएसपी निरंजन शर्मा ने कहा कि मामले में अज्ञात आरोपी के खिलाफ अपराध पंजीकृत कर उसकी तलाश शुरू कर दी गई है। पीड़िता के पास से कोई नोट नहीं मिला था। साथ ही उसने किसी पर आरोप भी नहीं लगाए थे। संभावना है कि पुलिस उसके परिवार से भी पूछताछ करेगी।

मक्खियों के जरिए पुलिस ने सुलझाया ब्लाइंड मर्डर केस

शर्ट पर भिनभिना रहीं थी, जांच में खून मिला; शराब पार्टी के खर्च को लेकर हत्या

जबलपुर (नप्र)। जबलपुर पुलिस ने मक्खियों की मदद से अंधे कत्ल की गुत्थी सुलझाई है। खास बात ये है कि इस मामले में पुलिस के पास न तो कोई सुराग था और न ही गवाह। सीसीटीवी फुटेज में एक संदिग्ध तो दिखा, लेकिन उसके खिलाफ कोई सबूत नहीं था। पुलिस पूछताछ कर उसे छोड़ चुकी थी।

पुलिस के हाथ कुछ नहीं आया। लेकिन संदिग्ध ने जो शर्ट पहन रखी थी उस पर बार-बार मक्खियां बैठ रहीं थी। पुलिस को ये बात खटकी। पुलिस ने शर्ट को जांच के लिए फोरेंसिक लैब भेजा, जिसमें खून मिला। रिपोर्ट के आधार पर पुलिस ने सख्ती से पूछताछ की तो संदिग्ध ने मर्डर का खुलासा कर दिया। उसी ने अपने चाचा की हत्या की थी। इसके बाद बाद पुलिस ने आरोपी को गिरफ्तार कर लिया।

वारदात 30 - 31 अक्टूबर की दरमियानी रात की है। चरगंवा थाने के देवरी टपरिया गांव के मनोज ठाकुर (26) का शव 31 अक्टूबर की सुबह खेत में मिला था। शव मिलने, अंतिम संस्कार और जांच तक आरोपी पुलिस को सामने रहा लेकिन उसके खिलाफ कोई पुख्ता सबूत नहीं था।

एएसपी सोनाली दुबे ने कहा मनोज ठाकुर हत्याकांड में भतीजे धरम पर शक जरूर था, लेकिन पूछताछ में वह बार-बार एक ही बात पर अड़ा रहा कि उसने चाचा की हत्या नहीं की। चरगवां थाना प्रभारी को उसके कपड़ों पर मक्खियां लगने पर शक हुआ था। जांच में स्पष्ट हो गया कि हत्यारा वही है।

पुलिस ने 50 से ज्यादा लोगों से की पूछताछ: मनोज, अपने दो बड़े भाइयों बुधराज और राजू के साथ रहता था। पेशे से ड्राइवर था। 30 अक्टूबर की रात वह घर से काम पर जाने की बात कहकर निकला था।

देर रात तक जब वो घर नहीं लौटा तो परिजन ने तलाश शुरू की। अगले दिन सुबह गांव के बाहर खेत में उसका शव खून से लथपथ मिला।

सीएसपी सुनील नेमा, चरगवां थाना प्रभारी अभिषेक प्यासी और एफएसएल टीम ने मौके पर पहुंचकर जांच की। शव के पास खून से सना लकड़ी का टुकड़ा पड़ा था। पुलिस के सामने यह तो साफ हो चुका था कि इसी लकड़ी के टुकड़े से हत्या की गई है, लेकिन मारा किसने? यह पता लगाना चुनौती थी।

मनोज की किसी से रंजिश नहीं थी, लिहाजा पुलिस के लिए हत्यारे तक पहुंचना बेहद मुश्किल था। गांव के 50 से ज्यादा लोगों से पूछताछ की। सभी ने यही कहा कि मनोज का किसी से कोई विवाद नहीं था। उसका व्यवहार सभी के साथ अच्छा था। पुलिस ने देवरी टपरिया गांव के 50 से ज्यादा लोगों से पूछताछ की, लेकिन कुछ हाथ नहीं लगा।

सीसीटीवी में आखिरी बार भतीजे के साथ नजर आया: चरगवां थाना प्रभारी अभिषेक प्यासी के मुताबिक परिजन ने बताया कि फोन पर मनोज किसी से पार्टी की बात कर रहा था। इसके बाद पुलिस ने चरगवां में लगे 10 से ज्यादा सीसीटीवी कैमरे के फुटेज खंगाल डाले। शराब दुकान के सीसीटीवी में 30 अक्टूबर की शाम 7 बजे मनोज शराब खरीदता दिखा। एक फुटेज में उसके साथ 19 साल का धरम सिंह उर्फ अबी भी दिखा। अबी रिश्ते में मनोज का भतीजा है। दोनों दुकान में बैठकर चिकन खाते हुए नजर आए। रात 10 बजे गांव की ओर पैदल जाते हुए भी दिखे। सीसीटीवी में मनोज, धरम के साथ चिकन खाता हुआ दिखा। लेकिन पुख्ता सबूत नहीं था।

पुलिस के सामने रहा आरोपी, शर्ट भी नहीं बदली: 31 अक्टूबर की सुबह से पुलिस ने देवरी टपरिया और आसपास के गांव में छानबीन शुरू कर दी थी। आरोपी धरम पुलिस की नजरों के सामने ही रहा। चरगवां थाना प्रभारी 1 नवंबर को एक बार फिर देवरी टपरिया गांव पहुंचे। उन्होंने ग्रामीणों से पूछताछ की। धरम की लाल आंखें देखकर उसे भी पूछताछ के लिए बुलाया।

मंत्रालय में हुआ राष्ट्र-गीत 'वंदे-मातरम' एवं राष्ट्र-गान 'जन-गण-मन' का सामूहिक गायन

भोपाल(नप्र)। नवम्बर माह के प्रथम शासकीय कार्य दिवस पर मंत्रालय स्थित सरदार वल्लभ भाई पटेल पार्क में राष्ट्र-गीत 'वंदे-मातरम' एवं राष्ट्र-गान 'जन-गण-मन' का सामूहिक गायन हुआ। इस अवसर पर पुलिस बैंड ने मधुर धुनें प्रस्तुत की। वंदे-मातरम गायन में पंचायत एवं ग्रामीण विकास, मंत्री श्री प्रहलाद सिंह पटेल, मुख्य सचिव, श्री अनुराग जैन, अपर मुख्य सचिव, श्री के.सी. गुप्ता, श्री संजय दुबे, प्रमुख सचिव श्री नीरज मंडलोई सहित सतपुड़ा-विंध्याचल भवन के अधिकारी-कर्मचारी उपस्थित थे।

प्रदेश के नगरीय निकायों में पेंशनरों की महंगाई राहत दर में वृद्धि

भोपाल (नप्र)। मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव की मंशानुरूप और नगरीय विकास एवं आवास विभाग मंत्री श्री कैलाश विजवर्गीय के निर्देश पर प्रदेश के नगरीय निकायों के पेंशनरों की मंहगाई राहत दर में बढ़ोत्तरी की गई है। इस संबंध में नगरीय विकास एवं आवास विभाग के आयुक्त श्री भरत यादव ने आदेश जारी किए है।

प्रदेश में अब नगरीय निकायों के पेंशनरों को मंहगाई राहत की दर में राज्य शासन के पेंशनरों के समान लाभ मिलेगा। छठवें वेतनमान में पेंशन पर 239 प्रतिशत तथा सातवें वेतनमान में पेंशन पर 50 प्रतिशत की दर से महंगाई राहत स्वीकृत की गई है। यह आदेश मूल पेंशन व परिवार पेंशन दोनों पर लागू होगा। पेंशनरों को महंगाई राहत दर में वृद्धि एक अक्टूबर 2024 से स्वीकृत की गई है। इस संबंध में विस्तृत जानकारी स्थानीय निकायों के कार्यालयों से प्राप्त की जा सकती है।

मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने छत्तीसगढ़ के राज्योत्सव के लिए दी बधाई और शुभकामनाएं

भोपाल(नप्र)। मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव ने छत्तीसगढ़ के मुख्यमंत्री श्री विष्णुदेव साय तथा प्रदेशवासियों को राज्योत्सव की बधाई और शुभकामनाएं दीं हैं। मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने मीडिया को दिए संदेश में कहा कि छत्तीसगढ़ के मुख्यमंत्री श्री विष्णु देव साय के नेतृत्व में छत्तीसगढ़, विकास के नए सोपानों की ओर बढ़ रहा है। मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने कहा कि छत्तीसगढ़ द्वारा अपने स्थापना दिवस पर राज्य उत्सव का आयोजन हर्ष और प्रसन्नता का विषय है। मध्यप्रदेश से अलग होकर ही छत्तीसगढ़ राज्य का गठन हुआ, जिसमें तत्कालीन प्रधानमंत्री श्री अटल बिहारी वाजपेई की महत्वपूर्ण भूमिका रही। मध्यप्रदेश और छत्तीसगढ़ का बहुत पुराना संबंध है, दोनों राज्य, विकास और जन कल्याण की दिशा में समन्वित रूप से प्रगति पथ पर अग्रसर होने के लिए संकल्पबद्ध हैं। मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने कहा कि छत्तीसगढ़ से बड़े समूह में आने वाले हाथियों की सूचना के आदान-प्रदान और उनके प्रबंधन के संबंध में कार्य योजना बनाने पर भी छत्तीसगढ़ के मुख्यमंत्री के साथ विचार-विमर्श किया जाएगा।

मुख्य सचिव की अध्यक्षता में पर्यवेक्षण समिति गठित

भोपाल (नप्र)। राज्य शासन ने सिंहस्थ वर्ष-2028 के अंतर्गत मंत्रि-परिषद समिति के निर्देशों का पालन, मंत्रि-परिषद समिति के समक्ष रखे जाने समस्त नीतिगत प्रकरणों का परीक्षण कार्य तथा विभिन्न विभागों की सिंहस्थ मद कार्य योजना की समीक्षा करने के लिए पर्यवेक्षण समिति का गठन मुख्य सचिव की अध्यक्षता में किया है।

समिति में अपर मुख्य सचिव, गृह, उर्जा, लोक निर्माण, जल संसाधन, परिवहन, प्रमुख सचिव, लोक स्वास्थ्य यांत्रिकी, लोक स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण, राजस्व, वित्त, धार्मिक न्यास एवं धर्मस्व, संस्कृति एवं पर्यटन, सदस्य होंगे। प्रमुख सचिव, नगरीय विकास एवं आवास समिति के सदस्य सचिव होंगे।

धीरेंद्र शास्त्री बोले-

महाकुंभ में गैर-हिंदुओं की एंट्री बैन हो

- कहा-ये लोग एंटी सनातनी; हिंदुओं को ही दुकान अलॉटमेंट पर संतों की मांग का समर्थन

खजुराहो (नप्र)। पंडित धीरेंद्र शास्त्री ने कहा कि महाकुंभ में गैर-हिंदुओं के प्रवेश बैन किया जाना चाहिए। उन्होंने कहा कि जो सनातन परंपरा को नहीं जानते, जिन्हें राम से कोई काम नहीं, तो राम के काम से क्या काम। ये लोग एंटी सनातनी है। धीरेंद्र शास्त्री छत्तीसगढ़ के कवर्धा में बालाजी हनुमान मंदिर के भूमिपूजन में पहुंचे थे। जहां महाकुंभ में दुकान अलॉटमेंट को लेकर साधु-संतों की मांग को लेकर पत्रकारों ने उनसे सवाल पूछ थे। इसके जवाब में उन्होंने ये बात कही। बता दें कि यूपी के प्रयागराज में 13 जनवरी 2025 से महाकुंभ शुरू होगा। इसमें 40 करोड़ से ज्यादा लोगों के आने का अनुमान है। यहां पूरे देश से लोग दुकानें लगाने आतें हैं।

कटनी में समोसे पर बवाल, जमकर हुई पत्थरबाजी, गाड़ी में लगाई आग

कटनी (नप्र)। मध्यप्रदेश के कटनी जिले में दो पक्षों में हुए विवाद में जमकर पथराव हुआ है। इस दौरान ग्रामीणों ने रेत कंपनी की एक गाड़ी को आग के हवाले कर दिया है। वही घटना की जानकारी लगते ही कटनी एएसपी संतोष डेहरिया मौके पर पहुंचकर मामले को शांत करवाया है। साथ ही भीड़ को वहां से हटाया है। सबसे आश्चर्य करने वाली बात यह है कि यह पूरा विवाद समोसे को लेकर हुआ है। बड़वारा थाना क्षेत्र के ग्राम बसाड़ी में समोसे खाने को लेकर विवाद शुरू हुआ था। जानकारी के मुताबिक चपना-डिडोंरी ग्राम निवासी सुमित्रा पटेल अपने पति के साथ कटनी शहर आ रही थी, तभी उसके बच्चे समोसे खाने की जिद्द करने लगे। महिला भी समाने खुली दुकान से समोसे लेने पहुंच गई लेकिन दुकान में रखे पूरे समोसे रेत कंपनी के कर्मियों ने पहले ही अपने पास रखवा लिए थे।

दुकानदार ने समोसे देने से कर दिया मना: महिला ने जब समोसे देने की विनती की तो दुकानदार ने देने से मना किया। बच्चे को देखकर

उसने 2 समोसे दे दिये और यहीं से विवाद की शुरुआत हो गई। अपने हिस्से का समोसा जाते देख कंपनी के कर्मी गली-गलौज करने लगे।

पेट पर मारी लात: महिला ने बताया कि जब उसने विरोध किया तो एक शख्स ने उसके पेट में लात मारी जबकि वो छह माह की गर्भवती थी। असहनीय दर्द के चलते वो वहीं बैठ गई। पूरी घटना को देखकर बच्चे को किनारे बैठाकर पति ने रेत कंपनी के लोगों से झड़प करने लगा। वहीं, रेत कंपनी के लोग ज्यादा थे तो पति-पत्नी को पीट दिया।

ग्रामीणों ने बोल दिया हमला: रेत कंपनी के लोगों की संख्या ज्यादा थी, इसलिए पीट रहे थे। तभी वहां ग्रामीणों की भीड़ जमा हो गई। पथराव करते हुए पति-पत्नी को बचा लिया। बाद में मारपीट की यह घटना पत्थरबाजी में बदल गई। दोनों तरफ से पत्थरबाजी होने लगी। इसमें रेत कंपनी के कर्मचारियों को भी चोट लगी है। फिर ग्रामीणों ने कंपनी की गाड़ी में आग लगा दी। घटना की जानकारी मिलते ही पुलिस की टीम मौके पर पहुंची और स्थिति को नियंत्रित किया है।

जल्द गिरफ्तार किए जाएंगे आरोपी

कटनी एसपी अभिजीत कुमार रंजन ने बताया कि महिला और रेत कंपनी के विवाद की जानकारी लगी थी। घटना में ग्रामीणों और रेत कंपनी के कर्मियों द्वारा पथराव किया गया था। एक गाड़ी ग्रामीणों ने जलाई थी। जिसकी जानकारी लगते ही एएसपी, बड़वारा थाना प्रभारी सहित बड़ी संख्या में पुलिस बल मौके पर रवाना किया गया था। फिलहाल ग्रामीणों को शांत करवाया गया है। वहीं, पीड़ित महिला को पता लगवाते हुए उसका मुलायजा करवाने के साथ एफआईआर दर्ज की है। आरोपियों की चिह्नित करते हुए जल्द ही गिरफ्तार किया जाएगा।